मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 56 | अंक : 10 | अप्रैल, 2016 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

नूतन वर्षाभिनन्दन

विक्रम सम्वत्-2073

चलो पढ़ाएँ

आगे बढ़ाएँ

राष्ट्रधर्म निभाएँ

मानव जीवन के आधार

पढ़ना, लिखना और संस्कार

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

समीक्षा, संकल्प एवं प्रतिबद्धता

यह माह दो शैक्षिक सत्रों का संक्रान्तिकाल है। एक सत्र का अवसान हो रहा है तो दूसरे का प्रादुर्भाव; एक की विदाई करनी है तो दूसरे की अगुवाई। दर्शन में इस समय का बड़ा मार्मिक विवेचन मिलता है। विदाई और अगुवाई दोनों आँखों में आँसू ला देती है, मगर दोनों आँसुओं में फर्क होता है। यों दिखने में तो आँख में पानी आँसू ही होते हैं, लेकिन उनमें कभी खुशी तो कभी गम के संदेश छिपे होते हैं। विगत सत्र 2015-16 की विदाई पीड़ा देने वाली है, आखिर बारह महीनों का हमारा साहचर्य जो रहा है उसके साथ! वहीं आगत सत्र 2016-17 से हमारी अपेक्षाएं, उस काल में करने के लिए हमारे संकल्प भीतर में एक झंकार सी पैदा कर रहे हैं।

आगत और विगत में पहले विगत की चर्चा करें। सत्र 2015-16 हमारे प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में मील के पत्थर की तरह सदैव याद रखा जाएगा। माध्यमिक शिक्षा के लोक व्यापीकरण एवं सुदृढ़ीकरण की दिशा में जिस द्रुतगति से इस काल खण्ड में काम हुआ, वह बेमिसाल है। लगभग 5000 नए उच्च माध्यमिक विद्यालय खोलना और अधिकांश में प्रधानाचार्य के पद पर अधिकारी लगा देना एक अविश्वसनीय सच्चाई है। प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक आदर्श विद्यालय की स्थापना करने से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा विभाग की विश्वसनीयता एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है।

विद्यालय में अध्ययनरत बालकों की संख्या के अनुपात में शिक्षक एवं अन्य संसाधन दिए जाने चाहिए। दुर्भाग्य से इस व्यावहारिक पहलू को अनदेखा कर, किया गया भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का असमान वितरण हमें विरासत में प्राप्त हुआ। कहीं शिक्षकों के अभाव में बालक आँसू बहा रहे थे तो कहीं नियमानुरूप छात्र संख्या न होते हुए भी बड़ी संख्या में शिक्षक पदस्थापित थे। हमने विभिन्न चरणों पर व्यापक विचार विमर्श के आधार पर स्टाफिंग पैटर्न का फार्मूला इजाद किया और मुझे खुशी है कि अब अधिकांश कार्य इस पैटर्न के अनुसार होकर शाला दर्पण पोर्टल पर उपलब्ध है। इसी प्रकार विद्यालय एकीकरण से प्रारम्भिक शिक्षा के बालक-बालिकाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित हुई है। शिक्षा के गुणात्मक आधार को मजबूत करने की दिशा में SIQE कार्यक्रम एक वरदान सिद्ध हुआ है।

इस वर्ष विद्यालयों का भौतिक स्वरूप चमत्कारी ढंग से बदला है। साफ-सुथरे विद्यालय परिसर, पेड़-पौधों की सुरम्य हरीतिमा, विद्यालय भवन की सफेदी एवं रंगरोगन, नये निर्माण, शौचालय, मूत्रालय, बिजली, स्वच्छ पेयजल, कक्षा कक्षों में ग्रीनबोर्ड, दीवारों पर चार्ट/नक्शे, अनमोल वचन, पुस्तकालयों में पुस्तकें, प्रयोगशालाओं में उपकरण, टेलीफोन, कम्प्यूटर, प्रिन्टर, फोटोस्टेट मशीन आदि विद्यालयों के शिक्षण अधिगम एवं कार्यालयी कार्यों को प्रभावी बनाने के साथ ही संस्था को प्रतिष्ठा दिला रहे हैं। इन कार्यों में शिक्षकों, अभिभावकों, अधिकारियों एवं माननीय जनप्रतिनिधियों व दानदाताओं ने जो अप्रतिम सहयोग किया है, वह किसी वरदान से कम नहीं है। मैं इन सब के प्रति धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

साथियों, हमारे इन सब प्रयासों के मूल में हमारा विद्यार्थी है। वही तो है विद्यालय रूपी मन्दिर का भगवान! इसकी प्रसन्नता व सफलता मौन आशीर्वाद बनकर यश व कल्याण के रूप में हमारे पर बरसती है। इस उद्देश्य में हमारी उपलब्धि परीक्षा परिणाम बताएंगे। सच तो यह है कि अब हमारी दृष्टि बोर्ड परीक्षा परिणामों की ओर टिकी है तथा मुझे विश्वास है कि यह वर्ष परीक्षा परिणामों की दिशा में नूतन कीर्तिमान स्थापित करेगा। आइए, हम सब मिलकर हमसे विदा होने को आतुर सत्र 2015-16 के प्रति विनम्र कृतज्ञता प्रकट करते हुए दहलीज पर खड़े सत्र 2016-17 के स्वागत में पलक पांवड़े बिछा दें। यह समीक्षा एवं नियोजन की वेला है। विगत की समीक्षा कर कमियों के निवारण का संकल्प लेते हुए आगत के लिए स्पष्ट नियोजन अभी से हम कर लें, बस मैं यही चाहता हूँ। नवसंवत्सर 2073 के लिए अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ-

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

> "यह समीक्षा एवं नियोजन की वेला है। विगत की समीक्षा कर कमियों के निवारण का संकल्प लेते हुए आगत के लिए स्पष्ट नियोजन अभी से हम कर लें, बस मैं यही चाहता हूँ। नवसंवत्सर 2073 के लिए अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ-"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
in this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 56 | अंक : 10 | चैत्र-वैशाख २०७२-७३ | अप्रैल, 2016

प्रधान सम्पादक
बी.एल. स्वर्णकार

वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

सम्पादक
गोमाराम जीनगर

सह सम्पादक
मुकेश व्यास

प्रकाशन सहायक
नारायण दास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 001
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- प्रवेशोत्सव : सुनिश्चित क्रियान्विति 5
  आलेख
- वैज्ञानिक भारतीय कालगणना और नया वर्ष 6
  डॉ. जयप्रकाश राजपुरोहित
- श्री राम की गुरुभक्ति और विनम्रता 7
  टेकचन्द्र शर्मा
- मर्यादित जीवन व पितृभक्ति के प्रतीक श्रीराम 8
  ई. ज्येष्ठानन्द जीनगर
- सार्वकालिक संदेश के प्रणेता : डॉ. अम्बेडकर 10
  देवेन्द्र पण्ड्या
- शिक्षक : सामाजिक समरसता के संवाहक 11
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- संत पीपाजी की सामाजिक चेतना 13
  ललित शर्मा
- राजस्थान की गणगौर 16
  स्नेहलता
- भक्त शिरोमणि धन्ना जी 17
  हरप्रीत सिंह कंग
- किताबें और हम 18
  दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'
- खामोश संसार-हटाएँ अंधकार 19
  सुभाष चन्द्र कस्वाँ
- मेरा शिक्षण : मेरे विचार 20
  मधु सोनी
- महिमा 34
  संकलन : **रेणुका गाँधी**
- कैसे हो व्यक्तित्व का विकास? 35
  डॉ. रेणुका व्यास
- बच्चे : देश का भविष्य 37
  भँवर सिंह
- राष्ट्र की आत्मा है-सूचना प्रौद्योगिकी 38
  सरदार सिंह चारण
- प्रसूति एवं पितृत्व अवकाश 40
  सुभाष माचरा
- भारतीय संस्कृति की पहिचान कुंभ 44
  अमित शर्मा

इस माह का गीत

- जीवन में आनन्द हो... 9

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- दौसा : देवनगरी 41
  गणपत लाल शर्मा

रपट

- राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान ने लहराया परचम 42
  सरूपाराम माली
- विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता और देश का कानून 43
  किशन गोपाल जोशी

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 21-33
- शाला प्रांगण 47-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- **पुस्तक समीक्षा** 45-46
- पांणी में चांद घुळै छै : दुर्गादान सिंह गौड़
  समीक्षक-**पृथ्वीराज रत्नू**
- धुले-धुले चेहरे : रवि पुरोहित
  समीक्षक-**डॉ. शिवराज भारतीय**
- समकालीन तमिल प्रतिनिधि कहानियाँ : एस. भाग्यम शर्मा
  समीक्षक-**महावीर प्रसाद गर्ग**

आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर
मो. 9414142641

▼ चिन्तन

भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें। पंथ, भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों। ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हो।

-डॉ. भीमराव अम्बेडकर

- शिविरा पत्रिका का मार्च 2016 का अंक समय पर मिला। माह मार्च का यह अंक कई तरह से विशेष है। इस अंक का मुखावरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक लगा क्योंकि भारतीय संस्कृति में महिला का स्थान सर्वप्रथम है तो शिविरा पत्रिका भी पीछे कैसे रह सकती है।
  माननीय शिक्षा राज्यमंत्री देवनानी जी का बोर्ड परीक्षाओं को लेकर प्रसारित सन्देश वीक्षकों व छात्र-छात्राओं के लिए प्रेरणादायी है। हमारे नये निदेशक महोदय का प्रेरणास्पद सम्बोधन दिशाकल्प के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में मील का पत्थर सिद्ध होगा।
  माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'मन की बात' शिविरा पत्रिका में प्रकाशित कर विद्यार्थियों के लिए एक अनुपम कार्य किया है। श्री सचिन तेंदुलकर, CNR. Rao वैज्ञानिक, पूज्य मुरारी बापू, रजत अग्रवाल, चैस खिलाड़ी विश्वनाथ आनंद आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों के विचार प्रेरणादायी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर गाँधी जी के महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के विचार प्रेरणादायी व सटीक हैं। महिला एक बेटी, बहिन, जननी, शिक्षिका, गुरु, माँ की भूमिका निर्वहन करती है। प्राचीन समय में नारी का समाज में श्रेष्ठ स्थान था।
  शिविरा पत्रिका एक पत्रिका न होकर शिक्षा जगत की एक अनमोल निधि है, धरोहर हैं। निरन्तर परिवर्तन से शिविरा में निखार आ गया है। शिविरा टीम को बधाई व शुभकामनाएँ।

  -रामजीलाल घोड़ेला, बीकानेर

- श्रीमान निदेशक माध्यमिक शिक्षा ने अपनी प्राथमिकता प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाना बताया है जो सराहनीय है। मुख्य पृष्ठ आवरण पर 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते...रमन्ते तत्र देवता' श्लोक के साथ वीरांगना लक्ष्मीबाई अन्तरिक्ष यात्री कल्पना चावला, सावित्री बाई फूले, इन्दिरा नूई व किरण बेदी के तेजस्वी छाया चित्र अंक को पढ़ने के लिए प्रेरित करते है। माननीय प्रधानमंत्री की 'मन की बात' को अविकल रूप में प्रस्तुत कर अंक को विद्यार्थियों, शिक्षकों व अभिभावकों के लिए उपादेय बना दिया है।
  प्रेरक प्रसंग में महर्षि स्वामी दयानन्द के रोचक जीवन प्रसंग निश्चय ही पाठकों को प्रेरित करेंगे। ये प्रसंग बार-बार पढ़ने को प्रेरित करते हैं। होली के गीतों की छटा निराली है। रसीले व सौन्दर्य परक हैं। बिखरे रंग होली के संग के प्रस्तोता श्री मनमोहन अभिलाषी ने होली के विभिन्न रंगों व खुशियों को तरोताजा कर दिया है। अंक को रुचिकर सौन्दर्य प्रदान करने के लिए संपादक मंडल को साधुवाद व बहुत बहुत आभार।

  -टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

- नारी शिक्षा को केन्द्रित करते हुए देश की पहचान एवं गौरवशाली व्यक्तित्व की धनी महिलाओं से सज्जित आवरण पृष्ठ युक्त माह मार्च का शिविरा का अंक बहुत अच्छा लगा। दिशाकल्प से लगाकर 'पुस्तकों का आनन्द' तक के सभी आलेख स्वाध्याय की ओर प्रेरित करते एवं 'शिक्षा जीवन के लिए' की प्रेरणा प्रदान करते लगे। दिशाकल्प के माध्यम से निदेशक महोदय द्वारा अभिव्यक्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की भावना व उनके द्वारा किया गया समस्त शिक्षकों एवं कर्मचारियों को प्राण-पण से जुट जाने का आह्वान निःसन्देह प्रेरणास्पद है। दीपचन्द सुथार का लेख 'पुस्तकों का आनन्द' आज के समय में Reading Habit में दिख रहे ह्रास की ज्वलन्त समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करता है। उनके द्वारा पुस्तकों के महत्व को दर्शाने जिन उपमाओं का प्रयोग किया गया है स्तुत्य है। रमेश शर्मा द्वारा उनके आलेख 'वन-गोचर संसाधन' में वनगोचर क्षेत्र के समाप्ति के कगार पर होने की अभिव्यक्त चिन्ता तथा दिए गए सुझाव अच्छे लगे। 'अंकुरित अनाज' आलेख वर्तमान में बालकों के फास्टफूड का सेवन करने की बढ़ती आदत को रोकने में निश्चय ही सहायक रहेगा।

  -सुधा पण्ड्या, गढ़ी

- शिविरा पत्रिका मार्च 2016 का अंक प्राप्त हुआ। पूर्व से लेकर अब तक की इस यात्रा में, शिविरा पत्रिका में कई स्तर पर निरन्तर प्रगति हुई है। शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से विभिन्न आयाम, नवीन विचार नई तकनीक, कम्प्यूटर जगत की उपलब्धियों का भी समावेश समय-समय पर किया जा रहा है। दिशाकल्प के अन्तर्गत आदरणीय निदेशक महोदय जी के विचार-निश्चित ही शिक्षा जगत के लिये प्रेरणादायी एवं नवीन संकल्पना प्रदान करने वाले हैं। नई ऊर्जा प्राप्त हो सके, सभी कर्मचारी व शिक्षक मिल कर शिक्षा जगत को नई ऊँचाई तक ले जा सकें, ऐसी संकल्पना निदेशक जी ने प्रदान की है। आशा है, अब नवीन सत्र से शिक्षा विभाग में सभी को प्रेरणा एवं नवीन उत्साह मिल सकेगा।

  -हरीश कुमार वर्मा, उदयपुर

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

प्रवेशोत्सव : सुनिश्चित क्रियान्विति

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और गृह परीक्षा के सफल संचालन के बाद हम आशान्वित हैं नये शिक्षा सत्र के प्रति। नये उत्साह, नये संकल्प के साथ नये शिक्षा सत्र का आरम्भ **शाला प्रवेशोत्सव** से हो रहा है। दो चरणों में होने वाले प्रवेशोत्सव कार्यक्रम नये विद्यार्थियों के प्रवेश को सुनिश्चित करने और पुराने विद्यार्थियों के विश्वास को और दृढ़ता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे।

गतवर्ष प्रवेशोत्सव के उत्साहजनक परिणाम आए, इसी शृंखला में इस बार भी सभी मिलकर सत्र 2016-17 के पूर्व निर्धारित लक्ष्य अनुरूप समाज के सभी लोगों का सहयोग लेकर प्रवेशोत्सव कार्यक्रम प्रभावी रूप से संचालित कर अधिक से अधिक विद्यार्थियों का शाला में नामांकन करवाएँगे। जिन विद्यालयों का गत सत्र 2015-16 का नामांकन लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है उसे भी इस वर्ष के लक्ष्य के साथ प्राप्त करना है। नवीन नामांकन के साथ विद्यालय से पूर्व के वर्षों में ड्रॉप आउट को भी पुनः विद्यालय में प्रवेश दिलाना हमारा ध्येय होगा। इस बार प्रवेश का कार्य 1 अप्रैल से प्रारम्भ किया गया है तथा परीक्षा की समाप्ति के आगामी दिवस से ही अगली कक्षा का शिक्षण कार्य प्रारम्भ करना आपकी प्रतिबद्धता होगी।

इस माह में विश्व पृथ्वी दिवस, विश्व पुस्तक दिवस, महावीर जयन्ती और डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती जैसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी दिवस हैं।

आप सभी को नव संवत्सर 2073 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

(बी.एल. स्वर्णकार)

"नये उत्साह, नये संकल्प के साथ नये शिक्षा सत्र का आरम्भ शाला प्रवेशोत्सव से हो रहा है। दो चरणों में होने वाले प्रवेशोत्सव कार्यक्रम नये विद्यार्थियों के प्रवेश को सुनिश्चित करने और पुराने विद्यार्थियों के विश्वास को और दृढ़ता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे।"

नव संवतसर

वैज्ञानिक भारतीय कालगणना और नया वर्ष

❒ डॉ. जयप्रकाश राजपुरोहित

संसार अनादि काल से निरंतर चला आ रहा है। समय का कोई ओर-छोर नहीं मापा जा सकता, जैसे अन्तरिक्ष की कोई सीमा नहीं है। भारतीय विचार परंपरा में समय, अन्तरिक्ष, ब्रह्मांड की उत्पत्ति जैसे अनेक सिद्धान्त आधुनिक विज्ञान के मानदंडों पर खरे उतर रहे हैं। जैसे कि 'बिग बैंग सिद्धान्त।' भारतीय दर्शन जिसे 'एको अहं बहुस्याम' कहता है उसे ही अपने शब्दों में आधुनिक भौतिक वैज्ञानिक 'बिग बैंग' कहते हैं। ऐसे ही समय को अनंत कहा गया है और परमात्मा को भी अनंत कहा गया है, अन्तरिक्ष को भी। आधुनिक विज्ञान भी यही कहता है कि समय और अन्तरिक्ष अनंत है।

भारतीय समय गणना फिर भी आधुनिक कालगणना के सापेक्ष अधिक विस्तृत, व्यवस्थित समय विवेचन प्रस्तुत करती है। एक चतुर्युगी में सत्ययुग (17,28,000 मानव वर्ष), त्रेता युग (12,96,000 मानव वर्ष), द्वापर युग (8,64,000 मानव वर्ष), कलियुग (4,32,000 मानव वर्ष) होते हैं। ऐसे 72 चतुर्युग मिलकर एक मन्वंतर का निर्माण करते हैं। चौदह मन्वंतर का एक कल्प होता है, जिसे ब्रह्मा का एक दिन भी कहा जाता है। ब्रह्मा के एक दिन के बाद एक रात्रि आती है। दिन में चैतन्य तो रात्रि में त्रिलोक में सुषुप्ति हो जाती है। ऐसे लगभग 365 ब्राह्म रात दिवस मिलकर ब्रह्म वर्ष का निर्माण करते हैं। सौ वर्ष होने पर ब्रह्मा की आयु पूर्ण हो जाती है। यही महाप्रलय कहा जाता है। ऐसे सुषुप्ति, प्रलय, महाप्रलय आदि को आधुनिक युग ने हिमयुग, महायुग, समाप्ति आदि नाम दिये हैं।

वर्तमान में ब्रह्माजी का 51वां वर्ष चल रहा है। इसमें वैवस्वत नाम के 7 वें मन्वंतर की 28वीं चतुर्युगी के अंतर्गत कलियुग के 5117 वर्ष बीत रहे हैं और इस वर्ष प्रतिपदा को 5118वां वर्ष प्रारम्भ होगा। इतनी वृहद और सटीक कालगणना आश्चर्य का विषय हो सकती है, परंतु सनातन विचार परंपरा के चलते इसके

औचित्य को झुठलाया नहीं जा सकता। इसका सजीव उदाहरण ये है कि जिन अमावस्या, पूर्णिमा जैसी कालगणनाओं के लिए वैज्ञानिकों को कम्प्युटर, दूरबीन और आधुनिक यंत्रों की सहायता लेनी पड़ती है, उनको भारत के पंचांग रचयिता सामान्य गणित से ही बता देते हैं और अनगिनत सालों से ये कार्य करते आ रहे हैं। यही भारत के गौरव और ज्ञान शक्ति का प्रतीक है।

भारतीय पंचांग में सृष्टि अर्थात् ब्राह्म वर्ष का प्रारम्भ वर्ष प्रतिपदा से माना गया है। वर्ष प्रतिपदा अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा। वैसे तो चैत्र का महीना कृष्ण पक्ष से ही शुरू हो जाता है परंतु नया वर्ष चैत्र के दूसरे पक्ष- शुक्ल पक्ष से शुरू होता है। क्योंकि भारतीय संस्कृति में नये की शुरुआत प्रकाश/उजाला (शुक्ल) से शुभ मानी जाती है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ है, यह दिन युधिष्ठिर के राज्याभिषेक, विक्रम संवत के प्रारम्भ दिवस, शालिवाहन संवत के पहले दिन, स्वामी दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना, चेटीचण्ड आदि अनेक रूपों में मनाया जाता है। दक्षिण में गुड़ीपड़वा के नाम से जाने गए इस उत्सव पर वहाँ घर-घर पर ध्वज फहराए जाते हैं। कई लोग इसे श्री राम द्वारा बाली के अत्याचारों से दक्षिण को मुक्त कराकर वहाँ उल्लास के साथ विजय ध्वज फहराने की घटना से जोड़ते हैं। गुड़ी का शाब्दिक अर्थ है विजय पताका। इसीलिए इसे गुड़ीपड़वा भी कहते हैं। इस अवसर पर आंध्र प्रदेश में घरों में 'पच्चड़ी/प्रसादम' तीर्थ के रूप में बांटा जाता है। कहा जाता है कि इसका निराहार सेवन करने से मानव निरोगी बना रहता है। चर्म रोग भी दूर होता है। इस पेय में मिली वस्तुएं स्वादिष्ट होने के साथ-साथ आरोग्यप्रद होती हैं। महाराष्ट्र में पूरन पोली या मीठी रोटी बनाई जाती है। इसमें जो चीजें मिलाई जाती हैं वे हैं-गुड़, नमक, नीम के फूल, इमली और कच्चा आम। गुड़ मिठास के लिए, नीम के फूल कड़वाहट मिटाने के लिए और इमली व आम जीवन के खट्टे-मीठे स्वाद चखने का प्रतीक होती हैं। यों तो आजकल आम बाजार में मौसम से पहले ही आ जाता है, किन्तु आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में इसी दिन से खाया जाता है। इस पर्व का संबंध सिंधी समाज के चैतीचन्द उत्सव से भी है जिसका शाब्दिक अर्थ है चैत्र का नवीन चंद्रमा। माना जाता है कि इस दिन भगवान झूलेलाल का अवतार हुआ था जिन्होंने सिंध के लोगों को अत्याचारी शासकों और विपदाओं से मुक्ति दिलवाई थी। झूलेलाल को वरुण देवता का अवतार माना जाता है जो इस दिन को जल संरक्षण से संबन्धित करता है। शालिवाहन नाम के कुंभकार ने आमजन के सहयोग से इसी दिन अपने साम्राज्य की स्थापना

की थी जो इस बात का प्रतीक है कि व्यक्ति योग्यता से स्थान और सम्मान पाता है, जन्म से नहीं। ईरान जिसका प्राचीन नाम आर्यान भी है, वहाँ के मूल पारसी समुदाय के नवरोज त्यौहार का संबंध भी इसी दिवस से है। किसी समय में अँग्रेजी ग्रेगेरियन केलेण्डर भी मार्च से प्रारम्भ होता था। मार्च का शाब्दिक अर्थ ही होता है- आगे बढ़ना। इसी माह के आस पास चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भी आती है। वस्तुतः प्राचीन काल में भारत से ही नया वर्ष यूनान, मिश्र, ईरान, आदि स्थानों पर गया होगा। विदेशी आक्रमणकारी शकों से भारत भूमि को मुक्त कराने वाले उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन विक्रम संवत की स्थापना की थी। जिसका 2073वां वर्ष इस वर्ष प्रतिपदा को प्रारम्भ होगा। आज भी सम्राट विक्रम के न्याय, लोकप्रियता और सत्य की कहानियाँ जन-जन में व्याप्त है। विक्रम संवत को आज भी भारतीय जनमानस अपना प्रमुख संवत मानता है।

इस दिन का महत्त्व वासंती नवरात्र के प्रारम्भ होने से भी है। नवरात्र को भारत में शक्ति पूजा का पर्व माना जाता है। शक्ति उपासना को नए वर्ष से जोड़ने का तात्पर्य शक्ति की जीवन में अनिवार्यता से है। इस दिन का प्रभाव सर्वाधिक प्रकृति पर दिखाई देता है। शीत ऋतु की समाप्ति पर सभी पेड़-पौधे अपने पुराने पत्ते गिराकर इस दिन के आस पास नए पत्तों, कोपलों और अंकुरों से सज जाते हैं। पुराने और अनुपयोगी विचारों को छोड़कर नवीन और उत्साहजनक चिंतन का ऐसा साकार प्रतिमान कहाँ संभव है? प्रकृति स्वयं नए रूप में संवर जाती है, जो प्राणी मात्र को नवयौवन का संदेश देती है। धर्म, समाज, नीति, न्याय, प्रेम, सद्भाव, विजय, शौर्य, नवीनता, उत्साह, आरंभ जैसे अनेक गुणों और दृष्टिकोणों को समेटे हुए भारतीय नववर्ष का यह दिवस हमें जीवन का सार बताता प्रतीत होता है।

नौ दिन तक मनाया जाने वाला यह त्यौहार दुर्गापूजा के साथ-साथ, रामनवमी को राम और सीता के विवाह के उत्सव के साथ सम्पन्न होता है। आइये! इस वर्ष का स्वागत करते हुए सभी मिलकर देश की समृद्धि की कामना करें।

खेतेश्वर मंदिर के पीछे, खेतेश्वर बस्ती,
गंगाशहर, बीकानेर-334401
मो. 9414012028

रामनवमी पर्व विशेष

श्री राम की गुरुभक्ति और विनम्रता

□ टेकचन्द्र शर्मा

आज विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता की दुष्टता के पीछे एकमेव कारण विद्यालयों में अपने अध्यापकों-गुरुओं के प्रति श्रद्धाभक्ति का अभाव व उनकी अवमानना ही है। इस सन्दर्भ में राम की अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धा, भक्ति व आज्ञा पालन की प्रवृत्ति एक अनुकरणीय उदाहरण है।

यूँ तो राम जीवन के हर आयाम में मर्यादा पुरुषोत्तम थे, किन्तु इस आलेख को सीमित करते हुए उनकी गुरु के प्रति मर्यादा व श्रद्धा का उल्लेख ही किया जा रहा है ताकि आज का विद्यार्थी उसका अनुकरण कर सके।

राजा दशरथ के कुलगुरु वशिष्ठ जी के समझाने पर गुरु विश्वामित्र के हाथों राम और लक्ष्मण को सौंप दिया। गुरु विश्वामित्र के प्रति राम के सम्मान व श्रद्धा को देखिए- जंगल में रात को सोने पर प्रातः होते ही-

उठेलखनि निसि बिगत सुनि अरुण सिखा धुनि कान।
गुरु ते पहिले ही जगतपति जागे राम सुजान।।

शिष्य अपने गुरु से पहिले जागता है। यह शिष्य की मर्यादा है। गुरु के प्रति सम्मान भक्ति, दैनिक चर्या पूरी कर गुरु के चरण स्पर्श कर सादर प्रणाम करता है। आगे चलकर पत्थर बनी अहिल्या के उद्धार के लिए गुरु राम को कहते हैं-

गौतम नारि श्राप बस उदल देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहति कृपा करहु रघुवीर।।

राम तुरन्त ही गुरु आज्ञा का पालन कर अहिल्या को शाप मुक्त कर देते है इससे आगे चलिए-

सीता स्वयंवर में शिवधनु भंग की शर्त थी। यद्यपि राम शिवधनु भंग करने में पूर्ण समर्थ थे किन्तु अपने गुरु की आज्ञा बिना ऐसा नहीं किया। अन्त में गुरु विश्वामित्र कहते हैं-

उठहु राम भंगहु शिव भव चापा।
भेटहु ताल जनक परितापा।।
सुनि गुरु बचन चरण सिरु नावा।
हरषु विषादु न कछु उर आवा।।

गुरुहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा।
अति लाघव उठाय धनु लीन्हा।।
लेत चढ़ावत खेंचत गाढ़े।
काहुन लखा देख सब ठाढ़े।।
तेहि छन राम मध्य धनुतोरा।
भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

इस प्रकार से राम गुरु की आज्ञा बिना कुछ भी नहीं करते हैं। कुल गुरु वशिष्ठ जी के प्रति राम की श्रद्धा भक्ति उल्लेखनीय है उनकी आज्ञा पूर्णतः सदैव शिरोधार्य करते हैं।

विद्यार्थियों में दूसरा जो गुण होना चाहिए वह है विनम्रता। विनम्रता से ही विद्या व पात्रता आती है। राम विनम्रता की साक्षात् प्रतिमा थे। उनकी विनम्रता का एक उदाहरण ही पर्याप्त है। शिवधनुष भंग कर परशुराम जी को कहते हैं:

नाथ संभु धनु भंजनि हारा।
होइहि कोउ एक दास तुम्हारा।।
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा।
कर कुठार आगे यह सीसा।।
राम मात्र लघु नाम हमारा।
परसु सहित बड़नाम तुम्हारा।।

गुरु के प्रति श्रद्धा सम्मान व विनम्रता की सीख रामनवमी विद्यार्थी को देती है। इस पावन संदेश को छात्र जीवन में अपनावें यहाँ इस आलेख का लक्ष्य है।

पूर्व शिक्षा अधिकारी
शर्मा सदन, झुंझुनूं
मो. 9672973792

रामनवमी विशेष

मर्यादित जीवन व पितृभक्ति के प्रतीक श्रीराम

❐ ई. ज्येष्ठानन्द जीनगर

आज के युग में जो भी सामाजिक विषमताएँ देखने को मिल रही है चाहे वह भौतिक या वैचारिक विषमताएँ हो, इन सबका मूल कारण संस्कारों की कमी ही है। यदि व्यक्ति का बचपन सात्विक, धार्मिक व देशप्रेम के वातावरण में गुजरे तो वह निश्चित ही एक जिम्मेदार, समझदार और देशभक्त नागरिक बनेगा। मनुष्य को अपनी शक्तियों के साथ-साथ अपनी मर्यादाओं का भी ज्ञान होना चाहिए।

ऐसे ही मर्यादित जीवन का परिचय देने वाले भगवान श्रीराम का जन्म चैत्र शुक्ला नवमी को अयोध्या के राजा दशरथ के घर कौशल्या माता के पुत्र के रूप में हुआ था, इनके अलावा राजा दशरथ की दो पत्नियाँ कैकेयी और सुमित्रा थी जिनके पुत्र क्रमशः भरत और लक्ष्मण, शत्रुघ्न थे। चारों राजकुमारों की शिक्षा श्री वशिष्ठ के आश्रम में गुरु विश्वामित्र के सान्निध्य में हुई थी।

विश्वामित्र जी के साथ ही वे अपने भाई लक्ष्मण के साथ महाराज जनक की राजधानी मिथिला में हो रहे धनुषयज्ञ में शामिल होने के लिए गये थे। राजा जनक ने धनुषयज्ञ में भगवान शंकर के दिये धनुष को रखकर ये घोषणा की थी कि जो राजकुमार इस धनुष के प्रत्यंचा चढ़ा देगा, उसके साथ वे अपनी पुत्री सीता का विवाह कर देंगे। देवयोग से आए राजपुत्रों में से कोई भी यह दुष्कर कार्य नहीं कर सका। जनक ने निराश होकर कहा

तजहु आस निज निज गृह जाहु।
लिखा न विधि वैदेहि विवाहू।।

तभी उचित अवसर जानकर विश्वामित्र जी ने राम से कहा कि-

उठहु राम भंजहु धव चापू।
मेटहु तात जनक परितापु।।

राम ने शीघ्र ही मंच पर जाकर बिना किसी विशेष श्रम के धनुष उठा लिया और जैसे ही उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने लगे, वह टूट गया। सारी सभा आश्चर्यचकित देखती रही। राजा

जनक को काफी प्रसन्नता हुई। जनक पुत्री सीता ने श्रीराम के गले में जयमाला डाल दी।

धनुष के टूटने की आवाज सुनकर भगवान परशुराम भी जनक की सभा में आ गए। वे धनुष के टूटने से प्रसन्न नहीं थे, क्योंकि शिव का दिया हुआ वह धनुष राजा जनक के पास एक अमानत में रूप में था, जिसका इस प्रकार तोड़ा जाना उचित नहीं था। दूसरी बात यह थी कि परशुराम भगवान शंकर के शिष्य थे और एक शिष्य को उसके गुरु के धनुष को इस प्रकार तोड़ा जाना कैसे सुखद लगता। फलतः जनक की सभा में उनके आने से खलबली मच गई और तब मर्यादित व विनम्र भाषा का प्रयोग करके श्रीराम ने उनका कोप शान्त किया। इधर महाराज जनक ने दूतों द्वारा राजा दशरथ को संदेश भेजा कि वे बारात लेकर मिथिला पधारें। अयोध्या में आनन्द छा गया। पूरी धूमधाम से बारात मिथिला पहुँची।

चार पुत्र वधुओं सहित सभी अयोध्या आ गए। अयोध्या आनन्द और उत्साह से भर गई। भरत और शत्रुघ्न को अपनी नानी के यहाँ से बुलावा आ गया, दोनों राजकुमार माता कैकेयी के साथ अपने ननिहाल चले गये। चारों तरफ खुशियों का वातावरण था; राजा ने राम का राज्याभिषेक करने का निर्णय ले लिया और राज्याभिषेक के लिए शुभ मुहूर्त्त निकाला गया।

मंथरा नाम की दासी ने कैकेयी के मन में विष रूपी विचार पैदा किया और उसकी बातों से प्रभावित होकर कैकेयी ने राजा से हठ किया और उनसे वचन के रूप में श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास और भरत का राजतिलक माँगा। जब श्री राम को इस विषय के बारे में पता चला तो उन्होंने अपने पिता के वचन को पूरा करने के लिए 14 वर्ष का वनवास जाने का निर्णय किया।

तब लक्ष्मण और सीता ने क्रमशः अपने भ्रातृप्रेम और पतिव्रता धर्म के लिए उनके साथ जाने का निर्णय लिया। यह दुःख दशरथ सहन नहीं कर पाये और दिवंगत हो गये। जब भरत अपने ननिहाल से अयोध्या पहुँचे तो उन्हें सम्पूर्ण विषय का ज्ञान हुआ।

वे राम से मिलने और उन्हें वन से वापस अयोध्या आने का आग्रह करने के लिए वन की ओर चले। वे उन्हें चित्रकूट में मिले और राम से अयोध्या में लौटने का आग्रह किया लेकिन राम ने मना कर दिया तब भरत उनकी खड़ाउ को लेकर अयोध्या आए और प्रतिदिन उनकी पूजा करते हुए सभी भौतिक सुखों को त्याग कर राज्यभार संभाला।

वन में रावण ने धोखे से माता सीता का हरण किया और उन्हें विमान में लंका ले गये। फिर श्रीराम ने राजा सुग्रीव की सहायता से वानरों की सेना बनाई, और लंका पहुँचने हेतु समुद्र पार करने के लिए राम सेतु का निर्माण किया। युद्ध में विभीषण के सहयोग से रावण का वध किया, जिस दिवस को हम विजयादशमी के रूप में मनाते हैं। जब लंका पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् स्वर्णमयी लंका को देखकर लक्ष्मण ने श्रीराम को वहीं रहने की सलाह दी, तब श्रीराम ने उन्हें जवाब दिया कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' मेरे लिए इस स्वर्णमयी लंका से बढ़कर मेरी मातृभूमि की मिट्टी है।

जब भगवान श्रीराम 14 वर्ष का वनवास

पूरा करके कार्तिक मास की अमावस्या को अयोध्या पहुँचे तो सभी अयोध्यावासियों ने घर के आगे दीपक जलाकर उनका स्वागत किया। इस दिन को हम सभी दीपावली के रूप में मनाते हैं।

हमारे देश में रामनवमी को बड़े उत्साह से मनाया जाता है। अयोध्या सहित हजारों स्थानों पर मन्दिरों में पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन होता है। लेकिन क्या इस दिवस को मनाने मात्र से समाज में परिवर्तन होगा, या समाज संगठित और सामर्थ्यवान होगा? नहीं, हमें भगवान श्री राम के जीवन की प्रत्येक छोटी से छोटी घटना से कुछ सीखना होगा; जैसे- वनवास काल में शबरी के हाथों से जूठे बेर खाना हमें छूआछूत व अस्पृश्यता जैसे बड़े पाप या सामाजिक कुरीति को त्यागने व सबके प्रति प्रेम का संदेश देता है। सोने की लंका त्यागकर पुनः अपनी मातृभूमि की ओर जाना लोभ को त्यागने और मातृभूमि के प्रति श्रद्धा भक्ति भाव जागरण की प्रेरणा देता है। पिता के वचन को पूरा करने के लिए 14 वर्ष के लिए वनवास जाना, उनकी पितृभक्ति के भाव को दर्शाता है। कुछ लोग तर्क देते है कि वे भगवान थे इसलिए उन्होंने ऐसे कठिन काम आसानी से कर दिये। लेकिन सच तो यह है कि इन सब कठिन कार्यों को करने के उपरान्त वे भगवान कहलाए। सबसे बड़ी विडम्बना की बात यह है कि आज अगर किसी को राजा दशरथ की तीनों पत्नियों के नाम क्रमशः उनके पुत्रों के साथ लेने का कहा जाए तब कई लोग सही उत्तर नहीं दे पाएँगे और जो बातें हमें घर परिवार से कहानियों द्वारा पता होनी चाहिए थी वे बातें हमें किताबों में पढ़कर पता करनी पड़ रही है। इस प्रकार हम अपने ही भविष्य को अपनी संस्कृति से दूर कर रहे है और इस प्रक्रिया को हम विकास का नाम दे रहे हैं, लेकिन क्या संस्कृति के बिना विकास सार्थक है। कदापि नहीं, विकास सांस्कृतिक व समग्र होना चाहिए न कि मात्र भौतिक। हमारी पहचान हमारे पुरखों की विरासत से होती है न कि उनकी वसीयत से।

आज हम शिक्षा के नाम पर ही अपनी संस्कृति व उसके माध्यम से जीवन में आने वाले संस्कारों तथा मानवीय मूल्यों से वंचित होते जा रहे है। हमने प्रगतिशीलता की परिभाषा भी अपने स्वार्थवश गढ़ ली।

अपनी संस्कृति को समझने और आने वाली पीढ़ियों तक अंतःप्रवाह को पहुँचाने हेतु श्रीराम के जीवन का अध्ययन, मनन बेहद आवश्यक है। एक पुत्र के रूप में भगवान राम आज्ञाकारी पुत्र, एक शिष्य के रूप में गुरु के आदेश को शिरोधार्य मानने वाले आदर्श शिष्य पति के रूप में आदर्श पति, राजा के रूप में आदर्श मर्यादा पालक प्रजावत्सल रूप में राजा और आवेश या क्रोध से दूर उनका जीवन युगों-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा, क्योंकि राम जन-जन के आराध्य और हृदयसम्राट हैं तथा भारतीय संस्कृति व गौरवपूर्ण इतिहास के आधार स्तम्भ हैं। उनके जीवन का व्यापक सविस्तार व सर्वायामी अध्ययन आज की पीढ़ी के लिए अत्यावश्यक है। उनके गुणों को विद्यार्थी जीवन में धारण करने से जीवन की हरेक समस्या का समाधान करने की सूझ-बूझ विकसित हो पाएगी और भारत श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अपनाकर विश्वगुरु बन मानवता की रक्षा कर पाएगा।

गोपेश्वर बस्ती
गंगाशहर, बीकानेर-334001
मो. 9982426280

इस माह का गीत

जीवन में आनन्द हो...

सभी सुखी हों सभी निरोगी,
जीवन में आनन्द हो।
स्नेहामृत अविरल छलकाएँ,
शीतल, मन्द, सुगन्ध हो।।ध्रुव।।

मन में करुणा प्रेम सदा हो,
मधुर योग्य व्यवहार करें
भेदभाव जड़मूल हटाकर,
एक नया विश्वास भरें
धरती का हर छोर सँवारें,
कहीं न कोई द्वन्द्व हो।।1।।

निज कर्तव्य धर्म का पालन,
दृढ़ता से करना है नित्य
फल की चिन्ता में ना उलझें,
करते जाएँ सुन्दर कृत्य
नष्ट करे जो तिमिर जाल को,
ऐसे सज्जन-वृंद हों।।2।।

मेरे सब हैं मैं हूँ सबका,
विराट चिन्तन सतत चले
वृक्ष बीज में, बीज वृक्ष में,
परिपूरक सद्भाव पले
प्राप्त करेंगे दिव्य धरोहर,
जिसका आदि न अन्त हो।।3।।

सहज भाव से निमित्त बनकर,
हमें निरंतर चलना है
पुण्यदायिनी गंगा के हित,
हिमशिखरों सम गलना है
माँ-भारत के श्री चरणों में,
जन्म हमारा धन्य हो।।4।।

साभार-'प्रेरणा पुष्पांजलि' पुस्तक से

पूना में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा चलाए जा रहे तत्कालीन नार्मलस्कूल (शिक्षक प्रशिक्षणालय) के परिश्रमी एवं बुद्धिमान तथा निर्भीक व सृजनशील व्यक्तित्व वाले कबीर पंथी प्रधान शिक्षक के बेटे जिन्होंने सर्वहारा वर्ग के उत्थान हेतु **''शिक्षित बनो, संगठित हो व अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए शक्ति हासिल करो''** का सार्वकालिक व सार्वभौमिक संदेश दिया, वह व्यक्ति कोई और नहीं महाराष्ट्र की अछूत जाति 'महार' के साधारण परिवार में पैदा हुए बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ही थे। यह घटना इस बात की ओर संकेत करती है कि निःसंदेह प्राचीनकाल से एक शिक्षक द्वारा ही नई क्रान्ति का बिगुल बजता रहा है। साथ ही शिक्षा की चिंगारी का प्रस्फुटन एवं पल्लवन करने वाला सदैव शिक्षक ही रहा है। यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि स्वयं बाबा साहेब अम्बेडकर ने एक आदर्श शिक्षकीय भूमिका का निर्वहन कर शिक्षक की गरिमा को बढ़ाया, जब उनकी मुंबई के सरकारी 'सिडेन हम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकॉनमिक्स' में एक प्रोफेसर पद पर नियुक्ति हुई। उन्होंने प्रोफेसर के दायित्व की ओर पूरा ध्यान दिया। वे घर से पूरी तैयारी करके पढ़ाने जाते थे। सौभाग्य से खुले हृदय के होने से विद्यार्थी अम्बेडकर से बहुत प्रभावित हुए तथा उनका सम्मान करने लगे। स्वयं अम्बेडकर को इस बात की खुशी रही कि वे अपने परिश्रम व लगन से एक लोकप्रिय प्रोफेसर साबित हुए। स्थिति यहाँ तक बनी कि दूसरे कॉलेजों के अर्थशास्त्र के विद्यार्थी भी उनकी कक्षाओं में आने लगे थे। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने अशुभ को शुभ में बदल दिया। क्योंकि उन दिनों अछूत जाति के किसी भी व्यक्ति के अध्यापक के पद पर होने वाली बात को अशुभ श्रेणी में गिना जाता था।

निःसंदेह डॉ. अम्बेडकर एक आदर्श शिक्षक के रूप में जो प्रेरणा देते हैं उससे भी कहीं अधिक अनुकरणीय एवं प्रेरणास्पद उनका विद्यार्थी जीवन रहा है। आर्थिक अभाव, सामाजिक तिरस्कार एवं अस्पृश्यता के अपमान के बावजूद वे अविचल रूप से अध्ययन में लगे रहे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने का लक्ष्य उन्होंने अपने प्रारंभिक शिक्षा काल में ही तय कर दिया

जन्म दिवस विशेष

सार्वकालिक संदेश के प्रणेता : डॉ. अम्बेडकर

❑ देवेन्द्र पण्ड्या

था। जब सन् 1907 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कर ली तब समस्त महार समाज ने उनकी इस उपलब्धि पर उनका सार्वजनिक अभिनंदन किया। जिसके फलस्वरूप उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। उनकी अध्ययन के प्रति अत्यधिक रुचि से प्रभावित होकर श्री कृष्णा जी केलूस्कर जो कि एक अच्छे लेखक एवं विद्वान थे ने उनको अधिक पुस्तकें पढ़ने को दी तथा स्वयं द्वारा लिखित पुस्तक 'लाइफ ऑफ गौतमबुद्ध' भी भेंट की। केलुस्कर महोदय की सहायता से ही उन्हें महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु 25 रुपया मासिक छात्रवृत्ति देना स्वीकार किया गया। 21 जुलाई 1913 में उच्च शिक्षा हेतु उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) में प्रवेश लिया। न्यूयार्क के शहरी जीवन ने उन्हें प्रभावित जरूर किया परन्तु वे अपने लक्ष्य के अनुसार अध्ययन साधना में लीन रहे। 15 से 20 घन्टे अध्ययन में ही व्यतीत करते। जितना अधिक पढ़ते थे उतनी ही उनकी ज्ञान की पिपासा बढ़ती चली गई। उनकी अध्ययनशील प्रवृत्ति से प्रभावित होकर विश्वविद्यालय के सभी प्रोफेसर उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानते थे। एक बार वहाँ पर उन्हें प्रोफेसर सेलिग्मन ने उनके मित्र लाला लाजपतराय (भारतीय) से परिचय कराते हुए कहा कि **''भीमराव अम्बेडकर भारतीय विद्यार्थियों में ही नहीं वरन् अमेरिकन विद्यार्थियों में भी श्रेष्ठ हैं।''** एक विद्यार्थी के लिए इससे ज्यादा गौरव की बात क्या हो सकती है। सन् 1916 में अम्बेडकर ने 'नेशनल डिविडेंड ऑफ इंडिया- ए- हिस्टोरिकल एण्ड एनलिटिकल स्टडी' पर एक शोध प्रबन्ध लिखा जिसे कोलंबिया यूनिवर्सिटी ने जून 1916 में पीएच.डी. डिग्री के लिए स्वीकृत किया परन्तु दुर्भाग्य से अर्थाभाव में वे इस थीसिस को टाइप करवाकर प्रस्तुत नहीं कर सके। अतः उन्हें यह डिग्री 1924 में प्रदान की गई जब उनकी इस थीसिस को मेसर्स पी.एस.किंग एण्ड सन्स (लन्दन) ने नए शीर्षक से प्रकाशित किया। उसमें से कुछ प्रतियाँ उन्होंने प्राप्तकर यूनिवर्सिटी को भेजी। यह उनके जीवन की बड़ी उपलब्धि थी। शैक्षणिक जगत में उनकी यह उपलब्धि अद्वितीय मानी गई। वहाँ के प्रोफेसरों ने इस शोध प्रबंध की प्रशंसा करते हुए इसकी तुलना लिंकन के संकल्प एवं मिशन से की। कइयों ने इसकी तुलना नीग्रो जाति के उद्धारक बुकर टी वाशिंगटन से भी की। इस ग्रंथ की भूमिका उनके प्रोफेसर एडविन आर.ए. सेलिगमन ने लिखी है जिन्होंने ग्रन्थ की सराहना करते हुए लिखा है कि ''प्रस्तुत ग्रंथ अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अनुपम कृति है।'' इसी पढ़ने की ललक की वजह से उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से भी एम.एससी., डी.एससी. और ग्रेसइन से बार एट् लॉ की डिग्रियाँ प्राप्तकर अपने अध्ययन का लक्ष्य पूरा किया। उनका मानना था कि **''अशिक्षा-अज्ञान-बेरोजगारी ये तीनों राक्षस हमें सता रहे हैं। अतः हमें उनका अंत करना ही होगा।''** इसलिए उन्होंने संदेश दिया कि **''दलितों के उत्थान हेतु शिक्षा ही मात्र कारगर उपाय है तथा अच्छी शिक्षा ही अच्छे भाग्य के बराबर है जो कि उनको आर्थिक दृष्टि से भी सबल बना सकती है।''** 5 जून 1952 को कोलंबिया विश्वविद्यालय ने एक विशेष दीक्षान्त समारोह 'विधि विज्ञान' के समानार्थ उन्हें एल.एल.डी. की उपाधि देकर विभूषित किया तथा उनके सम्मान में कहे ये शब्द **''डॉ. भीमराव भारत के ही नहीं, विश्व के महान नागरिक हैं, वह एक महान समाज सुधारक होने के साथ-साथ महान मानवतावादी, मानव अधिकारों के सबल पक्षधर भी हैं।''** सदैव अविस्मरणीय रहेंगे।

जहाँ तक धर्म का प्रश्न है डॉ. भीमराव अम्बेडकर किसी भी धर्म के विरोधी नहीं थे। वे स्वयं यह मानते थे कि **''धर्म मनुष्य के लिए आवश्यक है।''** उनकी लड़ाई हिन्दु धर्म से नहीं, लड़ाई तो छुआछूत और नफरत से थी। उनके मतानुसार **''सर्वधर्म समभाव ही श्रेष्ठ है**

तथा धर्म नैतिकता एवं बौद्धिकता पर आधारित हो, इसमें स्वतंत्रता और समानता और भ्रातृत्व का भाव समावेश हो।'' वे नियमबद्ध धर्म के स्थान पर सिद्धांतों पर आधारित धर्म के पक्षधर्मी थे। इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने बौद्धधर्म को स्वीकार किया।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक ऐसे युग पुरुष थे जिनके व्यक्तित्व का अपने समय पर तो अमिट प्रभाव पड़ा ही परन्तु उनके बाद का समय भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। वे लकीर के फकीर नहीं थे और नवनिर्माण की भावना उनके रोम-रोम में समाई थी। व्यक्तिगत हितों के स्थान पर अधिक से अधिक लोगों के जीवन को सुखदायी बनाना उनके जीवन का सर्वोपरी उद्देश्य था। कहावत है ''Man lives in deeds not in years.'' यह बात डॉ. अम्बेडकर के साथ शत-प्रतिशत सही घटती है। उनके सभी प्रयास उपलब्धि परख रहे। उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ तो अन्यतम रही ही हैं परन्तु सामाजिक, अछूतोद्धार, देश की आजादी तथा देश में लोकतंत्र की स्थापना, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता एवं भारतीय संविधान के निर्माण आदि कार्य तथा उन प्रयासों में सफलता सदैव वन्दनीय रहेगी। एक मजे हुए सम्पादक, लेखक, श्रेष्ठ वकील तथा अच्छी संस्थाओं के संस्थापक के रूप में उनकी भूमिका स्तुत्य रही है। सन् 1920 में 'मूकनायक' पत्रिका का प्रकाशन, 1927 में 'बहिष्कृत भारत' नामक मराठी पत्रिका का प्रकाशन, 1927 में मुम्बई विधान परिषद का सदस्य मनोनीत होना, 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना, औरंगाबाद में मिलिन्द कॉलेज का पुनरुद्धार करना, 1936 में स्वतंत्र मजदूर दल, 'पीपुल्स एज्यूकेशन सोसायटी' की स्थापना तथा 1947 में संविधान के प्रारूप को तैयार करने वाली समिति का अध्यक्ष चुना जाना एवं भारत के संविधान निर्माण में आपका योगदान आदि आपके जीवन की उपलब्धियाँ ही कही जा सकती हैं।

डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व के आधार पर अधिष्ठित सामाजिक जीवन ही लोकतंत्र है। 26 जनवरी, 1949 को संविधान सभा ने नये संविधान को स्वीकार कर लिया। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा अपने धन्यवाद भाषण में डॉ. अम्बेडकर के लिए कहे गए शब्द **''डॉ. अम्बेडकर ने कितनी निष्ठा और उत्साह से अपना कार्य पूरा किया उसकी कल्पना औरों की अपेक्षा मुझे अधिक है। डॉ. अम्बेडकर को प्रारूप समिति में शामिल करने और उसका अध्यक्ष नियुक्त करने से बढ़कर कोई और अच्छा दूसरा काम हम न कर सके।''** यह बात अम्बेडकर के संविधान निर्माण के कार्य में उनके योगदान के महत्व की ओर संकेत हैं।

अस्तु डॉ. अम्बेडकर अपने समय में देश की प्रथम पंक्ति के ऐसे सैनानी थे जिन्होंने अपने जीवन एवं कार्यों से भारत के करोड़ों शोषित एवं पीड़ित व्यक्तियों के जीवन में जीवन शक्ति को जगा दिया। वे सच्चे अर्थों में एक महामानव एवं सच्चे देश भक्त थे। उनका दर्शन सामाजिक चिन्तन पर ही आधारित था। अतः डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जयन्ती पर उनके कार्यों का समाज में व्यावहारिक रूप देना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ऐसे महाप्राण भारतरत्न डॉ. अम्बेडकर को उनकी जयन्ती पर हम सबका अंतरमन से नमन।

से.नि. प्रधानाचार्य
सिविल लाइन्स, गढ़ी, बांसवाड़ा
मो. 9413015905

जन्म दिवस विशेष

शिक्षक : सामाजिक समरसता के संवाहक

❐ बजरंग प्रसाद मजेजी

वर्तमान सामाजिक विषमता:- ''आज हम राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से कटकर टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं। हम आपस में लड़ने वाले गुट बन गए हैं, ईमानदारी से कहूँ तो मैं भी एक ऐसे गुट का नेता हूँ, पर तमाम विरोधों के बावजूद मुझे विश्वास है कि कालानुक्रम में अच्छा समय आने पर हमारे देश को एक होने से रोकने में संसार की कोई शक्ति सफल नहीं होगी। हम में इतनी जात-पांत है, तो भी इसमें कोई संदेह नहीं कि हम एक ही समुदाय के हैं। अनुसूचित जाति के लोगों को चाहिए कि वे अपना एकाकीपन छोड़कर अन्य जातियों से हाथ मिलाकर स्वाधीनता को सुदृढ़ करें। अब तक हमारी मनोभूमिका भी संकुचित थी, हमारी जाति का हित ही हमारे लिए सर्वस्व था, किन्तु अब हमें सशक्त भारत के निर्माण के लिए कार्य करना चाहिए।'' (दस स्पोक अम्बेडकर-संपुट 1 पृष्ठ 80-81)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने स्वतंत्रता पश्चात भारत में क्षेत्रवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद, छूआछूत तथा शोषणात्मक प्रवृत्ति को देखते हुए कहा था कि **''यह सामाजिक समरसता के प्रतिकूल है।''** उन्होंने कहा कि ''हिन्दुओं का आचरण हैरानी भरा है। जब तक कोई व्यक्ति हिन्दु समाज का अंग होता है, तब तक उसके साथ छूआछूत का बर्बर, पाप और धर्म सार्थक-निरर्थक सब नियम उस पर लागू होते हैं। यदि वह हिन्दू धर्म छोड़ देता है, तो ऐसे नियम उस पर लागू नहीं होते है। मुसलमान या ईसाई बन जाता है, तो उसके साथ समानता का व्यवहार किया जाता है। वह तब अस्पृश्य नहीं माना जाता है। जबकि हम सब भारतीय परस्पर सगे भाई-बहिन हैं, ऐसी भावना होनी चाहिए। आज ऐसी बन्धुत्व भावना का अभाव है।'' बाबा साहेब ने देशवासियों को समझाते हुए कहा कि प्राचीन वैदिक काल में भारत में सामाजिक व्यवस्था (वर्ण व्यवस्था) कर्म पर आधारित थी। धीरे-धीरे यह कर्म व्यवसाय वर्ण व्यवस्था वंशानुगत होते चले गए। मध्य युग तक यह पारिवारिक व्यवस्था तक सीमित होते-होते जाति एवं वर्ग में पहचाना जाने लगा। वर्णव्यवस्था में व्यवसाय का निर्धारण कर्म एवं क्षमता के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर होता है, जो व्यावसायिक, औद्योगिक प्रगति और कार्यकुशलता के लिए हानिकारक है, वर्ण व्यवस्था ने व्यक्ति की स्वेच्छा, कार्यकुशलता और व्यावसायिक स्वतंत्रता का हनन किया है। वर्ण व्यवस्था में परिवर्तन और सामाजिक न्याय के लिए कोई स्थान नहीं है। ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के स्वाभिमान तथा सामाजिक सौहार्द्र पर

प्रहार से भारतीय अपनी वैभवपूर्ण समरस जीवन पद्धति से उदासीन होते चले गए। बौद्धिक पराभव के अधीन होने से सम्पूर्ण भारत में सामाजिक असहिष्णुता और संकीर्णता की भावना उभरने लगी थी। वर्ण व्यवस्था ने समाज में आर्थिक अन्याय, सामाजिक अन्याय, राजनैतिक अन्याय, धार्मिक अन्याय, सांस्कृतिक अन्याय का वातावरण बना दिया। सामाजिक विषमता, वर्ण-जाति व्यवस्था ने देश में सामाजिक विषमता पैदा कर दी। डा. अम्बेडकर का दृढ़ विश्वास था कि जाति व वर्ण व्यवस्था का उन्मूलन किए बिना सामाजिक व आर्थिक समानता संभव नहीं है। जाति-वर्ण व्यवस्था के दुष्परिणाम से व्यथित होकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है कि-

जारी रहा यदि क्रम यूँ ही हा! हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य, भारत भाग्य के आकाश का।

देश की विषम स्थिति पर मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार मेधातिथि ने कहा है कि- ''सामाजिक नियमों का पुनः परीक्षण आवश्यक है और यदि वर्तमान जीवन के अनुकूल न हो तो इन्हें बदलना समाज के हित में है।'' भारत में विभिन्न समाजों में सामाजिक समरसता नहीं देखाई देती है। वर्षों से चले आ रहे भेदभाव और संकीर्णता को समाप्त कर सभी मानव समुदाय को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है तथा राष्ट्रोत्थान के पावन संकल्प को पूरा किया जा सकता है। सामाजिक समरसता समाज की आवश्यकता है और समाज की दृढ़ता का आधार है।

सामाजिक समरसता के सजग प्रहरी- डा. अम्बेडकर:- सामाजिक समरसता के अग्रदूत डा. अम्बेडकर ने सामाजिक आन्दोलन की मशाल को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपना जीवन भारत के कमजोर तथा वंचित वर्ग के कल्याण में लगा दिया। उनका मानना था कि सभी वर्गों के सम्मिलित रूप से उत्थान करने पर ही हमारा देश उन्नति करेगा वे समाज को रुढ़िवादिता और संकीर्णता से निकालकर मानव मात्र की स्वतंत्रता चाहते थे। उनका कहना था कि-''मन, वचन, कर्म से समरसता को अपनाकर ही समाज का पथ प्रदर्शन किया जा सकता है। समाज स्नेह से बनता है। घृणा से तो कबीले बनते हैं, जो झूठे अहंकार में सतत संघर्ष की भूमिका बनाते हैं।'' समाज के लिए बंधुता, समता, समरसता प्राथमिक आवश्यकता है। बाबा साहब सभी प्रकार की शोषणकारी व्यवस्था के विरोधी थे। वे भारत में व्याप्त बेरोजगारी, अशिक्षा, दलित तथा वंचित वर्गों के आर्थिक शोषण, सामाजिक शोषण के लिए वर्ण, जाति व्यवस्था के कारण उत्पन्न असमानता से दुखी थे। बाबा साहब ने उडूपी की धर्म सभा में धर्माचार्यों के पारित प्रस्ताव 'हिन्दवः सौदरा सर्वे न हिन्दुपतितो भवेत' का पुरजोर समर्थन किया।

डा. अम्बेडकर ने कहा कि- ''भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भातृत्व की भावना का निर्माण करें। पंथ, भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो। ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हो।'' वे चाहते थे कि राष्ट्र के विकास के लिए राजनैतिक चेतना जाग्रत करने वाले देश के महापुरुषों रामानन्द, कबीर, गुरु नानकदेव, नारायण गुरु, तुकाराम, पीपाजी, गोगाजी, पाबूजी, दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी के सामाजिक समरसता के व्यक्त किये सिद्धांतों को स्वीकार करे और छूआछूत, भेदभाव की भयंकर बीमारी से समाज और राष्ट्र विखंडित न हो जाए, सामाजिक ताना-बाना बिखर न जाए, दलितों को न्यायपूर्ण अधिकार मिले, वे देश के विकास में भागीदारी निभायें, उन्हें इसका उचित अवसर मिले। सामाजिक समरसता की स्थापना हो। इस हेतु उन्होंने भारतीय संविधान में विभिन्न प्रावधान किए। संविधान की प्रस्तावना में उल्लेखित सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म, उपासना की स्वतंत्रता, व्यक्ति की गरिमा, प्रत्येक को अवसर की समानता मिले, ऐसे नियमों का प्रार्दुभाव किया। भारत के संविधान का निर्माण सर्वहित, सर्वधर्म समभाव, सौहार्द्र, भाईचारा, सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता, बन्धुत्ववाद को बढ़ावा देने वाला बनाया।

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका :- शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्त्वपूर्ण और सशक्त साधन हैं। डा. राधाकृष्णन ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन मानते हुए कहा है कि-''शिक्षा परिवर्तन का साधन है, जो कार्य साधारणतया समाज में परिवार, धर्म, सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है। वही आज शिक्षा संस्थाओं द्वारा किया जाता है।'' शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे अधिक शक्तिशाली यंत्र है। शिक्षा द्वारा ही समाज में वास्तविक परिवर्तन किया जा सकता है तथा वर्तमान आवश्यकता और परिवेश में ढालने में सहायक है। अनेक अनुसंधानों के द्वारा शिक्षा की भूमिका का प्रयोग सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण के संदर्भ में किया गया है। शिक्षा जैसे-जैसे सामाजिक स्तर से जुड़ती जाती है, वैसे-वैसे यह विस्तृत सामाजिक परिवर्तन में सहायक होती है। सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। **आज के इस संक्रमण काल में शिक्षक ही लोगों के अंदर व्याप्त अंधकार को दूर कर प्रगति पथ की नई राह दिखा सकता है। शिक्षक समाज में व्याप्त भेदभाव, अस्पृश्यता बोध को दूर कर, राष्ट्रीय भाव, आस्था, समरसता पैदा कर समाज का नेतृत्व कर सकता है। शिक्षक की भूमिका के संदर्भ में उसके निम्नांकित कार्य उसे अधिक प्रभावी बना सकते हैं:-**

- समाज में व्याप्त संकीर्णता, जातिगत भेदभाव एवं अन्य बुराइयों को दूर करने तथा मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु बालकों को शिक्षा देना।
- समाज में हो रहे परिवर्तनों, राष्ट्र की अपेक्षाओं की जानकारी बालकों को देना।
- प्रगतिशील विचारवान नागरिकों के निर्माण में महत्ती भूमिका का निर्वाह करना।
- शिक्षक समाज और बालकों में व्याप्त धारणाओं, संकीर्णता, अस्पृश्यता की भावना को समाज एवं राष्ट्र हित में परिवर्तित करने का प्रयास करना।
- शिक्षक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में मनुष्यों के अनुभवों, अभिवृत्तियों, अन्तःक्रियाओं, सामाजिक संरचना में सापेक्ष परिवर्तन की भूमिका में सहयोगी हो सकता है।

से.नि. प्रधानाध्यापक
सांपला, अजमेर (राज.)
मो. 9460894708

जन्म तिथि विशेष

संत पीपाजी की सामाजिक चेतना

❒ ललित शर्मा

वीरता की अभिव्यक्ति का माध्यम केवल युद्ध करना ही नहीं होता, अपितु यह अभिव्यक्ति जनसेवा, सच्ची भक्ति साधना तथा विराट सामाजिक चेतना जाग्रत करने के माध्यम से भी होती है। पश्चिम भारत के मध्ययुगीन भक्तिकाल में महान समाज सुधारक राजर्षि संत पीपाजी ने अपनी उक्त प्रकार सेवा व चेतना भावना से यह सिद्ध कर दिखाया कि समाज और भक्तिसुधार की कर्ममयी भावना ऐसी भी हो सकती है जिसके करने से व्यक्ति सदैव के लिये काल, कर्म जैसे शत्रुओं के लिये अपराजेयी हो जाये।

राजस्थान के झालावाड़ जिला मुख्यालय के निकट आहू और कालीसिन्ध नदियों के संगम पर बना प्राचीन जलदुर्ग गागरोन संत पीपाजी की जन्म और शासन स्थली रहा है। पीपाजी, खींची राजवंश के एक छत्र शासक थे। इसी नदी संगम पर उनकी भक्ति साधना की गुहन गुफा, समाधि और विशाल आश्रम मंदिर है। उनका जन्म 14वीं सदी के अन्तिम दशकों में गागरोन के खींची चौहान राजवंश में हुआ था।[1] वे यहाँ के वीर, धीर व कुशल शासक थे। शासक रहते हुए उन्होंने कई शत्रुओं से लोहा लेकर विजय प्राप्त की थी।[2] परन्तु युद्धोन्माद, हत्या, रक्तपात तथा जल से जमीन तक के रक्तपात को देख उन्होंने तलवार तथा गागरोन की राजगद्दी का त्याग कर दिया था।[3] इसके पश्चात् उन्होंने काशी जाकर स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया[4] और वे संत कबीर, संत रैदास, संत धन्ना, संत सैन के गुरु भाई बने।

संत पीपाजी का जीवन चरित्र देश के महान समाज सुधारकों में एक नायाब नमूना है। उनकी समाज सुधार की सुन्दर विचारधारा और अद्वितीय कर्म भावना के कारण ही वे कई भक्तमालाओं के आदर्श महापुरुष बनकर लोकवाणियों में गाये गये। संत पीपाजी ने अपनी पत्नी सीता सहचरी के साथ राजस्थान में भक्ति एवं समाज सुधार की चेतना का अलख जगाने का विलक्षण कार्य किया।[5] उन्होंने उत्तरी भारत

के सारे सन्तों को राजस्थान के गागरोन में आने का न्यौता दिया। स्वामी रामानंद, संत कबीर, संत रैदास, संत धन्ना सहित अनेक संतों की मण्डलियों और धर्म यात्रा संघों का पहली बार राजस्थान की धरती पर आगमन हुआ और युद्धों, वर्गों तथा धर्म आडम्बरों और भेदभावों में उलझते राजस्थान में भक्ति और समाज सुधार की एक महान क्रान्ति चेतना का सूत्रपात हुआ।[6] पीपाजी और सीता सहचरी ने उसी समय अपना समस्त राज्य, वैभव त्याग कर[7] गागरोन से गुजरात (द्वारिका) तक संतों की धर्म यात्रा का नेतृत्व किया। वहाँ उन्होंने परदुःखकातरता, परपीड़ा तथा परव्याधि की पीड़ा की अनुभूति करने वाली वैष्णव विचारधारा को जन-जन के लिये समान भावों से सिद्ध किया। कालान्तर में गुजरात के सुप्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता ने उनकी इसी महान विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित होकर "वैष्णव जन तो तेने कहिये रे, पीर पराई जाणै रै" पद लिखा जो महात्मा गाँधी के जीवन में भी प्रेरणादायी सिद्ध हुआ।

भक्त शिरोमणि मीराबाई संत पीपाजी की भक्ति भावना से बड़ी प्रभावित थी तभी तो उन्होंने लिखा "पीपा को प्रभू परच्यौ दिन्हौ, दियो रै खजानापूर"[8] वहीं भक्तमाला लेखन की परम्परा का प्रवर्तन करने वाले नाभादास ने पीपाजी के उदात्त जीवन चरित्र पर देश में सर्वप्रथम 'छप्पय' की रचना कर उन्हें बड़ा सम्मान दिया।

मध्यकाल में देश की सामाजिक स्थिति विषमतापूर्ण हो गयी थी। भृत्यों ने स्वामियों को पकड़ लिया। धर्म तथा सच्ची भक्ति रसातल की ओर जाने लगी। पण्डित मठाधीश हो गये। खलों ने सज्जनों को पराभूत कर दिया। जाति, वर्ण में भेद हो गये। अधम उत्तम का कोई पारखी नहीं रहा। ऐसे समय में विशेषकर अपने गुरु स्वामी रामानन्द की आज्ञा से शिष्य पीपाजी ने पश्चिम भारत को संभाला और कितनी भक्ति साधना, आत्मविश्वास, साहस और निर्भीकता के साथ प्राचीन और रूढ़ चिंतनाओं व अवधारणा को तोड़कर समाज में चेतना जगाने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। उन्होंने पूर्ण समर्पित भाव से सपत्निक गाँव-गाँव, बस्ती-बस्ती घूमकर ब्रह्मज्ञान, नैतिक तथा समन्वय भाव का अलख जगाया, जो उनके विचारों और वाणी से प्रमाणित होता है। निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से हम उनकी सामाजिक अन्तश्चेतना को देखेंगे।

1. जातिपाँति का खण्डन- संत पीपाजी जीवमात्र की समानता के प्रबल पक्षधर थे। उनके मतानुसार ईश्वर के समक्ष सभी जीव समाज में समान है। "ईश्वर के दरबार में छोटे बड़े तथा राजा रंक का कोई भेदभाव नहीं है।" उनकी वाणी में यह बात पता चलती है-

सन्तो एक राम सब माही।
अपने मन उजियारो। आन न दीखे काही।टेक।
एकै धाम रुचिर अर सांसा। छोट मोट तन माही।।
एकै मारग तें सब आया। एकै मारग जाही।।
एकौ मात-पिता सबही के। विप्र छुद्र कोई नांही।
पीपौ जो जन भरम भलाने। तैदुलरात सदा ही।।[9]

उनका मानना है कि - 'विप्र-शूद्र सब एक ही मार्ग से आये है तथा सभी के माता-पिता भी एक है तो भेदभाव किसलिये? परन्तु यह बात उन्होंने केवल वैचारिक धरातल पर ही नहीं की वरन् उन्होंने इसकी क्रियान्विति भी करके

दिखाई। इस आशय का उदाहरण इस प्रकार है– दौसा में एक बार वे रंगजी नामक भक्त के निवास पर थे, उसी दौरान गोबर की तलाश में दो तथाकथित अस्पृश्य स्त्रियाँ वहा आयीं। पीपाजी ने उन्हें बुलाकर तथा अपने पास बैठाकर कहा– ''तुम मानव काया पाकर भी उसका दुरुपयोग कर रही हो। जिस शरीर से दिव्य प्रेमरत्न धन संचय करना चाहिए, उसी से गोबर कूड़ा करकट संसारी विषयों का संग्रह कर रही हो। तुम अपना सब कुछ ईश्वर भक्ति को अर्पण कर दो।'' पीपाजी के इन उपदेशों का उन महिलाओं पर तत्काल ऐसा प्रभाव हुआ कि वे सर्वस्व त्याग कर भक्ति मार्ग में अग्रसर हो गयीं। यह घटना संत पीपाजी के जाति पांति के खण्डन तथा समाज समन्वय के सिद्धांत की महान क्रियान्विति को प्रकट करती है, जो तत्कालीन समाज में एक अद्वितीय समाजोत्थान समन्वय की पहल थी।

2. मूर्ति पूजा के प्रति अविश्वास– उनकी मान्यता थी कि– ''जब ईश्वर समाज के सभी प्राणियों में परिव्याप्त है तब ऐसी स्थिति में किसे त्यागा जाए और किसे पूजा जाये?'' उनके अनुसार– ''जो मूर्ति स्वयं ही नश्वर है उसकी क्या पूजा की जाये?'' उनकी मान्यता है–''पूजा तो उस अलख निरंजन, अविगत और अविनाशी परमतत्व की करनी चाहिये जो समूची मानवता का परम स्रोत है।''[10] अतः सार तो ईश्वर की उपासना मात्र में है, उसके प्रकारों के भ्रमजाल में उलझने में नहीं। अन्ध धार्मिकता के प्रति उनका खण्डन स्पष्ट है। अपनी वाणी के माध्यम से उन्होंने साफ–साफ कहा कि– ''कलियुग में यदि संत कबीर न होते तो लोक की मिथ्या धारणायें तथा कलियुग की अन्धविश्वासी मान्यताएँ मिलकर सच्ची भक्ति को रसातल में पहुँचा देते–

जै कलि नाम कबीर न होते।
तौ लोक बेद अरू कलिजुग मिलि करि।
भगति रसातलि देते।। एवं
भगति प्रताप राखिए कमनि। निज जन आप पढ़ाया।।
नाम कबिरा साच प्रकास्या। तहाँ पीपै कुछ पाया।।[11]

3. सच्चे गुरु की महत्ता– संत पीपाजी ने समाज को सही दिशा निर्देश के साथ भक्ति साधना के निर्देश हेतु सच्चे गुरु की महत्ता एवं अनिवार्यता को अत्यावश्यक माना है। उनका मानना था कि– ''सच्चा गुरु वही है जो सभी समाज, धर्म में समन्वय भाव रखता है।'' उनके मतानुसार–''परमतत्व को सद्गुरु की सहायता से ही यथार्थ रूप में अनुभूत किया जा सकता है।''[12]

सद्गुरु साँचा जौहरी, परसे ज्ञान कसौट।
पीपा सुघोई करे, दे अणभेरी चोट।।
लोह पलट कंचन करियो, सतगुरु रामानन्द।
पीपा पद रज है सदा, मिट्यो जगत को फन्द।।
सुआरथ के सब मितरे, पग पग विपद बढ़ाय।
पीपा गुरु उपदेस बिनु, साँच न जाण्यो जाय।।

4. श्रम साधना और कर्म का महत्व– अपनी दृढ़ सामाजिक चेतना शक्ति से पीपाजी ने चतुर्वर्ण के प्रतिरोध स्वरूप एक नवीन और पाँचवा वर्ण सृजित किया जिसमें श्रम की प्रधानता, कर्म का महत्व और हिंसा तथा युद्ध का त्याग था। उन्होंने इस नवीन पाँचवे वर्ण को 'श्रमिकवर्ण' नाम दिया, जो ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों के मध्य का था। यह एक ऐसा नवीन सामाजिक वर्ण था जिसमें ऊँच नीच तथा जाति बन्धन पूर्णतया मुक्त थे। यह नवीन वर्ण नित्य प्रति श्रम कर्म करते हुए मुख से परात्पर राम का उच्चारण करता तथा समाज में सौहार्द्र से रहता था। पीपाजी का यह मौलिक सामाजिक कार्य उस युग में वास्तव में चतुर्वर्ण परम्परा के विरुद्ध एक प्रतिरोधात्मक आन्दोलन था जिसमें कतिपय वर्ण–व्यवस्था में चतुर्वर्ण और परिवर्तन किया गया था। उनकी वाणी में इस आशय की अनुगूंज है–

हाथाँ से उद्यम करे, मुख सौ ऊचरै राम।
पीपा साधा रो धरम, रोम रमारै राम।।[13]

वे सामाजिक चेतना में समन्वय के महान आख्याता इसलिये हैं कि उन्होंने उस ब्रह्म से साक्षात्कार कराया जिसकी खोज में बन्धन में बंधा मानव आजीवन भटकता है। उन्होंने समाज को सच्चे अर्थों में ब्रह्म के स्वरूप की पहचान पर जोर देते हुए कहा कि उस ब्रह्म की पहचान तो स्वयं मन में अनुभव करने से है–

उण उजियारा दीप की, सब जग फैली ज्योत।
पीपा अन्तर नैण सो, मन उजियारा होत।।[14]

5. रूढ़ियों का दृढ़ विरोध– पीपाजी की सामाजिक चेतना में रूढ़ियों की समाप्ति का कार्य अति महत्वपूर्ण है। उस युग में यह भी कम आश्चर्यजनक घटना नहीं थी कि पीपा जी के साथ ही उनकी जीवन संगिनी भी संन्यास लेकर साध्वी बनी। इतना ही नहीं रानी सीता सोलंकी ने अपने संत पति का साथ देकर समाज के पतिव्रत धर्म का अच्छी प्रकार निर्वाह किया। यह वह युग था जब यवनों द्वारा महिलाओं पर अत्याचार व्यभिचार हो रहे थे और राजपूतों में सर्वाधिक पर्दाप्रथा थी। उसी समय पीपाजी ने अपनी पत्नी सीता सहचरी की पर्दा प्रथा सर्वप्रथम तोड़कर समाज में यह प्रमाणित किया कि– ''जिसमें आत्मबल, समाज सेवा और ईश्वर भक्ति के सच्चे भाव हैं, उन्हें पर्दा प्रथा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।'' वास्तव में सैंकड़ों वर्ष पूर्व का यह एक ऐसा अद्वितीय समाज सुधार था जिससे नारी समाज में जाग्रति और इच्छा शक्ति के भाव उत्पन्न हुए जिस कारण उन्होंने (महिलाओं) आवश्यकता होने पर युद्ध व संघर्ष कर स्वरक्षा ही नहीं की वरन् अनेक राज्यों का शासन भी सफलता पूर्वक संचालित किया। इस बारे में पीपाजी ने अपनी वाणी में भी कहा है–

जहां पडदो तहां पाप, पड़दो बिन पावै नाहीं।
जहां हरि हाजर आप, पीपा तिहो पड़दौ किसौ।।[15]

समाज की रूढ़ि में पीपाजी के इस कार्य की महत्ता पर प्रसिद्ध सामाजिक विचार मैक्स आर्थर मैकालिफ ने सुन्दर टिप्पणी लिखी– Probably the first effort in modern time in india to abolish the traynny of the parda by Pipa[16] बाद में पीपाजी ने आजीवन सीता सहचरी को बिना पर्दे के ही समाज में सार्वजनिक रूप से रखा, जब कि उस युग में राजपूतों में घोर पर्दा प्रथा का प्रचलन था तथा उस प्रथा को तोड़ना कोप का भागी बनना था।

6. समाज चेतना– पीपाजी के जीवन की सबसे बड़ी सामाजिक विशेषता यह है कि वे समाज सुधार व सच्ची भक्ति साधना का आख्यान करने के लिए राजा होते हुए अपना सर्वस्व वैभव त्याग कर संत बने। भारतीय मध्ययुगीन इतिहास के पन्नों में इस प्रकार का पहला और दुर्लभ उदाहरण कहीं देखने को नहीं मिलता। पीपाजी जिस खींची चौहान महान क्षत्रिय जाति के थे, उसमें युद्ध की प्रधानता थी। उनके गुरु स्वामी रामानन्द का विचार यह था कि उन्हें उनके वैष्णव आन्दोलन में उस समय के पीड़ित शोषित वर्ग, अन्त्यजों के कल्याण तथा राजपूतों के कल्याण के लिये एक वीर और आदर्श शिष्य की आवश्यकता थी। क्योंकि विशेष रूप से राजपूत शासन करने और मारकाट करने में सबसे आगे थे। मध्ययुग में सत्ता हाथ से जाने के बाद भी वे लड़ने झगड़ने में सबसे आगे थे और आपस में लड़ते और शोषण करते पाये

जाते थे– विशेषकर यह बड़ी समस्या उत्तरी भारत (राजपूताना–गुजरात–सौराष्ट्र–मालवा) में थी। अतः यह समस्या कैसे सुलझाई जाये, यह विडम्बना भी थी। इसी समय उस समस्या को सुलझाने के लिये उन्हें योग्य शिष्य पीपाजी मिल गये, जिन्होंने गुरु के निर्देश पर उस क्षेत्र के अनेक राजपूत राजाओं, सरदारों को भक्ति मार्ग में दीक्षित करके समाज सुधार, समन्वय कार्यों की ओर मोड़ दिया। इससे समाज में शांति–सहभागिता स्थापित हुई और नवीन सामाजिक चेतना का उद्भव हुआ। स्वयं पीपाजी ने कटे–फटे वस्त्रों की सिलाई का कार्य कर समाज में स्वावलम्बन की भावना को विकसित किया।[17]

7. दुर्व्यसन की भर्त्सना–पीपाजी समाज में व्यक्ति के आचरण व जीवन मूल्यों के विघटन के प्रति बड़े सजग और जागरूक थे। वे नशीली वस्तुओं के सेवन, मांसाहार को वर्जित कर्म मानते थे। उन्होंने इन दुर्व्यसनों से दूर रहने की महत्वपूर्ण बात भी की–

जीव मार जीमण करै, खाता करै बखाण।
पीपा परतख देख ले, थांली मांहि मसाण।।[18]
पीपा पाप न कीजिये, अलगौ रहिये आप।
करणी जासी आपणी, कुण बैटो कुण बाप।।[19]

उन्होंने दृढ़तापूर्वक समाज के उन संतों की भी तीव्र भर्त्सना की जो मठाधीश बनकर व वैभवशाली वस्त्र धारण कर मन में कपट रखते हैं। उन्होंने कबीर की भाँति ऐसे संतों के मुख पर कालिख पोतने की बात का भी खुल कर समर्थन किया–

पीपा जिनके मन कपट, तन पर उजरौ भैस।
तिन को मुख कारौ करो, संत जनां का लेख।।[20]

उन्होंने सामाजिक समन्वय की मिसाल हरे भरे गुलदस्ते से दी। उन्हें अपने देश से अथाह स्नेह था। इस देश की मिट्टी को अपनी आंखों का काजल बनाकर उन्होंने सदियों पहले भारत की बहुरंगी छवि को देखकर बहुत सुन्दर भावाभिव्यक्ति की थी–

फूल बगीचा में घणा, सबरो सुन्दर रूप।
पीपा जद मिल सब छबै, भासै रूप अनूप।।[21]

8. यत्पिण्डे तत ब्रह्माण्डे का सूत्र–संत पीपाजी समाज में फैले बाहरी आडम्बरों, थोथे कर्मकाण्डों, रूढ़ियों के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि–''ईश्वर निराकार, निर्गुण है, वह बाहर भीतर, घट–घट में व्याप्त है। वह अक्षत है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में व्याप्त है।'' उनके अनुसार–''मानव मन (शरीर) में ही सारी सिट्टियाँ और वस्तुएं व्याप्त है।'' उनका यह विराट चिन्तन 'यत्पिण्डे तत ब्रह्माण्डे' के विराट सूत्र को मूर्त करता है और तभी वे अपनी काया में ही समस्त निधियों को पा लेते हैं। फिर किसी बाहरी मंदिर या तीर्थ, पूजा की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। पवित्र गुरुग्रन्थ साहिब में समादृत गागरोन की इस महान विभूति का यह पद इसी भावभूमि पर खड़ा हुआ भारतीय भक्ति साहित्य का कण्ठहार माना जाता है।

अनत न जाऊ राजा राम की दुहाई।
काया गढ़ खोजता मैं नौ निधि पाई।।
काया देवल काया देव, काया पूजा पांति।
काया धूप दीप नइबेद, काया तीरथ जाती।।
काया मांहै अड़सढ़ि तीरथ, काया मांहे कासी।
काया मांहै कंवलापति, बैकुंठवासी।।
जै ब्रह्माण्डे सोई प्यंडे, जै खोजे सो पावै।
पीपा प्रण वै परमततरै, सद्गुरु मिलै लखावै।।[22]

पीपाजी ने समाज के लोकव्यापी समन्वय के लिये अनेक पदों तथा विचारों में अनुपम अभिव्यक्ति दी जो आज भी प्रासंगिक है। अतः यह कहना असंगत न होगा कि संत पीपाजी का रचना संसार लोक मंगल, सामाजिक चेतना तथा भक्ति साधना के सच्चे भावों पर आधारित है। आज जब धर्म, नस्ल, जाति, क्षेत्र जैसे तमाम भेदों को गहराकर मानवता विरोधी ताकतें सक्रिय हैं, ऐसे में महान् संत पीपाजी की विचारधारा और वाणी की राह ही हमें समन्वयता और अखण्ड मानवता के पक्ष में ले जा सकती है।[23]

संदर्भः– ● **1.** पीपा की कथा (हस्तलिखित) क्रम 30671 प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के अनुसार बाड़मेर में समदड़ी ग्राम में पीपाजी मंदिर से प्राप्त सूचना के आधार पर पीपाजी का जन्म वि.सं. 1380 एवं देहांत संवत् 1441 को हुआ था। इसी संवत् को आधार मानकर पीपापंथी समाज पीपाजी की जयन्ती मनाता है परन्तु पीपाजी के जन्म वर्ष पर विद्वानों में मतभेद है। संत साहित्य मर्मज्ञ बृजेन्द्र कुमार सिंघल के अनुसार संत पीपाजी वि.सं. 1400 में गागरोन के शासक थे तथा वि.सं. 1420 में वे स्वामी रामानन्द के शिष्य बने। राघवकृत भक्तमाल के अनुसार पीपाजी वि.सं. 1540–1550 में जीवित थे। सिंघल के मतानुसार पीपाजी का जन्म वि.सं. 1400 से पूर्व रहा है। विद्वान हीरालाल माहेश्वरी अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ राजस्थान लिटरेचर' (पृ. 147–48) में संत पीपाजी का जीवनकाल वि.सं. 1440–1510 बताते है। विद्वान दिनेशचन्द्र शुक्ल और ओंकार नारायण सिंह अपनी पुस्तक 'राजस्थानी भक्ति परम्परा' में पीपाजी का जन्म वि.सं. 1482 लिखते है। शोध साधना–सीतामऊ (म.प्र.) वर्ष 12 अंक 9, (1991 ई.) गागरोन फोर्ट द सैकण्ड साका–ए–मिसिंग लिंक–ए.एच. निजामी (मआसिरे महमूद शाही पृ. 134–139) ● **2.** शाह अमीता–काशी मार्तण्ड (जगद्गुरु स्वामी रामानन्द की दिग्विजय) पृ. 26 ● **3.** पीपा की कथा–पूर्वोक्त ● **4.** शर्मा ललित– राजर्षि संत पीपाजी– पृ. 65 ● **5.** कपूर अवध बिहारी–नवभक्तमाल 5 खण्ड, भाग–1 पृ. 7 ● **6.** दिनेश चन्द शुक्ल–राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोक देवता, पृ. 10 ● **7.** जुगनू श्री कृष्ण– समाज सुधारक पीपाजी, दै. भास्कर 9 अप्रैल 2009 पृ. 6 ● **8.** तंवर सांवर लाल– संत पीपाजी एक अध्ययन पृ. 55 ● **9.** पीपा के पद (ह.लि.) पद सं.8, भा.वि.म. शो.प्र. बीकानेर। ● **10.** चतुर्वेदी राजेश्वर प्रसाद (टीकाकार)–कबीर ग्रंथावली, पृ. 16 लखनऊ–7वां संस्करण ● **11.** पीपा के पद (पूर्वोक्त) सं. 11 ● **12.** सहगल पूरन– संत पीपाजी की कृतियों का संकलन और सम्पादन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) 1972 ई. विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन पृ. 207–210 (साषी खण्ड) ● **13.** उक्त ● **14.** खींची रघुनाथ सिंह–सांवरलाल तंवर–संत पीपाजी एवं साध्वी सीता स्मृति ग्रंथ, पृ. 257–64 ● **15.** मैकालिफ मैक्स आर्थर– द सिक्ख रिलीजन 1905 ई., 5 भाग पृ. 111 ● **16.** (1) शुक्ल दिनेश चन्द– राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोकदेवता, पृ. 118 (2) सहगल पूरन–उक्त पृ. 60 टिप्पणी सं.2 (अ) ● **17.** पीपा की साखी– दादूधाम नरैणा में संग्रहित ग्रन्थ पंचवाणी संग्रह वि.सं. 1660, 1852, 1782 से व सर्वांगी सरह चिंतामणि (गोपालदास कृत) व अनन्तदास–पीपा की साखी 901, 902 पद 19–28 से साभार। ● **18.** उक्त, वही ● **19.** खींची एवं तंवर– पूर्वोक्त 257–264 ● **20.** उक्त वही ● **21.** आदिग्रन्थ (गुरु ग्रंथ साहिब) राग–धनाक्षरी पद–1 ● **22.** शर्मा ललित– राजर्षि संत पीपाजी पृ. 114 **23.** उक्त पृ. नं. 126

जैकी स्टूडियो, 13 मंगलपुरा,
झालावाड़–326001

गणगौर विशेष

राजस्थान की गणगौर

❑ स्नेहलता

होलिका दहन के दूसरे दिन से ही राजस्थान में गणगौर पूजन की गूँज होने लगती हैं सूर्योदय से पूर्व ही बालिकाएँ किशोरावस्था में घर से निकलकर दूब लेने जाती हैं। समूह बनाकर दूब लेकर आती हैं। घर पर वह दूब से शंकर-पार्वती की प्रतीक प्रतिमा ईश्वर-गौरा का पूजन करने लग जाती हैं। राजस्थान में गणगौर शंकर-पार्वती की आराधना का प्रमुख त्यौहार है। सामान्यतः इसे गौरी पूजा कहते है। गणगौर 'गौरी' का ही पर्यायवाची है। गणगौर महिलाओं का प्रमुख त्यौहार है। कोई भी महिला कुमारी हो अथवा विवाहित इसे हमेशा मनाती है। कुमारी कन्याएँ श्रेष्ठ वर की प्राप्ति की अभिलाषा पूर्ण होने के लिए इसका पूजन करती हैं। दूसरी तरफ विवाहित महिलाएँ अपना सुहाग अमर बनाए रखने के लिए इसे बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाती हैं। जोधपुर, बीकानेर, शेखावाटी व जयपुर में गणगौर के त्यौहार के उपलक्ष्य में लगने वाले मेले देखने योग्य होते हैं, इस प्रकार यह राजस्थान का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक त्यौहार है। मुख्य बात तो यह है कि राजस्थान की गणगौर तीज का मेला देखने विदेशी पर्यटक भारत आते हैं। जयपुर में त्रिपोलिया से शाही गणगौर तीज की प्रतिमाएँ बहुत ही धूमधाम से निकाली जाती हैं।

अब हम चाहें इसे गणगौर कहें अथवा गवर, गवरजा। इन सभी शब्दों का एक आशय और अर्थ होता है। इस त्यौहार के दिन कुमारी और विवाहित दोनों ही महिलाएं व्रत रखकर इसका पूजन करती हैं, कथा श्रवण करती हैं, गीत गाती हैं।

गणगौर पूजा चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से आरंभ होकर चैत्र शुक्ल चतुर्थी को समाप्त होती है। पूरे अठारह दिनों तक राजस्थान में चहल-पहल रहती है। होली दहन के दूसरे दिन ही प्रातः उसकी राख लेकर अण्डाकार गोलियाँ बनाई जाती हैं। उन्हें गौरी का प्रतीक मानकर पूजा जाता है। आठवें दिन शीतलाष्टमी को तालाब से चिकनी मिट्टी लाकर उसी से ईसर (ईश्वर) व

गौरी की प्रतिमाएँ निर्मितकर उसी में होली की राख की जो गोलियाँ बनाई गई थीं। उन्हें मिला दिया जाता है। प्रतिदिन उन्हें पूजा जाता है। एक छोटे गमले में मिट्टी डालकर जौ मिला दिए जाते हैं। तीन-चार दिनों उपरांत उनमें अंकुर प्रस्फुटित होने लगते हैं। उनकी अनवरत बढ़त होती रहती है। पूजा की समाप्ति के दिन यही जुहारे महिला-पुरुष व बालक सभी अपने मस्तक पर धारण करते हैं।

गणगौर पूजन के समय गीत भी गाए जाते हैं। पूजा का मुख्य दिन चैत्र शुक्ला तृतीया होता है। सभी घरों में इस दिन अपनी सामर्थ्यानुसार लापसी या सीरा बनाया जाता है। जो गणगौर प्रतिमा पर प्रसाद स्वरूप चढ़ाया जाता है। उसके पश्चात् शुभ मुहूर्त देखकर प्रतिमाओं को जल में विसर्जित कर दिया जाता है।

चैत्र शुक्ला तृतीया व चतुर्थी को गवर की सवारी निकलती है। जो सामान्यतः गवर का मेला कहलाता है। चतुर्थी को विभिन्न ठिकानों, सेठों आदि की मूर्तियों के साथ सवारी निकलती है। ये प्रतिमाएँ (ईसर व गौरा) राजस्थानी वेशभूषा में होती हैं। मेले में उस क्षेत्र के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। अस्तुः अच्छा खासा मेला भर जाता है। यह मेला पूरे वर्ष भर के मेलों में श्रेष्ठ होता है। महिलाएँ रंग-बिरंगे वस्त्रों व आभूषणों से लदी रहती हैं। वे सभी अपने-अपने गवरें सिरों पर लिए होती हैं। महिलाएँ गवरों को बिठाकर गाते समय घूमर भी डालती हैं। मेले के अतिरिक्त कॉलोनियों व मौहल्लों में भी गवरें सजाई जाती हैं। महिलाएँ गाती, नाचती और घूमर डालती हैं।

सवारी देखने क्या हिन्दु, क्या मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई सभी वर्ग और सम्प्रदाय के व्यक्ति बड़े जोश और उमंग के साथ आते हैं। जो साम्प्रदायिक सद्भावना के स्नेह का संगम कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आइये! अब गणगौर पूजन पर सभी समुदायों द्वारा गाए जाने वाले गीतों की भी चर्चा करें तो अच्छा रहेगा। इसमें एक तो यह गीत जो प्रमुख रूप से गाया जाता है उसकी प्रथम पंक्ति दृष्टव्य है-

भँवर जी म्हाने पूजनद्यौ गणगौर,
भँवर जी म्हाने खेलणद्यौ गणगौर।
ओ जी! म्हारा सैंया जोबे बाट,
विलाला म्हाने खेलणद्यौ गणगौर।।
ओ जी! म्हारे बिछिया रतन जड़ाए,
भँवर जी! म्हाने खेलणद्यो गणगौर,
विलाला म्हाने खेलणद्यो गणगौर।।

दूसरा गीत इस प्रकार है –

म्हारे माथा ने मेमंद लाव,
म्हारा हंजा मारू यहीं रेवो जी
यहीं रहौ उगंता सूरज इंहा ही रेवो जी,
थाने कोटे-बूँदी में हौसी गणगौर
म्हारा अंजा मारू यहीं रेवो जी।

इसी तरह जब गणगौर पूजी जाती है तो महिलाएँ हाथ में दूब लेकर पानी से स्पर्श कर छींटे मारती हुई गाती हैं:-

गवर गिणगौर माता, खोल किंवाड़ी।
बाहर ऊबी थारी पूजण वाड़ी
पूजा ए, पुजार्‍याँ बायाँ, असण कासण मांगा जण,
हरजामी बाबो मांगो, राता देओ मांए
कान्ह कंवर सो वीरा मांगा,
राई सी भौजाई सांवलिया बहनोई मांगा,
सोदरा सी बहन मांगा,
हांडा धोवण फूफो मांगा, झाड़ू देवण भूवां।।

इस प्रकार गणगौर का पर्व प्राचीन लोक संस्कृति से हम सभी को परिचित कराकर नारी सम्मान की प्रेरणा देता है।

गुप्ता सदन, एस.बी.के. गर्ल्स हायर
सैकण्डरी स्कूल के पास, मंडी
अटलबंद, भरतपुर-राज. 321001
मो. 9828539575

जन्म दिवस विशेष

भक्त शिरोमणि धन्ना जी

❒ हरप्रीत सिंह कंग

जोत समाइ समानी जा कै
अछली प्रभु पहिचानिआ।
धंनै धन पाइआ धरणीधर
मिलि जन संत समानिआ।।

इस श्लोक में भक्त धन्ना जी अपनी आप बीती सुनाते हुए कहते हैं कि जिस मनुष्य के अन्दर प्रभु की सर्वव्यापक ज्योति टिक गई, उसने मोह माया में न छले जाने वाले प्रभु को पहचान लिया। मैंने (भक्त धन्ना जी) इसी तरह सन्त जनों के साथ मिल कर इस धरती को सहारा देने वाले धरणीधर को प्राप्त कर लिया है। इस बात का जिक्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादना करने वाले पाँचवें सिख गुरु अर्जुनदेव जी ने यह कहते हुए किया, **''धंनै सेविया बाल बुधि।''** अर्थात् जहाँ अन्य भक्तों ने कठिन साधना से प्रभु की कृपा प्राप्त की वहीं भक्त धन्ना जी ने प्रभु प्रेम की प्रबल इच्छा, भोलेपन व भक्तिभाव द्वारा सहजता से ही प्रभु को प्राप्त कर लिया।

भक्त धन्ना जी का जन्म राजस्थान के टोंक जिले के देवली कस्बे के नजदीक स्थित धुआँ कलां गाँव में सम्वत् 1473 में हुआ। एक अंग्रेज इतिहासकार मैक्स आर्थर मैकालिफ ने जन्म का सन् 1415 ई. निर्धारित किया है। इस वर्ष भक्त धन्ना जी के जन्म दिवस की 600वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। भक्त धन्ना जी जाट वर्ग के साधारण किसान परिवार से सम्बन्धित थे। भक्त जी का परिवार खेतीबाड़ी व पशुपालन का कार्य करता था। भक्त धन्ना जी ने भी अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए अपने पारिवारिक व्यवसाय खेतीबाड़ी व पशुपालन का कार्य किया। धुआँ गाँव में रहते हुए भक्त धन्ना जी एक चबूतरे पर बैठ कर प्रभु का नाम सिमरण किया करते थे तथा गाय चराया करते थे। भक्त धन्ना जी ने अपनी आत्मिक भूख को शान्त करने व परमार्थ के रास्ते की तलाश में काफी लम्बा समय बिताया व दूर-दूर की यात्राएँ की।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में राजस्थान के रहने वाले भक्त पीपा जी का एक भजन व भक्त धन्ना जी के तीन भजन दर्ज है। इनमें से एक भजन में भक्त धन्ना जी दयाल दामोदर परमेश्वर को स्मरण करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि जब प्रभु सब को रोजी-रोटी देता है तो उसकी भक्ति क्यों न की जाये? प्रभु के अलावा अन्य कोई प्रतिपालक नहीं है। इस भजन में दृष्टांत देकर बताते हैं कि प्रभु ने माँ के पेट में हमारा दस स्रोतों वाला शरीर बना दिया, वह पेट की अग्नि व जल के अंदर सब जीवों को आहार देता है, वह समर्थ है। मादा कछुआ पानी में रहती है किन्तु उसके बच्चे बाहर रेत में पलते हैं। उन बच्चों के पंख भी नहीं होते जिनके द्वारा वे उड़कर कहीं जाकर कुछ खा पी सकें। पत्थर में कीड़ा होता है। पत्थर से बाहर जाने का उसका कोई रास्ता नहीं होता। इन सबका पालन पोषण वह पूर्ण प्रभु ही करता है। हे जीव! डर या चिन्ता की कोई जरूरत नहीं है अगर तू प्रभु की भक्ति में लगा रहेगा तो वो अपने आप ही तेरी रोजी-रोटी की चिन्ता करता है अर्थात् सभी तरह की प्रतिपालना वह करता है:-

रे चित चेतसि की न दयाल,
दामोदर बिबहि न जानसि कोई।।
जे धावहि ब्रह्मंड खंड कउ करता करै सु होई।।1।। रहाउ।।
जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीया दस दुआरा।।
देइ अहारू अग्नि महि राखै ऐसा खसमु हमारा।।
कुंमी जल माहि न तिसु बाहरि पंख खीरू तिन नाही।।
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माहि।।2।।
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाहीं।।
कहै धंना पूरन ताहू को मतरे जीअ डरांही।।
(पृष्ठ 488)

भक्त धन्ना जी के जीवन की अनेक कहानियाँ लोगों के मन में उकरी हुई है। इनमें से एक घटना का जिक्र करते हुए व भक्त धन्ना जी के भक्ति भाव की प्रशंसा करते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को लिखने का कार्य करने वाले भाई गुरदास जी ने लिखा है :-

ब्राह्मणु पूजै देवते धंना गऊ चरावणि आवै।
धंनै डिठा चलितु एहु पूछै ब्राह्मणु आखि सुणावै।
ठाकुर की सेवा करै जो इछै सोई फलु पावै।
धंना करदा जोदड़ी मै भि देह इक जे तुधु भावै।
पथरू इकु लपेटि करि दे धंनै नो गैल छुड़ावै।
ठाकुर नो न्हावालि कै छाहि रोटी लै भोगु चढ़ावै।
हथि जोड़ि मिनति करै पैरी पै पै बहुतु मनावै।
हउ भी मुहु न जुठालसां तू रूठा मै किहु न सुखावै।
गोसाई परतखि होइ रोटी खाहि छाहि मुहि लावै।
भोला भाउ गोबिंदु मिलावै।।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भक्त धन्ना जी का एक भजन धनासरी राग में 'आरता' शीर्षक से दर्ज है, जिसमें भक्त धन्ना जी प्रभु से जीवन निर्वाह के लिए जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है उनकी माँग करते हुए कहते हैं कि हे गोपाल! मैं तेरी आरती नहीं वरन् आरता करता हूँ कि जो लोग तेरी भक्ति करते हैं तुम उनके सभी कार्य संवारते हो। भक्त धन्ना जी प्रभु से खाने के लिए दाल,घी व अनाज, पहनने के लिए जूता, कपड़े, दूध पीने के लिए दुधारु गाय भैंस, सवारी के लिए अच्छी अरबी घोड़ी, सुन्दर व सुशील गृहणी की याचना इस भजन में करते हैं। भक्त धन्ना जी ने इस भजन में सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति व प्रभु भक्ति का सुमेल कर दिखाया है। इस भजन में भक्त धन्ना जी की सादगी व निश्छलता झलकती है :-

गोपाल तेरा आरता।
जो जन तुमरी भगति करतें
तिन के काज संवारता।।1।।रहाउ।।
दालि सीधा मागउ घीउ।।
हमरा खुसी करै नित जीउ।।
पन्हीआ छादनु नीका।।
अनाजु मागउ सत सी का।।
गऊ भैंस मगउ लावेरी।।
इक ताजनि तुरी चंगेरी।।
घर की गीहनि चंगी।।
जनु धंना लेवै मंगी।।
(पृष्ठ 695)

इस प्रकार भक्त धन्ना जी ने प्रभु की प्राप्ति पारिवारिक व सामाजिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भय, श्रद्धा, सन्तोष, दृढ़ विश्वास व भोलेपन से की। ऐसे शिरोमणि भक्त धन्ना जी के जन्म दिवस की 600वीं वर्षगांठ पर उनको शत-शत नमन। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए अपने समस्त कर्तव्यों व दायित्वों का पालन ईमानदारी से करते हुए प्रभु भक्ति में लीन रहना चाहिए। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

व्याख्याता (वाणिज्य)
शहीद कैप्टन नवपाल सिंह सिद्धू
रा.उ.मा.वि. पदमपुर, श्रीगंगानगर

विश्व पुस्तक दिवस

किताबें और हम

❐ दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

बहुत कम लोगों को पता होगा कि हर वर्ष 23 अप्रैल की तारीख 'विश्व पुस्तक दिवस' को समर्पित होती है। सन् 1995 में 'यूनेस्को' द्वारा बाकायदे इसकी घोषणा की गई थी। यदि हम देशज और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इस उद्घोषणा पर गंभीरता के साथ विचार करें तो इसके प्रयोजन, उद्देश्य और निहितार्थ से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

अपने देश की स्थिति पर गौर करें। नवें दशक के पूर्वार्द्ध तक किताबें ज्ञान और मनोरंजन के क्षेत्र में अपना दखल रखती थी। मगर विगत ढाई दशकों के बीच जो रीडरशिप सर्वे हुए हैं, उससे यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि पुस्तकों के प्रति जनरुचि निरंतर घटती जा रही है। बढ़ती साक्षरता दर के बीच लोगों में घटता अध्ययनशीलता का सम्बोध एक चौंकाने वाला विपर्यय है। किन्तु यही सच्चाई है। नई पीढ़ी तो दीवानगी की हद तक सूचना और मनोरंजन के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की मोहक दुनिया की गिरफ्त में फँसती जा रही है। इस हिसाब से वह दिन दूर नहीं है, जब पुस्तकें अस्तित्व के लिए जूझती नजर आने लगेगी।

पश्चिमी देशों में तो हालात और भी बिगड़ चुके हैं। वहाँ आठवें दशक तक बच्चों के व्यवहार में कई चौंकाने वाले नकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगे थे। फलतः शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के दबाव में बच्चों के बिगड़ते जा रहे व्यवहार को केन्द्र में रखकर कई सर्वेक्षण हुए, जिससे पता चला कि बच्चों की दुनिया में किताबों का दखल काफी कम हो गया था। इसके विपरीत टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, वीडियो गेम वगैरह ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन के क्षेत्र में प्राथमिकता प्राप्त कर चुके थे।

निश्चय ही ज्ञान और मनोरंजन के यह भी महत्वपूर्ण साधन हैं, किन्तु यह माध्यम बहिरंग से परिचित कराने में जितने निपुण है, अंतरंग का आस्वाद देने में उतने ही कमजोर है। वास्तव में यह कमी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सीमा है। इसके विपरीत किताबें है, जिनकी पैनी निगाह से जीवन का कोई भी रंग या आयाम अदृश्य नहीं रह पाता है। मनोविज्ञानवेत्ताओं का स्पष्ट मत है कि पुस्तकें सिर्फ हमारी जानकारी ही नहीं बढ़ाती हैं और न ही मात्र ज्ञान और मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि यह हमारे दिमाग को चुस्त दुरुस्त रखने का श्रेष्ठ माध्यम है।

उपर्युक्त सर्वेक्षणों से यह निष्कर्ष निकला था कि बचपन में जो बच्चे साहित्य नहीं पढ़ते, बाल्यावस्था कम्प्यूटर खेलों और छोटे पर्दे को घूरते हुए निकाल देते हैं, वह बड़े होने पर संवेदना, सौंदर्यबोध और कल्पना के मामले में कमजोर होते हैं। दृश्य माध्यम की एक खामी यह भी है कि यह सोच और व्यवहार के सामूहिक पक्ष को खारिज करके व्यक्तिवादी पक्ष को प्रबल करता है। आज युवावर्ग में सामाजिक संस्थाओं के प्रति घटती आस्था और व्यक्तिगत हित के लिए कुछ भी कर गुजरने की प्रवृत्ति इसी की देन है।

पुस्तकों के अस्तित्व पर मंडराते खतरे और नई पीढ़ी में गहराते मूल्यों के संकट पर चिंतित स्पेन की सरकार ने किताबों के पक्ष में माहौल बनाने की दृष्टि से 'यूनेस्को' को एक प्रस्ताव भेजा था। इसके पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ भी पुस्तकों के घटते जनाधार को संभालने के लिए यूनेस्को को आगे लाने का प्रयास कर चुका था। परिणामतः विचार-विमर्श के पश्चात् यूनेस्को के पदाधिकारियों ने शेक्सपियर की पुण्यतिथि 23 अप्रेल को प्रतिवर्ष 'विश्व पुस्तक दिवस' के रूप में मनाने का फैसला किया।

मूलतः यह घोषणा ज्ञान-विज्ञान के संवाहक के रूप में पुस्तकों की महत्ता को रेखांकित करने के उद्देश्य से की गई है। जो प्रत्येक भू-भाग और समाज के लिए स्वागत योग्य है। अपने देश में शहरी युवावर्ग अब पुस्तकालय के बजाय साइबर कैफे की तरफ रुख करने लगा है। अध्ययनशीलता का विकास बचपन में होता है, बाजारवाद के इस दौर में बचपन का अर्थ 'कैरियर की साधना' में सिमट गया है। इस विषय में अभिभावकों की मानसिकता सनक का रूप ले चुकी है। बच्चों को विद्यालय, अभिभावक और ट्यूटरों के दबाव में अनचाहे उबाऊ पाठ्य पुस्तकों से जूझना पड़ रहा है। यह स्थिति बच्चों में पुस्तकों के प्रति गहरी वितृष्णा पैदा कर देती है और वे स्वाभाविक पाठक नहीं बन पाते। वस्तुतः यही वह नई पीढ़ी है, जो टी.वी., मोबाइल, कम्प्यूटर, इंटरनेट वगैरह की दीवानी हो रही है। देश में गत पुस्तक दिवसों पर कोई उत्सुकता नहीं दिखी थी। पैरेंट्स डे, वेलेंटाइन डे जैसे मौकों पर युवावर्ग में जो उत्साह और प्राविजन स्टोरों पर जैसी खरीददारी दिखती है, उसका दशांश भी पुस्तक दिवस को समर्पित हो जाए तो क्या कहने! युवा वर्ग पुस्तकों से दूर हुआ है, तो इसके दुष्परिणाम भी खूब दृष्टिगोचर होने लगे हैं। किशोरों और युवाओं में हिंसा, आक्रोश, अवमानना, कामुकता, आक्रामकता जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों की हैरतअंगेज स्तर पर वृद्धि हुई है। पुरानी पीढ़ी ने जिन आदर्शों और मूल्यों को जीवन का आधार बनाया था, वे पिछले दो दशकों के बीच अपना अर्थ और संदर्भ खो चुके हैं। आज का युवा संयम और धैर्य के स्तर पर अत्यंत कमजोर सिद्ध हो रहा है। असफलताएँ उन्हें प्रतिशोधात्मक और कुंठाग्रस्त बना रही हैं। ऐसा नहीं कि दृश्य माध्यम सिर्फ नकारात्मक मूल्यों का उत्सर्जन करते हैं, काफी कुछ सकारात्मक भी इसके जरिए परोसा जा रहा है। मगर यह जीवन से नहीं जुड़ पा रहा है। मूलतः यह शब्द प्रकल्प और चित्र प्रकल्प की प्रभावान्विति जन्य विषमता है। चित्र अपनी चमक-दमक और गतिशीलता से आकर्षित करते हैं, जबकि शब्द हमारे मन में उतरते हैं। एक पाठक शब्द दर शब्द आगे बढ़ते हुए वर्ण्य विषय का एक बिम्ब निर्मित करता है। इससे विषय से उसका गहरा तादात्म्य और संवाद होता है। पाठक और पठित सामग्री की यह एकात्मकता संस्कार निर्माण की नींव है। विद्वान विचारकों का अभिमत है कि जीवन में आस्था, विश्वास और मूल्यों की स्थापना की सशक्त स्रोत पुस्तकें ही हैं और ये ही रहेंगी। इनका विकल्प कोई अन्य माध्यम नहीं बन सकता।

अभी 'इंडियन पीडियाट्रिक्स जरनल' में यह चौंकाने वाला तथ्य प्रकाशित हुआ है कि बदलती दिनचर्या के चलते देश के 42 प्रतिशत बच्चे अनिद्रा के शिकार हैं। नींद कुदरत की सबसे सुखद सौगात है और बच्चे इससे वंचित हो रहे हैं, यह खतरनाक संकेत है। सोने से पहले कोई रोचक पुस्तक पढ़ने से मिलने वाली मीठी नींद और शांति सुबह को कितना ताजगी भरा बनाती है, यह बताने की नहीं, अनुभूति की बात है। इसके विपरीत इलेक्ट्रॉनिक माध्यम देते हैं- तनाव, सिरदर्द और चिड़चिड़ापन। न्यूरोलॉजी के विशेषज्ञों की मान्यता है कि बढ़ती उम्र में किताब पढ़ने की आदत हमारी

याददाश्त को कमजोर होने से बचाती है, हमारी दिमागी क्षमता के लिए किताबें प्रोटीन का काम करती हैं। संभवतः इसीलिए कहा गया है कि पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं।

इस दृष्टि से हमारी दिनचर्या में किताबों की वापसी हमारी प्राथमिकता बननी चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सूचना क्रांति के इस दौर और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की चकाचौंध के बीच भी शब्दों की महत्ता न घटी है और न घटेगी। क्योंकि शब्द ही हैं जो हमें जहाँ हम हैं, उससे आगे निकलने की राह दिखाते हैं। इसी आधार पर भारतीय मनीषा शब्द को ब्रह्म कहकर समादृत करती आई है। शब्दों की इसी महत्ता को रेखांकित करके किताबों को पुनः जनाधार देने का उपक्रम है- 'विश्व पुस्तक दिवस' मगर इस उद्घोषणा की कोई प्रतिक्रिया देश के पुस्तक बाजार में देखने को नहीं मिल सकी है।

पुस्तकों के प्रति घटती जनरुचि के संदर्भ में अक्सर उसकी कीमत को दोष दिया जाता है। दो-ढाई हजार की शर्ट और जूता खरीदने वालों को दो-तीन सौ की किताब क्यों महंगी लगती है, यह समझ के परे की बात है। वास्तव में मामला महंगाई का नहीं, प्राथमिकता का है। उपहारों के आइटम में पुस्तक क्यों नहीं शामिल की जा सकती?

निश्चय ही यह महत्वपूर्ण आयोजन तब तक अर्थहीन है, जब तक हम पुस्तकों की तरफ नहीं लौटेंगे। यदि हम संकल्प लें कि रोज कुछ न कुछ पढ़ना है तो इससे बच्चे और किशोर भी प्रेरित होंगे। एक बार यह सिलसिला चल निकलने की देर है, फिर किताबें अपना पुराना जनाधार पुनः प्राप्त कर लेगी और इसी के साथ कई प्रकार के मनो-सामाजिक द्वन्द्व तथा इससे पैदा होने वाली समस्याओं में कमी आनी शुरू हो जाएगी।

पो.आ. जासापारा
गोसाईगंज, सुल्तानपुर (उ.प्र.)228119
मो. 09450143544

खामोश संसार- हटाएँ अंधकार

❐ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

शायद दुनिया के बहुत कम लोग इस बात को जानते हैं कि प्रतिवर्ष 23 अप्रैल 'विश्व पुस्तक दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वजह साफ है लोगों का पुस्तकों के प्रति घटता प्यार व आदर। इस अवसर पर हमें यह जान लेना चाहिए कि आज हम जो कुछ है वह पुस्तकों की सार्वकालिक उपयोगिता की देन से ही हैं। भले ही हम इंटरनेट के जमाने में जी रहे हैं पर जितना भला मनुष्य जाति का पुस्तकों ने किया है उतना भला अन्य किसी माध्यम ने नहीं किया। चीन में छापेखाने का आविष्कार पुस्तकीय संसार में चमत्कारी व क्रांतिकारी परिवर्तन था जिससे पुस्तकें हर एक के हाथ में आने लगी। यद्यपि यह भी तकनीकी आधारित विपणन था लेकिन आधुनिक तकनीक जिसे हम सूचना प्रौद्योगिकी कहते हैं के रिश्ते को मानव से जोड़कर देखें तो एक बड़ा अन्तर साफ नजर आने लगता है। जो सूचनाएँ हमें पुस्तक, पत्रिका व समाचार-पत्रों के जरिए मिलती थीं उनमें संवेदनाओं का विस्तार व भावनाओं का ज्वार होता था। इंटरनेट व कम्प्यूटर व्यक्ति को आकर्षित तो अवश्य करते हैं पर संवेदनाओं व भावनाओं को प्रकाशित करने में बहुत पीछे रह जाते हैं।

पुस्तकों ने व्यक्ति व दुनिया का चेहरा बदला है। इतिहास में ऐसी बहुत सी नजीरें है। विश्व विजयी सिकन्दर को एक व्यक्ति ने अमूल्य रत्नों से जड़ी एक पेटी भेंट की और कहा, ''यह इरान के राजमहल से लाई गई है, आप इसमें अपनी सबसे प्रिय वस्तु रखें जिससे उसकी याद हमेशा बनी रहे।'' वहाँ पर उपस्थित सिकन्दर के एक मित्र ने सुझाव दिया कि ''आप इसमें अपनी स्वर्णमंडित वह तलवार रखें जिसके बल पर आपने विश्व विजय प्राप्त की है।'' सिकन्दर ने भारी मन से कहा, ''मैंने इस तलवार से असंख्य निर्दोष लोगों का खून बहाया है। मैं इसे गौरव वस्तु के रूप में अपने लिए क्यों देखूँ।'' दूसरे मित्र ने प्रस्ताव रखा- ''आप इसमें अपने खजाने की चाबियाँ रखें।'' सिकन्दर ने इस प्रस्ताव को भी नकारते हुए कहा, ''मेरे खजाने में लूटपाट से मिली सम्पदा का बाहुल्य है। ऐसी दौलत पर मैं गर्व किस प्रकार कर सकता हूँ।'' कुछ क्षण सोचने के पश्चात सिकन्दर ने कहा, ''सद्विचारों की प्रेरणा मुझे महाकवि होमर लिखित महाकाव्य 'इलियड' से प्राप्त हुई है। इस पुस्तक ने मुझे मेरे पापों का ज्ञान करवाया है और उसके लिए प्रायश्चित करने के लिए बाध्य किया है। अब मैं इस बहुमूल्य पेटी में इस अमूल्य ग्रंथ को अन्दर रख इसे सुशोभित करूँगा।'' सही मायने में देखा जाए तो सिकंदर के अहंकार व अंधकार को पुस्तक ने ही मिटाकर मानवीय संवेदना व करुणा के नजदीक ला खड़ा कर प्रायश्चित का सुनहरा अवसर दिया था। हमारा धार्मिक ग्रंथ यदि 'गीता' नहीं होता तो महात्मा गाँधी सिर्फ 'गाँधी' के नाम से ही जाने जाते। महात्मा बनने में गीता का बड़ा हाथ था। गीता के 'कर्मयोग' सिद्धांत को माँ का दर्जा देते हुए उसमें असीम शांति तलाशते रहे व आगे बढ़ते चले गए। लकड़हारे का बेटा अब्राहम लिंकन यदि जॉर्ज वॉशिंगटन की जीवनी, पुस्तक के जरिए नहीं पढ़ते तो अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर पहुँचने से महरूम हो जाते।

आज के प्रसिद्ध गीतकार गुलजार भी लफ्जों की महक से ही महके हैं। पिताजी की दुकान पर बचपन में बैठा करते थे। पढ़ने का शौक था। दिन का समय खाली वक्त बिताने के लिए पुस्तक की दुकान से एक आने में सप्ताह भर के लिए एक उपन्यास किराए पर ले आते थे। दिन में बचे उपन्यास के पन्नों को रात्रि में घर जाकर पढ़ लेते। अगली सुबह मालिक को लौटा देते। मालिक उनकी इस हरकत से परेशान हो उठा। अन्त में उसने एक तरकीब निकाली। गुलजार साहब को पद्य की पुस्तक रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रणीत 'गीतांजलि' दे दी। दुकानदार ने सोचा इस पुस्तक से यह बोरियत महसूस करने लगेगा तथा पाँच-सात रोज पढ़ने में लगा देगा। गुलजार 'गीतांजलि' पढ़कर इतने प्रभावित हुए कि मन ही मन कवि बनने की ठान ली। गुलजार के जीवन में 'गीतांजलि' का ही इतना बड़ा असर था कि उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाने में सहायता की है।

आज हमारे सामने नित प्रकाशित होने वाली पुस्तकों का ढेर है। लोगों में लेखक व कवि बनने की एक होड़ सी लगी है। एक अच्छी पुस्तक का चयन करते समय इस सामान्य बात को अवश्य ध्यान में रखा जाए- ""Never read a book that is not an year old."अर्थात् एक ऐसी पुस्तक को एक बार तो मत पढ़ो जो कम से कम एक वर्ष पुरानी न हो। जहाँ तक सम्भव हो तात्कालिक पुस्तकों पर ध्यान न दें। केवल सार्वकालिक पुस्तकों का चयन करें। सार्वकालिक पुस्तकें युगों के थपेड़े सहती हुई सदैव प्रासंगिक बनी रहती हैं।

प्राध्यापक, (अंग्रेजी)
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
नूँआ, झुंझनूं (राज.)- 333041
मो. 9460841575

शिक्षण अनुभव

मेरा शिक्षण : मेरे विचार

❐ मधु सोनी

एम. ए. करने के कुछ अर्से बाद अध्यापन का प्रशिक्षण लिए बिना ही मैंने एक प्राइवेट विद्यालय में शिक्षिका का काम शुरू कर दिया। पढ़ाने से पहले बालिकाओं से एक आत्मीय रिश्ता बनाना मेरी प्राथमिकता थी। मैं उनसे बहुत बातें करती, ताकि उनके मन को समझ सकूँ, उनकी वाणी द्वारा उनके परिवार को जान सकूँ और सबसे मुख्य उनके स्वभाव को जान सकूँ।

नन्हीं-नन्हीं बालिकाएँ-बालक बस्ते लेकर स्कूल आते, और मैं उनको छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाती, गीत गवाती, प्रवृत्ति वाले खेल खिलाती। मैंने देखा कि बच्चों से प्यार से बातें करने का उन पर बड़ा असर पड़ता है। खेल और गीत भी शिक्षण के साधन ही है।

अपने बाल्यकाल में अक्षर एवं अंक ज्ञान कराने वाले और किताबें पढ़ाने वाले अध्यापकों को मैंने देखा था और महसूस किया था कि उनका पढ़ाना, न पढ़ाना कोई अर्थ नहीं रखता था। मेरी शिक्षकीय आत्मा ने मुझे सुझाया था कि पढ़ाने की बजाय संस्कारित करना ज्यादा जरूरी है अतः इसे ही प्रमुखता देनी चाहिए।

बच्चों में अच्छी आदतें विकसित करना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है अभी-अभी घर से निकलकर जो बालक-बालिकाएँ आपके पास स्कूल आई है उन्हें पढ़ाना कैसा? अभी तो संस्कार सिंचन की प्रवृत्तियाँ ही चलनी चाहिए। शिक्षा का अर्थ है बच्चों में विद्यमान उत्तम शक्तियों को उम्र के अनुरूप प्रगट होने देने की अनुकूलता करना। फिर वे शक्तियाँ अपने आप विकसित होती जाएँगी। बच्चों के भीतर सब कुछ पड़ा हुआ है। हमें तो सिर्फ उन्हें विकसित होने में मदद देनी है। इस नाते शिक्षक का काम एक माली जैसा है।

स्वामी विवेकानन्द की यह बात मेरे अचेतन में विद्यमान रही थी कि ''प्रत्येक बालक में दिव्यता मौजूद रहती है। उस दिव्यता का प्रगटीकरण शिक्षण के द्वारा होता है याने वह दिव्यता शिक्षण द्वारा प्रगट होती है।''

बच्चों की माताएँ कभी आकर मुझे उपालम्भ देती कि मैं उनको किताब तो पढ़ाती ही नहीं। इसका सीधा सा अर्थ यह हुआ कि उनके बच्चों को अभी तक किताब पढ़ना क्यों नहीं आया? ऐसे में मुझे उनको समझाना पड़ता कि थोड़ा धीरज रखें। जब वे पढ़ने लगेंगी, तब आप खुद आश्चर्य करेंगी।

कई माताएँ शिकायत करतीं कि उनकी बेटियाँ-बेटे कहा नहीं मानते, किताबें खोलकर पढ़ने नहीं बैठते, इसीलिए मैं उनको डाँटू या पीटूँ। डाँट-डपट और पिटाई की मैं सख्त विरोधी रही हूँ। स्कूलों में पीटने वाली शिक्षिकाओं को और पिटने वाले बच्चों को मैंने देखा है। पीटने के बावजूद बालक-बालिकाएँ शिक्षिकाओं के अनुरूप काम नहीं करतीं और पिटने वाले बच्चों के दिलो में दंड देने वाली शिक्षिकाओं के प्रति नफरत पैदा हो जाती है। बल्कि घरों में जो माताएँ अपने बच्चों को पीटती हैं उनके प्रति भी नफरत प्रगट हुए बिना नहीं रहती। मैंने बच्चों के साथ प्रेम प्यार का ही बर्ताव किया था, अतः मुझे भी उनका उन्मुक्त प्यार मिला था। मेरे जीवन की एक आश्चर्यजनक घटना को यहाँ व्यक्त करना उचित होगा। एक बालिका दो-तीन दिनों से मेरे आसपास मंडराती रहती थी। एक दिन मौका पाकर वह बोली, ''मैडम! आपको मेरी मम्मी होना चाहिए था।'' ''क्या मतलब, क्या कहना चाहती हो? क्या तुम्हारी मम्मी तुम्हें पीटती है?'' और बालिका की आँखों से आँसू की बूँदें टपक पड़ी।

चाहे बालक-बालिकाओं के मानसिक विकास का सवाल हो या पढ़ाई लिखाई का, सिर्फ प्रेम ही एक ऐसी ताकत है जो उन्हें किसी भी लक्ष्य तक पहुँचा सकती है? मेरे इस कथन को अहंकार न समझा जाए तो कहना चाहती हूँ कि विद्यालय में सफलता और लोकप्रियता प्राप्त करने के पीछे सिर्फ एक ही तत्व रहा हैं- बालक-बालिकाओं को भरपूर प्यार दुलार और पट्टी-पोथी से अलग खेल प्रवृत्तियाँ कराते रहना।

बच्चों की माताएँ प्रायः मिलने आती तो मैं उनको यही कहती की पट्टी-पोथी और विषय शिक्षण की बजाय मेरे लिए जीवन शिक्षण का महत्व ज्यादा है।

पता नहीं मेरे अचेतन में यह बात कहाँ से आई कि मैं जीवन शिक्षण को महत्व दूँ। इसका मतलब है मेरे लिए बालक-बालिकाएं स्वस्थ और नीरोग रहें, उनमें अपने प्रति भरपूर विश्वास रहे और उनके दिलों में संतोष भी रहे।

आत्मविश्वास कैसे बढ़े इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व यह है कि इनका कोई अपमान न करें। (हल्के शब्द बोलकर) न उनको निराश किया जाय। बच्चे जब अपने हाथों से छोटे-छोटे काम करते हैं तो उनका आत्मविश्वास विकसित व दृढ़ होता है। कई बार हम बच्चों को देखते हैं कि वे रेत में कंकड़ों से खेलते हुए या समुद्र तट पर शंख-सीपियों से खेलते हुए उन प्रवृत्तियों में इस कदर खो जाते हैं मानो अंदर ही अंदर आनन्द के घूंट पी रहे हों। इससे बढ़कर भला और क्या हो सकता है? इसलिए मैंने अपने लिए यही तय किया कि कक्षा में ऐसा वातावरण निर्मित करना और बच्चों को देखने व सोचने का उन्मुक्त आकाश दूं।

मेरे शिक्षिका जीवन के प्रारंभिक वर्षों में एक साथी अध्यापिका ने मुझे पूछा था ''तुम्हारी दृष्टि से शिक्षण का उद्देश्य क्या होना चाहिए?'' मैंने तपाक से कहा था, ''अच्छा इंसान बनाना। अच्छा नागरिक बनाना, अच्छा गृहकर्ता बनाना, अच्छा सर्जक बनाना, सर्जक बनना अर्थात् लीक से हटकर सोचना, नई-नई बातें ईजाद करना।'' क्रियाशील मस्तिष्क सर्जक ही होते है? जब भी मैं बच्चों को कोई कहानी सुनाती या खेल खिलाती तो उनसे भी यही कहती थी कि तुम भी कोई नया खेल खेलकर आना या अपने से घटी हुई कहानी कहना। ऐसी सर्जकता मैंने प्रारंभिक कक्षाओं के बालक-बालिकाओं में देखी है। वे जो चित्र बनाते थे, उनमें मौलिकता होती थी और रंगों का संयोजन भी उनका अपना होता था। भले ही आपको पसंद न आए पर अपनी दृष्टि से वे सही थे, सर्जक थे, रचनाकार थे।

सोनीवाड़ा, नागौर
मो. 9468577184

आदेश-परिपत्र : अप्रैल, 2016

1. शिक्षा विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताएँ, साहित्य-सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका-2005 में संशोधन/परिवर्द्धन।
2. दिनांक 08 मार्च, 2016 से निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना के क्रियान्वयन के संबंध में।
3. अजमेर जिले की स्थानीय वार्षिक परीक्षा कार्यक्रम में संशोधन हेतु।
4. भारतीय नागरिकता प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत में रहने वाले बच्चों के प्रवेश संबंधी निर्देश।
5. परीक्षा कक्षोन्नति नियम : 2011-12 में संशोधन।
6. समस्त राजकीय विद्यालयों में प्रवेशोत्सव-2016 के आयोजन के सम्बन्ध में।
7. सफाई के प्रति जागरुकता की क्रियान्विति निर्धारित करने के संबंध में।
8. एसआईक्यूई. परियोजना के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर योगात्मक आकलन चतुर्थ योगात्मक आकलन की तिथि संशोधन।
9. वर्ष : 2015-16 के लिए समस्त अधीनस्थ कर्मचारियों/अधिकारियों के हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।
10. कलेण्डर वर्ष-2016 में राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा घोषित अवकाश की सूचना

1. शिक्षा विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताएँ, साहित्य-सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका-2005 में संशोधन/परिवर्द्धन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● इस कार्यालय के द्वारा प्रसारित आदेश क्रमांक : शिविरा-माध्य/ खेलकूद-3/35101/वा.पं./2011-12/46 दिनांक 31.05.11 के अन्तर्गत शिक्षा विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताएँ, साहित्य-सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 में उल्लेखित नियमों में निम्नानुसार संशोधन/परिवर्द्धन किया जाता है :-

क्र सं.	नियमावली		विषय	संशोधन/परिवर्द्धन	
	नियम संख्या	पृष्ठ संख्या		पूर्व निर्धारित दर	संशोधित दर
1	12. 3.5	34	क्षेत्रीय/जिला/राज्य विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता/प्रशिक्षण शिविर (राज्य प्रतियोगिता हेतु) एवं राष्ट्रीय प्रतियोगितार्थ आयोज्य चयन परीक्षण अवधि में खिलाड़ियों को वर्तमान में देय दैनिक भत्ता/खुराक भत्ता प्रति खिलाड़ी प्रति दिन	70/- रु. प्रति खिलाड़ी प्रतिदिन	100/- रु. प्रति खिलाड़ी प्रतिदिन
2	12. 6.2	34	जिला/राज्य स्तर पर विद्यार्थियों की खेल प्रतियोगिताओं में खेल गणवेश की अधिकतम सीमा 750/- रु. प्रति होगी। उसमें से 50 प्रतिशत राशि स्वयं विद्यार्थी खिलाड़ी (प्रति खिलाड़ी) वहन करेगा तथा 50 प्रतिशत राशि संबंधित विद्यालय के छात्र कोष से प्रति खिलाड़ी व्यय की जावेगी, जो 375/- रु. से अधिक नहीं होगी। उक्त गणवेश राशि का निर्धारण खेल विशेष हेतु आवश्यक खेल गणवेश के आधार पर संस्था प्रधान द्वारा किया जावे।	500/- रु. प्रति खिलाड़ी	750/- रु. प्रति खिलाड़ी

उपर्युक्त समस्त संशोधन/परिवर्द्धन एवं दरें सत्र 2016-17 से प्रभावी होगी। शेष नियम/निर्देश यथावत रहेंगे। ● **(बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।**

क्रमांक : शिविरा/माध्य/खेलकूद-4/निजी/संघ मांगपत्र/35427/2015-16/76 दिनांक : 2/3/16 ● उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर।

2. दिनांक 08 मार्च, 2016 से निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना के क्रियान्वयन के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/विविध/निसेनैवियो/2016 दिनांक 05.03.2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा-प्रथम/द्वितीय ● विषय : दिनांक 08 मार्च, 2016 से निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना के क्रियान्वयन के संबंध में। ● प्रसंग : शासन का पत्रांकः प.24(1) शिक्षा-6/2016, दिनांक : 04.03.2016 ● संदर्भ : निदेशालय, चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवाएं, राजस्थान के पत्र क्रमांकः 1653, दिनांकः 04.03.2016 के क्रम में।

उपर्युक्त विषय एवं संदर्भान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि माननीया मुख्यमंत्री महोदया की मंशा के अनुरूप राजस्थान प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली किशोरी बालिकाओं को मासिक धर्म संबंधी स्वच्छता हेतु निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना, जो कि पायलट प्रोजेक्ट के रूप में वर्ष 2015-16 में 07 जिलों में शुरू की गई थी, दिनांक 08 मार्च 2016 से प्रदेश के सभी 33 जिलों में ग्रामीण क्षेत्र में लागू की जानी है। कक्षा 6 से 12 तक की विद्यालय जाने वाली लगभग 16 लाख किशोरी बालिकाओं एवं बीपीएल परिवारों की विद्यालय नहीं जाने वाली 10 से 19 वर्ष की लगभग 4.5 लाख किशोरी बालिकाओं को प्रतिमाह 12 सेनेटरी नैपकिन प्रति बालिका निःशुल्क वितरण किया जाना है।

योजना के विस्तृत उद्देश्य एवं सफल क्रियान्वयन के लिये कार्य योजना संलग्न कर लेख है इस संबंध में आपके तथा अधीनस्थ विद्यालयों के स्तर पर निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करावें-

1. निदेशालय, जन स्वास्थ्य को समय-समय पर आपके जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययनरत कक्षा 6-12 की किशोरी बालिकाओं की संख्या की अद्यतन सूचना उपलब्ध करवायें तथा जिले के प्रत्येक

ब्लॉक की समेकित सूचना ब्लॉक सी.एम.एच.ओ. को उपलब्ध करवाये जाने हेतु समस्त ब्लॉक के नॉडल विद्यालयों के संस्था प्रधानों को निर्देशित करें। सम्पूर्ण जिले की ब्लॉकवार एवं समेकित सूचना इस कार्यालय के सांख्यिकी अनुभाग को हार्ड कॉपी में एवं ई-मेल आई.डी. ddstatesec.@gmail.com पर प्रेषित किया जाना सुनिश्चित करें।

2. अपने ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में विभिन्न गतिविधियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार करें।
3. ग्रामीण क्षेत्र की समस्त किशोरी बालिकाओं को सेनेटरी नेपकिन के उपयोग के सही तरीके एवं फायदों के बारे में प्रशिक्षित करें।
4. छात्राओं को सेनेटरी नैपकिन के उपयोग के बाद नष्ट करने के उपायों के बारे में प्रशिक्षित करें।
5. पर्यावरण पर इसके प्रभाव को देखते हुए विद्यालय परिसर में सेनेटरी नैपकिन के इस्तेमाल के बाद नष्ट करने की व्यवस्था करावें।
6. राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कारपोरेशन (RMSC) द्वारा वितरित करवाए गए सेनेटरी नैपकिन की आपूर्ति प्राप्त करने हेतु समस्त संस्था प्रधानों को पाबन्द करें।
7. सेनेटरी नैपकिन के वितरण हेतु प्रत्येक विद्यालय स्तर पर एक महिला प्रभारी अध्यापिका/महिला अध्यापिका न होने पर किसी पुरुष अध्यापक का दायित्व सुनिश्चित करावें।
8. प्रभारी अध्यापक/अध्यापिका द्वारा निम्नानुसार निर्धारित दो प्रारूपों में सेनेटरी नैपकिन का तिमाही आधार पर स्टॉक रजिस्टर संधारित किया जाना सुनिश्चित करावें।

(1) प्रारूपः-प्राप्ति रजिस्टर

क्र. सं.	प्राप्ति दिनांक	छात्राओं की संख्या	सेनेटरी नैपकिन की पैकेट संख्या	ब्राण्ड
1.	2.	3.	4.	5.

(2) प्रारूपः-वितरण रजिस्टर

क्र. सं.	वितरण की दिनांक	कक्षा	छात्रा का नाम	सेनेटरी नैपकिन की संख्या	छात्रा के हस्ताक्षर
1.	2.	3.	4.	5.	6

9. अधिकृत व्यक्ति द्वारा मांगे जाने पर प्रभारी अध्यापक/अध्यापिका द्वारा स्टॉक रजिस्टर अवलोकन हेतु उपलब्ध कराए जाने हेतु निर्देशित करावें।
10. विद्यालय की छात्राओं को उनके घर की अन्य महिला सदस्यों को भी नैपकिन के उपयोग के लिये प्रेरित करने हेतु प्रशिक्षित करावें।

अतः पत्र के संलग्न निदेशालय, चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवाएँ, राजस्थान द्वारा निर्देशित निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना प्रेषित कर आपको निर्देशित किया जाता है कि क्षेत्राधिकार के समस्त संस्था प्रधानों के स्तर पर उपर्युक्त निर्देशों एवं संलग्न प्रेषित वितरण योजना के मुताबिक समयबद्ध एवं नियमित क्रियान्वयन सुनिश्चित करावें।

● (गिरधारी लाल महर्षि) उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. अजमेर जिले की स्थानीय वार्षिक परीक्षा कार्यक्रम में संशोधन हेतु।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22418/शिविरा पंचांग/2015-16/216 दिनांक : 13.03.16 ● अजमेर में दिनांक 11 से 19 अप्रैल 2016 तक उर्स आयोजन के क्रम में शिविरा पंचांग 2015-16 में स्थानीय वार्षिक परीक्षा आयोजन संबंधी समसंख्यक आदेश दिनांक : 02.02.2016 में अजमेर जिले के विद्यालयों हेतु एतद् द्वारा आंशिक संशोधन किया जाता है :-

क्र. सं.	गतिविधि/क्रियाकलाप कार्यक्रम का विवरण	वर्तमान में निर्धारित अवधि/तिथि	संशोधित अवधि तिथि (केवल अजमेर जिले हेतु)
1	2	3	4
1.	स्थानीय वार्षिक परीक्षा का आयोजन	11 से 25 अप्रैल 2016 (दो पारी में आयोज्य)	20 से 30 अप्रैल 2016 (दो पारी में आयोज्य)
2.	स्थानीय परीक्षा परिणाम की तैयारी एवं आगामी शैक्षिक सत्र में नामांकन हेतु विद्यार्थियों का चिह्नीकरण	26 से 30 अप्रैल 2016	01 से 03 मई-2016
3.	स्थानीय परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं SDMC की साधारण सभा का आयोजन	30 अप्रैल-2016 (दोपहर)	03 मई-2016 (दोपहर)

समस्त संबंधित उपुर्यक्तानुसार पालना सुनिश्चित करें।

● बी.एल. स्वर्णकार, आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. भारतीय नागरिकता प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत में रहने वाले बच्चों के प्रवेश संबंधी निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● राज्य सरकार द्वारा निर्देश प्रदान किए गए हैं कि जो पाक नागरिक पात्र श्रेणियों [1. पाकिस्तान में अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्य (हिन्दु, सिख, ईसाई एवं बुद्धिष्ट)) 2. भारतीय नागरिकों से विवाहित पाक महिलायें 3. भारत में जन्मी पाक महिलायें जो विधवा अथवा तलाकशुदा होकर वापिस भारत आई हो एवं 4. जिन्हें विशेष परिस्थितियों में भारत सरकार द्वारा स्थाईवास प्रदान किया हो] में स्थाईवास (एलटीवी) एवं भारतीय नागरिकता प्राप्ति के उद्देश्य से भारत में रह रहे हैं, के बच्चों को विद्यालयों में विदेशी नागरिकों हेतु निर्धारित शर्तों एवं पात्रताओं के अनुरूप प्रवेश दिया जावें।

इस सम्बन्ध में समस्त सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि पाकिस्तानी नागरिक जो पात्र श्रेणियों में स्थाईवास (एलटीवी) एवं भारतीय नागरिकता प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत में रह रहे हैं, के बच्चों

को शिक्षा हेतु प्रवेश के लिए आवेदन करने पर विदेशी नागरिकों हेतु निर्धारित शर्तों/पात्रताओं के अनुसार ही प्रवेश दिये जावें। इस हेतु पृथक से अनुमति की आवश्यकता नहीं होगी, किन्तु ऐसे सभी प्रवेशों की सूचना शिक्षण संस्थानों द्वारा सम्बन्धित विदेशी पंजीकरण अधिकारी को दी जावेगी।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/22434/15-16/8 दिनांक- 15.3.2016

5. परीक्षा एवं कक्षोन्नति नियम : 2011-12 में संशोधन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● समसंख्यक परिपत्र दिनांक : 25.3.12 द्वारा माध्यमिक शिक्षा विभाग में सत्र 2011-12 से प्रभावी 'परीक्षा एवं कक्षोन्नति नियम : 2011-12' के बिन्दु संख्या-(2) सामान्य नियमः 2(क) परीक्षा प्रवेश योग्यता के उपबिन्दु (2) में यह स्पष्ट किया गया है कि कक्षा-9 व 11 वार्षिक परीक्षा में उसी विद्यार्थी को सम्मिलित किया जाएगा, जिसने कम से कम दो लिखित सामयिक परखें दी हो या एक लिखित परख और अर्द्धवार्षिक परीक्षा दी हो और जिस परीक्षा/परख में वह सम्मिलित नहीं हुआ, उसके कारणों की प्रामाणिकता से संस्था प्रधान को पूर्णतया संतुष्ट कर दिया हो।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा कक्षा-10 के परीक्षा परिणाम की संवीक्षा पश्चात् विलम्ब से जारी किए जाने वाले संशोधित परीक्षा परिणाम में उत्तीर्ण घोषित विद्यार्थियों के प्रकरण में उपर्युक्त प्रावधान में बोर्ड द्वारा संशोधित परीक्षा परिणाम जारी किए जाने की तिथि से पूर्व आयोजित की जा चुकी परख-अर्द्धवार्षिक परीक्षा दिए जाने की शर्त से एतद् द्वारा शिथिलन प्रदान किया जाता है।

स्पष्टीकरण : उपर्युक्त प्रकरणों में विद्यार्थी की उपस्थिति की गणना संदर्भित परिपत्र दिनांक : 25.3.12 के बिन्दु संख्या-2 (ख) के उप बिन्दु (5) में प्रदत्त निर्देशानुसार की जाएगी।

● **(बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22497/कक्षो/नियम/2011-12/176 दिनांक 16/3/16

6. समस्त राजकीय विद्यालयों में प्रवेशोत्सव-2016 के आयोजन के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22492/प्रवेशोत्सव/2016-17/169 दिनांकः 18.03.2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● समस्त राजकीय विद्यालयों में प्रवेशोत्सव-2016 के आयोजन के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि विगत वर्ष राजकीय विद्यालयों में नामांकन वृद्धि के उद्देश्य से आयोजित किये गये प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के उत्साहवर्द्धक परिणामों के क्रम में इस वर्ष दो चरणों में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम निम्नांकित विवरणानुसार आयोजित किये जाने का निर्णय लिया गया है।

1. प्रथम चरणः- दिनांक 26 अप्रैल 2016 से 10 मई 2016 तक।
2. द्वितीय चरणः- दिनांक 21 जून 2016 से 30 जून 2016 तक।
3. इस वर्ष राजकीय विद्यालयों में अधिकाधिक विद्यार्थियों का नामांकन सुनिश्चित किये जाने हेतु प्रवेश प्रक्रिया को कारगर एवं प्रभावी बनाया गया है, जिसके अन्तर्गत इस वर्ष कक्षा 8 एवं 10 की बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट हुए समस्त विद्यार्थियों को परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात राजकीय विद्यालयों में अस्थाई प्रवेश देते हुए दिनांक 01 अप्रेल से आगामी कक्षाओं (क्रमशः कक्षा 9 तथा 11) में विधिवत कक्षा शिक्षण प्रारम्भ किये जाने का निर्णय लिया गया है। उक्तानुसार निजी शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को उनके वर्तमान में अध्ययनरत विद्यालय में परीक्षा समाप्ति/परीक्षा परिणाम घोषणा के तत्काल पश्चात राजकीय विद्यालयों में प्रवेश दिया जाना सुनिश्चित करें।
4. उपर्युक्त निर्देशों के क्रम में राजकीय विद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया माह मार्च के द्वितीय पखवाड़े में प्रारम्भ हो जायेगी। तत्पश्चात् प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के प्रथम चरण में स्थानीय परीक्षाओं की समाप्ति के तत्काल पश्चात दिनांक 26 अप्रैल से आपके विद्यालय परिक्षेत्र में विभिन्न कक्षाओं में नामांकन से शेष रहे विद्यार्थियों के चिह्नीकरण का कार्य प्रारम्भ कर दिया जाये तथा दिनांक 30 अप्रैल 2016 को SDMC की साधारण सभा एवं शिक्षक अभिभावक संघ की संयुक्त बैठक में परिक्षेत्र के समस्त चिह्नित विद्यार्थियों का प्रवेश विद्यालय में सुनिश्चित किये जाने हेतु वृहद स्तर पर विचार विमर्श कर कार्य योजना निर्मित करें।
5. सर्वे के आधार पर विद्यालय से जोड़े जाने वाले बच्चों के अभिभावकों को प्रवेश निमंत्रण पत्र भी सम्बन्धित शाला प्रधान के पर्यवेक्षण में सर्वे टोली के सदस्यों द्वारा उपलब्ध करवाया जाना है। प्रवेश निमंत्रण पत्र का मुद्रण आकर्षक व उचित संख्या में करवाया जावें ताकि विद्यालय के संस्था प्रधान को बंडल के रूप में आप द्वारा दिया जा सके।
6. प्रवेशोत्सव के सम्बन्ध में पुनः स्पष्ट किया जाता है कि समन्वित विद्यालयों में कक्षा 01 से 05 में कम से कम 150 का नामांकन, कक्षा 06 से 08 में 105, कक्षा 09 से 10 में 40 प्रति कक्षा के अनुसार कुल 80 तथा कक्षा 11 व 12 में प्रति कक्षा 60 के अनुसार कुल 120 विद्यार्थियों का नामांकन रहे। समग्र रूप से विद्यालय के नामांकन में वर्ष 2016 के प्रवेशोत्सव में कम से कम 05 नामांकन प्रति अध्यापक के अनुसार औसत रूप से 20 प्रतिशत नामांकन में वृद्धि के प्रयास आप द्वारा किये जाने है।
7. संस्था प्रधान द्वारा ग्राम पंचायतों, स्वैच्छिक संस्थान एवं स्थानीय जन प्रतिनिधियों व ग्राम के मुखिया व्यक्तियों से समन्वित प्रयास कर नामांकन के लक्ष्य को आसानी से गुणवत्ता के साथ अर्जित किया जा सकेगा। अच्छे कार्य करने वाले शिक्षक का विद्यालय स्तर व ग्राम पंचायत स्तर पर भी प्रवेशोत्सव के सम्बन्ध में नव प्रवेशित

छात्रों के साथ स्वागत किये जाने की कार्यवाही भी की जायेगी।

8. पंचायती राज विभाग द्वारा प्रदत्त निर्देशानुसार सम्पूर्ण राज्य में ग्राम पंचायतों की आम सभा के आयोजन के सम्बन्ध में स्थायी तिथि 01 मई नियत है। इस हेतु मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद से समन्वय कर जिला परिषद द्वारा जारी ग्राम सभाओं के कार्यक्रमानुसार ग्राम पंचायत मुख्यालय से सम्बन्धित प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक द्वारा उपस्थिति अंकित कराकर प्रवेशोत्सव के सम्बन्ध में प्रवेशोत्सव के कार्यक्रमानुसार राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को प्राप्त विभिन्न प्रकार की सुविधाओं, प्रोत्साहन योजनाओं, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु विभाग द्वारा लागू योजनाओं एवं कार्यक्रमों के सम्बन्ध में ग्राम वासियों को अवगत कराकर राज्य सरकार द्वारा शिक्षा में सुधार हेतु किये गये प्रयासों की जानकारी भी दी जावे।

9. पंचायत समिति व जिला परिषद की साधारण सभाओं के सम्बन्ध में सम्बन्धित विकास अधिकारी, पंचायत समिति एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद से समन्वय कर प्रवेशोत्सव कार्य योजना के अनुसार जिला परिषद व पंचायत समिति के साधारण सभा बैठकों में एजेण्डा बिन्दु रखवाकर, जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा जिला परिषद की साधारण सभा में एवम् जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा मनोनीत अधिकारियों द्वारा जिले की समस्त पंचायत समितियों की साधारण सभा में उपस्थित रहकर प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की जायेगी।

संलग्न : प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2016 मय प्रवेश निमंत्रण पत्र व कार्यक्रम रूपरेखा

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

प्रवेशोत्सव

2016

चलो पढ़ाएँ, आगे बढ़ाएँ, राष्ट्रधर्म निभाएँ

मानव जीवन के आधार
पढ़ना, लिखना और संस्कार

शिक्षा की निरन्तरता हेतु विशेष अभियान...

माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर
फैक्स-015-2201861, दूरभाष-0151-2522238
E-mail: commsecedu@yahoo.com

प्रवेशोत्सव: कार्यक्रम रूपरेखा
(चलो पढ़ाएँ- आगे बढ़ाएँ- राष्ट्रधर्म निभाएँ)

प्रस्तावना- गत वर्ष विभाग द्वारा चलाए गए प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के समस्त अधिकारी, शिक्षक, कार्मिक, जनप्रतिनिधि व अभिभावकों द्वारा दिए गए सहयोग से विभाग ने नामांकन वृद्धि में उत्साहजनक सफलता प्राप्त की है। गत वर्ष प्रवेशोत्सव कार्यक्रम से पहले समस्त राजकीय विद्यालयों हेतु आगामी तीन वर्षों के नामांकन लक्ष्य निर्धारित किये गये है। विभाग लक्ष्य को अर्जित करने के लिए कटिबद्ध है, अतः इस वर्ष भी विभाग ने प्रवेशोत्सव को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया है। नामांकन लक्ष्य को अर्जित करने के इस चुनौतीपूर्ण कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक तथा संस्था प्रधानों की है। विभाग अपेक्षा रखता है कि शिक्षक व संस्थाप्रधान चुनौती को स्वीकार करते हुए वर्ष के नामांकन लक्ष्य को अर्जित करेंगे।

प्रायः यह देखा गया है कि कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले छात्रों की संख्या कक्षा 12 तक पहुँचते-पहुँचते काफी कम रह जाती है। अर्थात् विद्यार्थी अपनी शिक्षा निरंतर नहीं रख पाते हैं। प्रवेशोत्सव मात्र विद्यालय की एन्ट्री कक्षा में विद्यार्थी के प्रवेश तक ही सीमित नहीं है वरन् यह मध्य की कक्षाओं में ड्रॉप-आउट हुए विद्यार्थियों को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा में लाए जाने का भी प्रयास है।

शिक्षा में निरन्तरता को बनाए रखना राज्य का एक महत्वपूर्ण कार्य है। विभिन्न प्रकार की प्रोत्साहन व छात्रवृत्ति योजनाओं के संचालन के बाद भी इस क्षेत्र में वांछित सफलता अभी शेष है। अतः आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया जावे तथा उनका पूर्ण tracking रिकार्ड भी संधारित हो। इस हेतु अपने आस-पास के फीडर विद्यालयों से अंतिम कक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों की सूची प्राप्त करें, साथ ही निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को राजकीय विद्यालयों की विशेषताओं यथा- पूर्ण प्रशिक्षित योग्य शिक्षक, विभिन्न छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन संबंधी सुविधाओं के बारे में अवगत और आश्वस्त करवाते हुए राजकीय विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित करें।

वर्ष 2016-17 हेतु माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा इस सत्र की वार्षिक परीक्षा के समापन के साथ ही नामांकन वृद्धि हेतु एक व्यापक अभियान चलाए जाने का निश्चय किया गया है। प्रत्येक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक एवं संस्था प्रधान का दायित्व है कि वे अपने परिक्षेत्र के समस्त विद्यार्थियों का प्रवेश राजकीय विद्यालयों में करवाया जाना सुनिश्चित करेंगे। प्रवेशोत्सव का यह विशेष अभियान दिनांक 26 अप्रेल 2016 से विधिवत रूप से चलाया जाएगा। इस अभियान द्वारा प्रवेश के निर्धारित लख्य को प्राप्त किया जाएगा। यह अभियान समुदाय को विद्यालय से जोड़ने के रास्ते में मील का पत्थर साबित हो, इसलिए आवश्यक है कि इसमें अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय जन-समुदाय का प्रत्येक स्तर पर सहयोग प्राप्त करते हुए इस अभियान को सफल बनाएँ।

उद्देश्य:-

- कक्षा 1 में नवप्रवेशी बालकों को चिह्नित कर नामांकित करवाना।
- अध्ययन की निरन्तरता हेतु अध्ययन निरन्तर नहीं रख पाने वाले छात्र-छात्राओं पर विशेष ध्यान देना।
- ड्रॉप आउट हुए छात्र-छात्राओं को 'Back-to-school' हेतु कार्ययोजना बनाना।
- मौसमी पलायन करने वाले बालक-बालिकाओं के लिए सर्व शिक्षा अभियान द्वारा संचालित गैर आवासीय विशेष शिक्षण शिविरों से उत्तीर्ण बच्चों को मुख्य धारा में प्रवेश दिलवाना।
- बाल श्रम में संलग्न ड्रॉप आउट/अनामांकित बालक-बालिकाओं को चिह्नित कर पूर्ववर्ती कक्षा से आगे अध्ययन हेतु प्रवेश दिलाना।
- कस्तुरबा गाँधी बालिका विद्यालय से उत्तीर्ण बालिकाओं हेतु शारदे छात्रावास अथवा अन्य विद्यालयों में उनके अध्ययन की निरन्तरता हेतु 'Tracking Plan' बनाना।
- माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को उच्चतम कक्षा पूर्ण होने तक उसी विद्यालय में अध्ययन निरन्तरता हेतु अभिभावकों को प्रेरित करना।

दो प्रमुख चरण:-

1. प्रथम चरण- दिनांक 26 अप्रैल 2016 से 10 मई 2016 तक
2. द्वितीय चरण- शेष रहे हार्ड कोर लक्ष्य समूह हेतु दिनांक 21 जून 2016 से 30 जून 2016 तक।

पूर्व तैयारियाँ एवं प्रचार-प्रसार/आई.ई.सी (Information for education Communication)-

- **नजरी नक्शा बनाना-** उच्च माध्यमिक /माध्यमिक विद्यालयों में उनके फीडर स्कूलों/निवास स्थानों का एक कार्डशीट पर नजरी नक्शा तैयार करना जिसमें नामांकन लक्ष्य और विद्यालय की स्थिति एवं उपलब्धि (At a glance) अंकित हों। यह नजरी नक्शा आपके विद्यालय में हर समय उपलब्ध हो ताकि निरीक्षण के समय विभागीय अधिकारियों/जनप्रतिनिधियों से अभियान बाबत सम्बलन प्राप्त करने में सुविधा रहे।
- शहरी विद्यालयों के निकटस्थ फीडर स्कूल/कैचमेन्ट एरिया का निर्धारण।
- प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा शिक्षा के निरन्तरता हेतु सरकार द्वारा किए जा रहे अभियान के बारे में व्यापक प्रचार-प्रसार करना।
- शिक्षा की निरन्तरता की इस अभिनव पहल पर आधारित पोस्टर एवं हैण्ड आउट्स प्रिंट करवाना।
- ढोल एवं गाजे-बाजे के साथ रैलियाँ आयोजित करना जिसमें बैनर एवं नारों के माध्यम से प्रचार-प्रसार करने हेतु मोहल्ला/ग्रामवार टोलियाँ बनाकर लक्ष्य समूह से घर-घर सम्पर्क करने हेतु लक्ष्यसमूह को पीले, नीले, लाल एवं सफेद कार्ड सम्बन्धित छात्र-छात्रा के अभिभावकों को प्रातः अथवा सायंकाल में वितरित कर उनके बच्चों को आगामी कक्षा में प्रवेश दिलाने हेतु निमंत्रित करना।
- प्रवेश हेतु निमन्त्रण-

माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान
प्रवेशोत्सव अभियान 2016
कक्षा.....में प्रवेश हेतु निमन्त्रण

जिला- ब्लॉक-
नाम छात्र/छात्रा-
पिता/माता/संरक्षक का नाम-
ग्राम/वासस्थान-
पंचायत का नाम-
पूर्ववर्ती विद्यालय का नाम-
प्रवेश लेने वाले विद्यालय का नाम-
विद्यालय में आयोजित होने वाले प्रवेशोत्सव की तिथि-

हस्ताक्षर संस्था प्रधान
राजकीय उच्च माध्यमिक/माध्यमिक विद्यालय.....

लक्ष्य समूह निर्धारण-

- पहली कक्षा में प्रवेश लेने वाले लक्ष्य समूह के बच्चों की सूचियाँ फीडिंग एरिया/कैचमेन्ट एरिया के आँगनबाड़ी केन्द्रों से प्राप्त करना।
- सर्व शिक्षा अभियान से आउट ऑफ स्कूल बच्चों की सूचियाँ प्राप्त करना।
- प्रवेश लेने वाले लक्ष्य समूह के बच्चों को चिह्नित कर सूचियाँ तैयार करवाना।
- कक्षा 6 में प्रवेश हेतु प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने वाले बच्चों की सूचियाँ प्राथमिक विद्यालयों से प्राप्त करना।
- कक्षा 9 में प्रवेश हेतु प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने वाले बच्चों की सूचियाँ सम्बन्धित उच्च प्राथमिक विद्यालयों से प्राप्त करना।
- कक्षा 11 में प्रवेश हेतु माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करने वाले बच्चों की सूचियाँ सम्बन्धित माध्यमिक विद्यालयों से प्राप्त करना।

कन्वर्जेन्स (सहयोग संस्थाएँ)

(i) जिला प्रशासन, (ii) शिक्षा विभाग (प्रारंभिक शिक्षा), (iii) शिक्षा विभाग (माध्यमिक शिक्षा), (iv) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, (v) सर्व शिक्षा अभियान, (vi) राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, (vii) पंचायती राज संस्थाएँ एवं शहरी निकाय, (viii) समाज कल्याण विभाग, (ix) महिला एवं बाल विकास विभाग, (x) साक्षरता एवं सतत् शिक्षा विभाग, (xi) लक्ष्य समूह के अभिभावक गण, (xii) स्वयंसेवी संस्थाएँ।

प्रवेशोत्सव क्रियान्विति के महत्वपूर्ण बिन्दु-

- प्रवेशोत्सव से संबंधित पम्पलेट्स का आवश्यक संख्या में मुद्रण एवं ग्राम/कस्बे/ढाणियों में वितरण।
- आवश्यकतानुसार प्रवेश हेतु निमंत्रण कार्ड का मुद्रण करवाना।
- पंचायत एवं ब्लॉक स्तरीय समितियों की बैठकों में फीडिंग /कैचमेंट एरिया का निर्धारण करना।
- परीक्षा परिणाम की घोषणा के साथ ही लक्ष्य समूह के निर्धारण हेतु

संस्था प्रधानों से क्रमशः कक्षा 5 उत्तीर्ण, कक्षा 8 उत्तीर्ण एवं कक्षा 10 उत्तीर्ण बालक-बालिकाओं की सूचियाँ प्राप्त करना।

- सूचियों का Validation करवाना।
- सूचियों के आधार पर सम्बन्धित विद्यालयों को लक्ष्य आवंटित करना।
- प्रवेशोत्सव से पूर्व प्रतिदिन का कार्यक्रम बनाकर समाचार पत्रों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार करना।
- नव प्रवेशी बालक-बालिकाओं का स्वागत कार्यक्रम आयोजित करना।
- नव प्रवेशी बालक-बालिकाओं को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकों का वितरण और अन्य प्रोत्साहन सामग्री वितरित करवाना।
- समय-समय पर प्रभावी मॉनिटरिंग द्वारा नामांकन का शत प्रतिशत लक्ष्य अर्जित करना।
- अभिभावक सम्पर्क/जन सम्पर्क करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शिक्षा से वंचित जिन बालक-बालिकाओं के अभिभावकों से सम्पर्क किया जाना है, उनकी सूची विद्यालय स्तर तक प्रत्येक शिक्षक के पास उपलब्ध हो। इस हेतु विद्यालय के आस-पास के क्षेत्र में शिक्षा से वंचित अनामांकित बच्चों के प्रवेश हेतु V.E.R. (village education register)/ W.E.R. (Ward education register) का भी प्रयोग किया जा सकता है, जिसे उस क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय के नोडल प्रधानाध्यापक से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम-2016

प्रथम चरण-अप्रैल, मई-2016 (26.04.2016 से 10.05.2016)

क्र.सं	दिनांक	वार	कार्यक्रम
1.	26 अप्रैल 2016 से 30 अप्रैल 2016	मंगलवार से शनिवार	1. विद्यालयों से लक्ष्य समूह की सूचियाँ प्राप्त करना एवं कार्ड तैयार करना। 2. स्वयं प्रवेश लेने वाले बच्चों का प्रवेश करवाना। 3. बालक-बालिकाओं एवं अध्यापकों की टोलियों का गठन कर उन अभिभावकों से विशेष रूप से सम्पर्क स्थापित करना जिनके बच्चे विद्यालय में अनामांकित हैं, उन्हें प्रवेश दिलाने हेतु प्रेरित करना। साथ ही बालिका नामांकन/बालिका प्रवेश हेतु विशेष ध्यान देना। 4. एसएसए. द्वारा किये गये सीटीएस. सर्वे अनुसार विद्यालय जाने योग्य बच्चों की खोज करना। 5. SDMC. एवं अध्यापक-अभिभावक परिषद की बैठक आहुत करना एवं प्रवेशोत्सव के बारे में जानकारी देना तथा उनका वांछित सहयोग प्राप्त करना।
2.	1 मई 2016	रविवार	पंचायती राज विभाग के स्थायी निर्देशानुसार ग्राम पंचायत की आम सभा आयोजन की स्थायी तिथि के अनुरूप ग्राम पंचायत मुख्यालय पर आयोज्य ग्राम सभा में संस्था प्रधान आवश्यक रूप से भाग लेंगे। आवश्यकतानुसार विभागीय अधिकारियों/स्टाफ सदस्यों के सहयोग से ग्राम वासियों को शिक्षा में सुधार हेतु किए जा रहे प्रयासों एवं राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों को दी जाने वाली सुविधाओं, छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं के संबंध में विस्तृत जानकारी देंगे। इसी सभा में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में जनसमुदाय की सक्रिय भागीदारी हेतु समस्त ग्रामवासियों को प्रेरित करेंगे।
3.	2 मई 2016	सोमवार	विद्यालय परिसर की साज-सज्जा, वृक्षारोपण कार्य करवाना एवं घर-घर सम्पर्क द्वारा कार्ड वितरण करना।
4.	3 मई 2016	मंगलवार	स्थानीय जनप्रतिनिधियों/अभिभावकों एवं बच्चों के साथ रैली का आयोजन करना, जिसमें शिक्षा की महत्ता से सम्बन्धित बैनर, स्टीकर, नारे आदि का उपयोग करते हुए ढोल-नगाड़े एवं मंजीरे के साथ रैली निकालना।
5.	4 मई 2016	बुधवार	स्थानीय जनप्रतिनिधियों/अभिभावकों की उपस्थिति में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम आयोजित करना एवं प्रार्थना सभा के आयोजन में ही नवीन प्रवेश लेने वाले बालक-बालिकाओं का माला पहिना कर एवं तिलक लगाकर स्वागत करना।
6.	5 मई 2016	गुरुवार	मोहल्ला बैठकों द्वारा विद्यालयों से वंचित हुए बच्चों के अभिभावकों को प्रेरित करना तथा स्थानीय जन प्रतिनिधि, सरपंच, वार्डपंच/सदस्य एवं सम्मानित व्यक्तियों द्वारा बच्चों को सम्बोधन कराना।
7.	6 मई 2016	शुक्रवार	बालसभा एवं ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना जो बच्चों को प्रवेश दिलाने में प्रेरक बने। यदि संभव हो तो प्रेरक चलचित्र का प्रदर्शन कराना।

8.	7 मई 2016	शनिवार	विद्यालय में प्रवेश पाने से वंचित हुए बच्चों के अभिभावकों को प्रेरित करने के साथ बच्चों की चित्रकला एवं सुलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाना। बच्चों हेतु खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन, बाल मेलों का आयोजन, शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रदर्शन। पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।
9.	9 मई 2016	सोमवार	प्रभात फेरी आयोजन तथा नव प्रवेशी बालक-बालिकाओं को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों का वितरण। अध्यापकों की टोलियों द्वारा छात्रों एवं अभिभावकों से सम्पर्क कर प्रवेशयोग्य बालकों को शाला में प्रवेश हेतु आनेवाली समस्याओं का पता लगाकर, वंचित रह गये बच्चों को प्रवेश देने के लिए विशेष प्रयास करना।
10.	10 मई 2016	मंगलवार	1. समारोह आयोजित कर नव प्रवेशी बच्चों का स्वागत, पहचान पत्र, बैज इत्यादि सामग्री का जनप्रतिनिधियों/ संस्थाप्रधानों द्वारा वितरण के साथ निःशुल्क पाठ्य पुस्तक/प्रोत्साहन सामग्री का वितरण। 2. प्रवेशोत्सव के दौरान किये गये कार्यों की समीक्षा व उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार एवं पखवाड़े के अन्तर्गत किये गये कार्यों की रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को प्रेषित करना।

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम-2016

द्वितीय चरण-जून-2016 (21.06.2016 से 30.06.2016)

क्र.सं	दिनांक	वार	कार्यक्रम
1.	21 जून 2016	बुधवार	SDMC. की कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित कर प्रवेशोत्सव के द्वितीय चरण के सफल एवं सुचारु संचालन हेतु विचार विमर्श करना एवं विद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को समारोहपूर्वक मनाना। इस कार्यक्रम में आस-पास के जनसमुदाय को सम्मिलित करते हुए योग की महत्ता से अवगत कराते हुए विभिन्न आसन, प्राणायाम इत्यादि का प्रदर्शन करना। साथ ही प्रवेश से अब तक वंचित बच्चों के बारे में पुनः फीडबैक प्राप्त कर उनके अभिभावकों को प्रेरित करना।
2.	22जून 2016	गुरुवार	प्रथम चरण में शेष रहे हार्ड कोर बच्चों की सूचियाँ तैयार करना, कार्ड तैयार करना, घर-घर सम्पर्क हेतु योजना बनाना। लक्ष्य समूह से घर-घर सम्पर्क कर पुनः प्रवेश हेतु आमंत्रित करना।
3.	23 जून 2016	शुक्रवार	विद्यालय परिसर की साज-सज्जा, वृक्षारोपण कार्य करवाना एवं घर-घर सम्पर्क द्वारा कार्ड वितरण करना।
4.	24 जून 2016	शनिवार	स्थानीय जनप्रतिनिधियों/अभिभावाकों एवं बच्चों के साथ रैली का आयोजन करना, जिसमें शिक्षा की महत्ता से सम्बन्धित बैनर, स्टीकर, नारे आदि का उपयोग करते हुए ढोल-नगाड़े एवं मंजीरे के साथ रैली निकालना।
5.	27 जून 2016	मंगलवार	स्थानीय जनप्रतिनिधियों/अभिभावकों की उपस्थिति में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम आयोजित करना एवं प्रार्थना सभा के आयोजन में ही नवीन प्रवेश लेने वाले बालक-बालिकाओं का माला एवं तिलक लगाकर स्वागत करना। मोहल्ला बैठकों द्वारा विद्यालयों से वंचित हुए बच्चों के अभिभावकों को प्रेरित करना तथा स्थानीय जन प्रतिनिधि, सरपंच, वार्ड पंच/सदस्य एवं सम्मानित व्यक्तियों द्वारा बच्चों को सम्बोधन कराना।
6.	28 जून 2016	बुधवार	भामाशाह जयन्ती का विद्यालय में समारोहपूर्वक आयोजन करना। इस आयोजन में क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को निमंत्रित कर विद्यालय हेतु सहयोग जुटाने के लिए प्रेरित करना। प्रवेशोत्सव के बारे में भामाशाहों को जानकारी देकर नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए प्रतीकात्मक अध्ययन सामग्री यथा- पैन, पेंसिल, कॉपी इत्यादि भामाशाहों से प्राप्त कर प्रोत्साहन स्वरूप वितरण करवाना।
7.	29 जून 2016	गुरुवार	पुनः विद्यालय में प्रवेश पाने से वंचित हुए बच्चों के अभिभावकों को प्रेरित करना, पुनः ढोल-नगाड़े इत्यादि के साथ रैली/प्रभात फेरी का आयोजन। अभी भी वंचित रह गये बालक-बालिकाओं से डोर टू डोर सम्पर्क कर प्रवेश हेतु प्रेरित करना।
8.	30 जून 2016	शुक्रवार	अध्यापकों की टोलियों द्वारा छात्रों एवं अभिभावकों से सम्पर्क कर प्रवेश योग्य बालकों को शाला में प्रवेश हेतु आने वाली समस्याओं का पता लगाकर, वंचित रह गये बच्चों को प्रवेश देने के लिए विशेष प्रयास करना। प्रवेशोत्सव के दौरान किये गये कार्यों की समीक्षा एवं कार्यों की विस्तृत रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को प्रेषित करना।

प्रपत्र संख्या....1

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2016
ग्रामवार/विद्यालयवार सर्वेक्षित बालक/बालिकाओं के विवरण की सूची

ग्राम/विद्यालय का नाम..... ग्राम पंचायत/नगरपालिका का नाम.....

क्र.सं.	नाम बालक/बालिका	पिता का नाम	आयु /जन्मतिथि	वार्ड/गाँव का नाम	आधार सर्वेः सीटीएस/ सम्पर्क	पहचान विवरणः नवीन/ड्रॉप आउट	पूर्व स्कूल का विवरण	ड्रॉप आउट का विवरण
1.								
2.								
3.								
4.								
5.								
6.								
7.								
8.								
9.								
10.								

हस्ताक्षर अध्यापक

प्रपत्र संख्या....2

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2016
विद्यालयवार जोड़े गये बालक–बालिका से संबंधित सूची

ग्राम/विद्यालय का नाम.....

क्र.सं.	नाम बालक/बालिका	पिता का नाम	आयु /जन्मतिथि	वार्ड/ग्राम का नाम	निवास स्थान से विद्यालय की दूरी
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					
7.					
8.					
9.					
10.					

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

प्रपत्र संख्या–3

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2016

प्रगति विवरण

विद्यालय स्तर–

विद्यालय का नाम......................

पंचायत/निकाय –

पंचायत समिति –

क्र.सं.	कक्षा 1 में प्रवेश			कक्षा 2 में प्रवेश			कक्षा 3 में प्रवेश			कक्षा 4 में प्रवेश			कक्षा 5 में प्रवेश			कक्षा 6 में प्रवेश			कक्षा 7 में प्रवेश			कक्षा 8 में प्रवेश			कक्षा 9 में प्रवेश			कक्षा 10 में प्रवेश			कक्षा 11 में प्रवेश			कक्षा 12 में प्रवेश			योग नामांकन		
	उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि			उपलब्धि		
	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T	B	G	T
26-Apr-16																																							
27-Apr-16																																							
28-Apr-16																																							
29-Apr-16																																							
30-Apr-16																																							
2-May-16																																							
3-May-16																																							
4-May-16																																							
5-May-16																																							
6-May-16																																							
7-May-16																																							
9-May-16																																							
10-May-16																																							
योग–अ																																							
21-Jun-16																																							
22-Jun-16																																							
23-Jun-16																																							
24-Jun-16																																							
27-Jun-16																																							
28-Jun-16																																							
29-Jun-16																																							
30-Jun-16																																							
योग–ब																																							
महायोग (अ+ब)																																							

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

प्रपत्र संख्या–4

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2016

श्रेणीवार प्रवेशित बालक/बालिकाओं का संख्यात्मक विवरण

कक्षा	अनु. जाति		अ.ज. जाति		अ.पि.व.		अल्पसंख्यक		विशेष योग्यजन		सामान्य		योग	
	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका
1														
2														
3														
4														
5														
6														
7														
8														
9														
10														
11														
12														
योग														

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

प्रपत्र संख्या–5

प्रवेशोत्सव कार्यक्रम 2016

श्रेणीवार प्रवेशित बालक/बालिकाओं का संख्यात्मक विवरण

कक्षा	अनु. जाति		अ.ज. जाति		अ.पि.व.		अल्पसंख्यक		विशेष योग्यजन		सामान्य		योग	
	नामांकन अभियान से पूर्व	नामांकन अभियान पश्चात	नामांकन अभियान से पूर्व	नामांकन अभियान पश्चात	नामांकन अभियान से पूर्व	नामांकन अभियान पश्चात	नामांकन अभियान से पूर्व	नामांकन अभियान पश्चात	नामांकन अभियान से पूर्व	नामांकन अभियान पश्चात	नामांकन अभियान से पूर्व	नामांकन अभियान पश्चात	नामांकन अभियान से पूर्व	नामांकन अभियान पश्चात
1														
2														
3														
4														
5														
6														
7														
8														
9														
10														
11														
12														
योग														

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

7. सफाई के प्रति जागरूकता की क्रियान्विति निर्धारित करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● परिपत्र ● राजकीय विद्यालयों में सुव्यवस्थित, अनुकूल पर्यावरण विकसित किए जाने तथा स्वच्छता के प्रति छात्रों एवं शिक्षकों को नियमित सफाई बनाये रखने हेतु वातावरण निर्मित किया जाकर सफाई के प्रति जागरुकता की क्रियान्विति निर्धारित की जानी है।

शिक्षा का उद्देश्य एक सुयोग्य नागरिक तैयार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी स्वच्छता के प्रति आदर्श आचरण एवं कर्तव्य पालन करते हुए विद्यालय एवं विद्यालय से सम्बन्धित स्थानों की साफ-सफाई स्वच्छता को बनाये रखें।

विद्यालयों में इस हेतु सदन व्यवस्था लागू होती है। यह ध्यान रखा जावें कि इन सदनों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रखते हुए कक्षा कक्ष, छात्रावास, भोजनालय, शौचालय तथा परिसर की स्वच्छता के लिए कार्य की व्यवस्था की जावें।

उक्त के संबंध में समस्त राजकीय विद्यालय परिसर की सफाई एवं विद्यालयों में स्थित शौचालयों तथा जिन विद्यालयों में छात्रावास भवन संचालित है वहाँ के कक्ष, भोजनालय, शौचालय की नियमित सफाई सुनिश्चित करावें।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना प्रत्येक स्तर पर सर्वोच्च प्राथमिकता से की जाए। ध्यान रहे, इसमें उदासीनता बरतने वाले अधिकारियों/कार्मिकों के विरुद्ध 'राजस्थान असैनिक सेवाएँ (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम-1958' के तहत अनुशासनिक कार्यवाही अमल में लाई जा सकेगी।

● (बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/साप्र/डी-3/स्वच्छ भारत अभियान/15-16 दिनांकः 22.03.2016

8. एसआईक्यूई. परियोजना के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर योगात्मक आकलन चतुर्थ योगात्मक आकलन की तिथि संशोधन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : उनि/सशि/SIQE/2015-16/307 दिनांकः 11.03.2016 ● समस्त मण्डल उपनिदेशक-माध्यमिक, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, समस्त संस्था प्रधान रामावि/राउमावि ● विषय : एसआईक्यूई. परियोजना के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर योगात्मक आकलन चतुर्थ योगात्मक आकलन की तिथि संशोधन।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत समन्वित रामावि. एवं राउमावि. की प्राथमिक कक्षाओं में शैक्षिक सत्र 2015-16 में एसआईक्यूई. कार्यक्रम के अन्तर्गत सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में पाठ्यक्रम को चार टर्मों में विभाजित कर प्रत्येक टर्म में बच्चों का योगात्मक आकलन किया जा रहा है। पूर्व में इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 18.09.2015 के द्वारा **चतुर्थ योगात्मक आकलन की अवधि 16 से 25 मार्च 2016 निर्धारित की गई थी। इसमें संशोधन करते हुए 15 से 25 अप्रेल 2016 की अवधि निर्धारित की जाती है।** योगात्मक आकलन दर्ज करने की प्रक्रियाएं पूर्ववत रहेगी।

उक्त अनुसार योगात्मक आकलन करना सुनिश्चित करवायें।

● (बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

9. वर्ष : 2015-16 के लिए समस्त अधीनस्थ कर्मचारियों/अधिकारियों के हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/हिनि/28203/2015-16 दिनांक 21.3.2016 ● उप निदेशक (माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा), समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा), समस्त ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी, समस्त विशिष्ट संस्थाएँ, शिक्षा विभाग ● विषय : वर्ष : 2015-16 के लिए समस्त अधीनस्थ कर्मचारियों/अधिकारियों के हितकारी निधि वार्षिक अंशदान बाबत।

महोदय,

राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.21(ग)2/95 दिनांक 02.08.2002 की अनुपालना में हितकारी निधि में वर्ष 2015-16 का वार्षिक अंशदान शिक्षा विभाग के समस्त अधीनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों के अधिकारियों/व्याख्याताओं/वरिष्ठ अध्यापकों/शारीरिक शिक्षकों/पुस्तकालयाध्यक्षों/अध्यापकों/प्रयोगशाला सहायकों/कार्यालय अधीक्षकों/कार्यालय सहायकों/वरिष्ठ लिपिकों/कनिष्ठ लिपिकों/जमादार, सहायक कर्मचारियों एवं अन्य समस्त संवर्ग के राज्य कर्मचारियों का राज्य सरकार द्वारा निम्न निर्धारित दर से हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान समस्त आहरण-वितरण अधिकारी अपने अधीनस्थ समस्त कार्यरत कार्मिकों से अनिवार्य रूप से प्रतिवर्ष प्राप्त कर आहरण-वितरण अधिकारी के माध्यम से भिजवाये जाने का प्रावधान किया हुआ है:-

राज्य सरकार द्वारा निर्धारित वार्षिक अंशदान की दरें

1.	समस्त राजपत्रित अधिकारी (स्कूल व्याख्याता सहित)	50/- प्रति वर्ष
2.	व.अ./कार्यालय अधीक्षक/कार्यालय सहायक एवं समकक्ष	30/- प्रति वर्ष
3.	अध्यापक/व.लि./क.लि./प्र.शा.से./प्र.शा.स./जमादार/च.श्रे.क. एवं समकक्ष	20/- प्रति वर्ष

हितकारी निधि कल्याणकारी योजना का मुख्य उद्देश्य :

इस कल्याणकारी योजना अन्तर्गत राज्य कर्मचारियों/अध्यापकों से प्राप्त अंशदान राशि से सेवा में रहते हुए कार्मिकों के निधन पर उनके आश्रितों को रुपये 7000/- एवं दुर्घटना में निधन होने पर रुपये

10,000/- तथा गंभीर बीमारी पर उनको तथा परिवार के सदस्य की बीमारी पर रुपये 5000/- की सहायता राशि दिये जाने का प्रावधान है। शिक्षा विभागीय कर्मचारियों/अध्यापकों के 100 बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में प्रथम वर्ष में अध्ययनरत होने पर रुपये 1500/- से 2500/- तक की राशि दिये जाने का प्रावधान है।

प्रायः देखने में आया है कि आहरण-वितरण अधिकारियों द्वारा राज्य सरकार के उक्त आदेश की पालना में शिथिलता बरती जाती है, जिसके कारण वार्षिक अंशदान की राशि पूर्ण रूप से तथा समय पर प्राप्त नहीं होती तथा परिणामस्वरूप इस कल्याणकारी योजना के अन्तर्गत अंशदान सहायता राशि में बढ़ोतरी नहीं हो पाती।

अतः वर्ष 2015-16 का हितकारी निधि का वार्षिक अंशदान मार्च माह के वेतन से (जिसका भुगतान अप्रैल, 2016 में किया जावेगा) में अनिवार्य रूप से समस्त कार्मिकों से उपर्युक्त निर्धारित दर से प्राप्त कर उक्त राशि आवश्यक रूप से भिजवाना सुनिश्चित करें।

निर्देशित किया जाता है कि आपके कार्यालय एवं आपके अधीनस्थ समस्त विद्यालयों को परिपत्र जारी करें व प्रत्येक आहरण-वितरण अधिकारी से निर्धारित दर से वार्षिक अंशदान की राशि संकलित कर प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट **'अध्यक्ष हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर'** के नाम से बनवाकर भिजवायें तथा प्रत्येक आहरण-वितरण अधिकारी से ये प्रमाण-पत्र भी लेवें कि उनके अधीनस्थ समस्त कार्मिकों के अंशदान की राशि प्राप्त कर निदेशालय को भिजवा दी गई है।

समस्त कार्यालयों/विद्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधिकारियों से प्राप्त अंशदान का एक रजिस्टर निम्न प्रपत्रानुसार (एक पृष्ट पर एक ही नाम अंकित करें) आवश्यक रूप से प्रत्येक आहरण-वितरण अधिकारी अपने कार्यालय/विद्यालय में संधारित करेगा, जिसमें अंशदान की प्रविष्टियों का समुचित इन्द्राज हो।

हितकारी निधि अंशदान रजिस्टर संधारण का प्रपत्र

कार्यालय/विद्यालय का नाम

कर्मचारी का नाम: पदः नियुक्ति तिथिः

क्र. सं.	अंशदान वर्ष	अंशदान राशि	बैंक ड्राफ्ट संख्या	दिनांक	निदेशालय से प्राप्त जी.ए.51 क्रमांक एवं दिनांक

● (बी.एल. स्वर्णकार) आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

आवश्यक सूचना

1. **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBBJ बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।**
2. **व्यक्तिगत रूप से पत्रिका मंगवाने वाले ग्राहक पत्राचार का पूर्ण पता (यथा ग्राहक संख्या/ग्राहक का नाम/पिता का नाम/मकान नं. गली/मोहल्ला/पता/ग्राम/पोस्ट/ग्राम पंचायत/पंचायत समिति/तहसील/वाया/जिला/पिनकोड) का उल्लेख करते हुए तथा जिन रामावि/राउमावि/राबामावि/राबाउमावि. में पिनकोड के अभाव/अपूर्ण पते के कारण पत्रिका नहीं पहुँच पाती है वे तत्काल विद्यालय का पत्राचार का पूर्ण पता (यथा विद्यालय का नाम/ग्राम/ पोस्ट/ग्राम पंचायत/पंचायत समिति/तहसील/वाया/जिला/पिनकोड) ग्राहक/संस्था प्रधान स्वयं 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' को पोस्ट कार्ड पर लिखकर भिजवाएँ, ताकि पत्रिका की पहुँच को सुनिश्चित किया जा सके।**

-वरिष्ठ संपादक

10. कलेण्डर वर्ष–2016 में राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा घोषित अवकाश की सूचना

क्र.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
1.	जयपुर	15/01/2016 07/10/2016	शुक्रवार शुक्रवार	मकर संक्रांति छठ का मेला
2.	अलवर	15/07/2016 06/09/2016	शुक्रवार मंगलवार	जगन्नाथ मेला पाण्डुपोल मेला
3.	दौसा	15/01/2016 12/02/2016	शुक्रवार शुक्रवार	मकर संक्रांति बसन्त पंचमी
4.	भरतपुर	19/07/2016 05/09/2016	मंगलवार सोमवार	मुडिया पूनों गणेश चतुर्थी
5.	धौलपुर	07/09/2016 19/10/2016	बुधवार बुधवार	देवधर मच्छकुण्ड मेला करवा चौथ
6.	सवाईमाधोपुर	05/09/2016 27/01/2016	सोमवार बुधवार	गणेश चतुर्थी चौथमाता
7.	करौली	05/09/2016 11/11/2016	सोमवार शुक्रवार	गणेश चतुर्थी देवउठनी ग्यारस
8.	अजमेर	13/04/2016 11/11/2016	बुधवार शुक्रवार	उर्स मेला पुष्कर मेला
9.	भीलवाड़ा	31/03/2016 13/09/2016	गुरुवार मंगलवार	शीतला अष्टमी जलझूलनी एकादशी
10.	नागौर	14/01/2016 31/03/2016	गुरुवार गुरुवार	मकर संक्रांति शीतला अष्टमी
11.	टोंक	13/09/2016 28/10/2016	मंगलवार शुक्रवार	जलझूलनी ग्यारस धनतेरस
12.	कोटा	15/01/2016 15/09/2016	शुक्रवार गुरुवार	मकर संक्रांति अनंत चतुर्दशी
13.	बारां	13/09/2016 10/10/2016	मंगलवार सोमवार	जलझूलनी एकादशी महानवमी
14.	बूँदी	15/01/2016 05/09/2016	शुक्रवार सोमवार	मकर संक्रांति गणेश चतुर्थी
15.	झालावाड़	22/04/2016 13/09/2016	शुक्रवार मंगलवार	संतपीपा जयंती जलझूलनी एकादशी (डोल–ग्यारस)
16.	जोधपुर	31/03/2016 09/05/2016	गुरुवार सोमवार	शीतला अष्टमी अक्षय तृतीया (आखातीज)
17.	पाली	05/09/2016 10/10/2016	सोमवार सोमवार	गणेश चतुर्थी महानवमी
18.	बाड़मेर	09/05/2016 28/10/2016	सोमवार शुक्रवार	अक्षय तृतीया (आखातीज) धनतेरस
19.	जैसलमेर	09/05/2016 28/10/2016	सोमवार शुक्रवार	अक्षय तृतीया (आखातीज) धनतेरस
20.	सिरोही	14/01/2016 31/03/2016	गुरुवार गुरुवार	मकर संक्रांति शीतला अष्टमी
21.	जालोर	15/02/2016 30/03/2016	सोमवार बुधवार	जालोर महोत्सव शीतला सप्तमी
22.	उदयपुर	02/08/2016 13/09/2016	मंगलवार मंगलवार	हरियाली अमावस्या जलझूलनी एकादशी
23.	बांसवाड़ा	15/09/2016 03/11/2016	गुरुवार गुरुवार	अनंत चतुर्दशी मंशावृत चौथ
24.	चित्तौड़गढ़	31/03/2016 05/04/2016 02/08/2016	गुरुवार मंगलवार मंगलवार	शीतला अष्टमी (कपासन उपखण्ड में) रंगतेरस (कपासन उपखण्ड छोड़कर) हरियाली अमावस्या (पूरा जिला क्षेत्र)
25.	प्रतापगढ़	05/04/2016 02/08/2016	मंगलवार मंगलवार	रंगतेरस हरियाली अमावस्या
26.	डूंगरपुर	22/02/2016 15/09/2016	सोमवार गुरुवार	बेणेश्वर मेला अनंत चतुर्दशी
27.	राजसमन्द	31/03/2016 13/09/2016	गुरुवार मंगलवार	शीतला अष्टमी जलझूलनी एकादशी
28.	चूरू	22/04/2016 26/08/2016	शुक्रवार शुक्रवार	हनुमान जयंती गोगानवमी
29.	सीकर	18/03/2016 13/04/2016	शुक्रवार बुधवार	खाटूश्याम जी मेला जीणमाता मेला
30.	बीकानेर	09/05/2016 16/06/2016	सोमवार गुरुवार	अक्षय तृतीया निर्जला एकादशी
31.	हनुमानगढ़	13/01/2016 13/04/2016	बुधवार बुधवार	लोहड़ी बैशाखी
32.	झुंझुनूं	15/01/2016 28/10/2016	शुक्रवार शुक्रवार	मकर संक्रांति धनतेरस
33.	श्रीगंगानगर	13/01/2016 26/10/2016	बुधवार बुधवार	लोहड़ी श्रीगंगानगर स्थापना दिवस

महिमा

(1) विद्या

येषां न विद्या न तपो न दानम् ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलौके भूवि भारमूताः, मनुष्य-रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात् :- जिनके पास विद्या नहीं है, तप नहीं है, ज्ञान नहीं है, चरित्र नहीं है, गुण नहीं है और धर्म नहीं है, वे इस संसार में धरती पर भार स्वरूप मनुष्य के रूप में पशु समान विचरण करते हैं, अर्थात् ऐसे मनुष्य का जीवन पशु समान है।

न चौरहार्य न च राजहार्य, न भ्रातृ भाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धते एवं नित्यम् विद्या धनं सर्वधन-प्रधानम्।।

अर्थात् :- विद्या रूपी धन न तो चोरों द्वारा चुराने योग्य है, न ही शासक द्वारा हर लेने योग्य है, न भाइयों द्वारा बँटवारा किये जाने योग्य है और न ही बोझा रूप बनता है। खर्च करने पर हमेशा बढ़ता ही है। विद्या-धन सभी धनों में श्रेष्ठ एवं प्रधान धन है।

कामधेनु-गुणा विद्या सर्वदा फल दायिनी।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्।।

अर्थात् :- कामधेनु के समान गुणवाली विद्या सदा श्रेष्ठ फल देने वाली है। विद्या विदेश में माता के समान पालन व रक्षण करने वाली है। विद्या को गुप्त धन माना गया है।

क्षणशः कणशश्चैव, विद्यामर्थं च चिन्तयेत।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या, कणे नष्टे कुतो धनम्।।

अर्थात् :- प्रत्येक क्षण और प्रत्येक कण विद्या और धन की चिन्ता करनी चाहिए क्योंकि एक क्षण के नष्ट होने पर विद्या कहाँ से और एक कण के नष्ट होने पर धन कहाँ से (प्राप्त होगा) अर्थात् विद्या हेतु जीवन का प्रत्येक क्षण व धन का प्रत्येक कण ग्रहण करने एवं उसकी रक्षा करने का प्रयास करना चाहिए।

कि कुलेन विशालेन, विद्याहीनेन देहिनाम।
दुष्कुलीनोऽपि विदुषो, दैवेरपि सुपूज्यत।।

अर्थात् :- विद्या से रहित मनुष्यों के विशाल कुल से क्या प्रयोजन क्योंकि दूषित कुल में उत्पन्न होकर भी विद्वान देवताओं द्वारा भी पूजा जाता है।

विद्वान प्रशस्यते लोके, विद्वान सर्वत्र पूज्यते।
विद्यया लभते सर्व, विद्या सर्वत्र पूज्यते।।

अर्थात् :- विद्वान संसार में प्रशंसा पाता है। विद्वान सब जगह पूजा जाता है। विद्या से सब कुछ प्राप्त होता है। विद्या सभी जगह पूजी जाती है। विद्या सर्वत्र पूजनीय है।

(2) आरोग्य

ब्रह्म मुहुरत शयन तजि, करिये प्रभु का ध्यान।
सुखो, स्वास्थ्य में होयगी, इससे वृद्धि महान! ।।1।।

जल पीकर के शौच जा, टहल मील दो-तीन
निश्चय होगी आपकी, कई व्याधियाँ छीन।।2।।

दातुन कीकर नीम की, या पीलू की मूल
सुदृढ़ सब ही दाँत हो, रहे न किंचित शूल।।3।।

निर्मल ताजी नीर सो, कर घर्षण स्नान।
संध्या प्राणायाम करि, करिये गीता ज्ञान।।4।।

करिये सेवन धूप का, प्रातः खुले शरीर।
बेधत है कृमि-रोग के, रवि किरणों के तीर।।5।।

भक्ष्याभक्ष्य पदार्थ को, करि पुनि पूर्ण विचार।
कम खाओ, चाबो अधिक, होय न उदर विकार।।6।।

तदपि उदर विकार का, पाओ कछु आभास।
उष्णोदक सेवन करो, अष्ट प्रहर उपवास।।7।।

प्राकृत वेगों की कबहु, गति मत रोको भूल।
कबहू पनप ना पाएँगी, कब्ज रोग की मूल।।8।।

सुखद स्वास्थ्य के वास्ते, हँसना है अनिवार्य।
शुद्धि वृद्धि हो रक्त की, अरु संचालन कार्य।।9।।

थक जाओ जब तुम कभी करते-करते काम।
लो अवश्य ही उस समय, यथा योग्य आराम।।10।।

नित्य सात घंटे शयन, कीजै आप अवश्य।
न्यूनाधिक सोना बुरा, लाता है आलस्य।।11।।

(3) प्रार्थना

हम अपने पथ को पा जायें, इतना विश्वास हमें दो माँ।
तम की बेला है राह कठिन, कण्टक मेला है राह कंटिल।।
चौराहे पर चौराहे हैं, पग-पग रेला है राह कठिन।
भटकावों में न कहीं आवे, वह पुण्य प्रकाश हमें दो माँ।।
बादल बिजली में होड़ ठनी, गहरे दलदल से राह सनी।
पावों का वेग रोकने को, शूलों की भीड़ लगी इतनी।।
धीरज से पाँव बढ़ा पायें, इतना मधुहास हमें दो माँ।
हो बुद्धि शुद्ध शुभ चाह बने, हर पाँव उठे तो राह बने।।
उठती तूफानी आंधी में, साकार बने जीवन सपने।
तम पर प्रकाश से छा जायें, पलता वह श्वास हमें दो माँ।।

संकलन : **रेणुका गाँधी,** वरिष्ठ अध्यापिका
रा.बा.उ.मा. विद्यालय,
धरियानाड, प्रतापगढ़

व्यक्तित्व विकास

कैसे हो व्यक्तित्व का विकास?

❒ डॉ. रेणुका व्यास

व्यक्तित्व क्या है? व्यक्तित्व का विकास कैसे किया जा सकता है? क्या व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है या फिर सिर्फ व्यक्तित्व को तराशा और निखारा जा सकता है? ये कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनका सीधा संबंध बालक के विकास से है। एक शिक्षक तथा अभिभावक के रूप में गहन चिंतन के बाद मैं **'व्यक्तित्व विकास'** के विषय में अपने विचार आप सभी के साथ बाँटना चाहती हूँ।

व्यक्तित्व क्या है? पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों यथा फ्रायड तथा जुंग ने मनुष्य के मन के विषय में गहन शोध किए हैं जिससे आधुनिक जगत को मनुष्य, उसके मन तथा व्यक्तित्व की गहरी पर्तों के विषय में जानने में काफी मदद मिली है। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने भी योग, ध्यान, साधना के माध्यम से मनुष्य की चेतना, उसके मन तथा व्यक्तित्व पर गहन एवं प्रभावशाली कार्य किया है।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों तथा प्राचीन भारतीय मनीषियों के कार्यों का गहन अध्ययन कर कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व व्यक्ति की व्यक्तिगत पहचान है। व्यक्तित्व अनेकानेक व्यक्त तथा अव्यक्त तत्वों का योग है। व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमताएँ ही उसका व्यक्तित्व है।

व्यक्तित्व के दो प्रमुख आयाम हैं

1. **बाहरी व्यक्तित्व**
2. **आंतरिक व्यक्तित्व**

1. बाहरी व्यक्तित्व:–व्यक्ति का रूप रंग, कद–काठी, चाल–ढाल, उसकी वेशभूषा, उसे धारण करने का तरीका इत्यादि बाहरी व्यक्तित्व के अंतर्गत आते हैं। व्यक्ति का बाहरी व्यक्तित्व देश, काल, परिस्थितियों, धर्म, समाज तथा आनुवांशिकता से प्रभावित होता है। इनके द्वारा चालित भी होता है। बाहरी व्यक्तित्व में बदलाव संभव है। आज जब विज्ञान इतनी उन्नति कर चुका है तब विज्ञान, सौन्दर्य–प्रसाधनों, प्रशिक्षण तथा अभ्यास के द्वारा बाहरी व्यक्तित्व में काफी हद तक बदलाव किया जा सकता है।

2. मूल व्यक्तित्व या आंतरिक व्यक्तित्व:–आंतरिक व्यक्तित्व ही व्यक्ति का मूल व्यक्तित्व है। व्यक्ति की कार्यशैली, अपने प्रति, दूसरों के प्रति, जीवन के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण, अनुकूल तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को देखने का नजरिया, प्रतिक्रिया व्यक्त करने का तरीका ये सभी कुछ आंतरिक व्यक्तित्व में आते हैं। आंतरिक व्यक्तित्व को बाहरी परिवेश, बाहरी परिस्थितियां तो प्रभावित तो अवश्य करती हैं पर वे आंतरिक व्यक्तित्व में बदलाहट नहीं कर सकतीं। आंतरिक व्यक्तित्व में बदलाहट का प्रयास भी नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह प्रयास व्यक्तित्व में विकृति पैदा कर सकता है। आज हम शिक्षा, धर्म, बाजारीकरण के द्वारा बालक के आंतरिक व्यक्तित्व के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं तभी तो हमारे जीवन में इतना तनाव, हिंसा, हताशा, निराशा, कुंठा, असंतोष पनप रहा है। हर बालक का आंतरिक व्यक्तित्व विशिष्ट है। विलक्षण है, क्योंकि इस आंतरिक व्यक्तित्व को प्रभावित अवश्य बाहरी तत्व करते हैं, पर इस व्यक्तित्व का प्रस्फुटन व्यक्ति के अंदर से होता है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा होगा? इसको तय उसके अन्दर पड़ा बीज करता है, वैसे ही जैसे जमीन के नीचे पड़ा बीज तय करता है कि पौधा कैसा होगा। पौधा नीम का होगा या आम का, यह सब बीज पर निर्भर करता है। एक पौधा जैसे पानी, प्रकाश, खाद, मिट्टी बाहर से प्राप्त करता हैं पर फल, फूल, पत्तियों के रूप में अभिव्यक्त वही करता है, जो उसके बीज में छिपा है। इसलिए किसी बालक के मूल व्यक्तित्व को पहचान कर हम उसके सर्वांगीण विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर सकते हैं। उसके विकास हेतु सहायक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

व्यक्तित्व के इन दोनों आयामों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि:–

1. हर व्यक्ति के संभावनाएं अलग हैं। हर व्यक्ति के बीज अलग हैं। उनके आंतरिक ब्लूप्रिंट अलग हैं अतः हर व्यक्ति अलग है।
2. हर व्यक्तित्व अतुलनीय है। अनोखा है। मौलिक है। यह बात अलग है कि उस व्यक्तित्व को निखरने के लिए सहयोगात्मक वातावरण मिलता है या नहीं।
3. परमात्मा इतना मौलिक सर्जक है कि उसकी पुष्टि में दोहराव संभव नहीं। इसलिए किन्हीं दो व्यक्तित्वों में तुलना संभव नहीं। सदियां बीत गई उसने राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, सुकरात, आदि को एक ही बनाए। दूसरे राम, कृष्ण, बुद्ध बनाया जाना आज तक संभव नहीं हुआ।
4. व्यक्तित्व निखारा जा सकता है, पैदा नहीं किया जा सकता। किसी भी एक व्यक्ति को दूसरे जैसा नहीं बनाया जा सकता। अगर हम बालक को कहें कि उसे भगतसिंह या गाँधी जैसा बनना चाहिए तो यह गलत होगा, क्योंकि कोई भी किसी दूसरे के जैसा नहीं हो सकता। होना भी नहीं चाहिए। तुलसी का पौधा नीम के वृक्ष जैसा बड़ा बनने की कोशिश क्यों करें? प्रकृति में छोटा होते हुए भी तुलसी के पौधे का अपना महत्व है तथा कटु होने के बावजूद नीम के वृक्ष का अपना वजूद है। दोनों के होने का अपना तरीका है। दोनों की अपनी अलग गरिमा है। एक दूसरा जैसा बनने की होड़ में व्यक्तित्व विकृत तथा अधकचरा हो सकता है। अधकचरा होना व्यक्ति के लिए सर्वाधिक बड़ा अभिशाप है।

5. धर्म-संप्रदाय, सामाजिक-संस्कार, पूर्व धारणाएं व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। धर्म-समाज, धारणाएं सभी मिलकर व्यक्तित्व को अपने अनुकूल तथा पूर्व निश्चित ढाँचे में ढालने का जबरन प्रयास करते हैं। जिससे व्यक्तित्व में विकृति की संभावना बढ़ जाती है।

शिक्षक के रूप में बालक के व्यक्तित्व के विकास में योगदान

एक शिक्षक के रूप में हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम यह जानें कि बालक के रूप में हमें जो बीज मिला है वह अनोखा है, अद्वितीय हैं। हमें उसे वह होने की सुविधा देनी हैं जो उसकी अंतर्निहित संभावना है। हमें उसे मार्गदर्शन देना है। चूंकि उसकी संभावना ईश्वर प्रदत्त है अतः हम बालक पर ऐसा कोई दबाव न बनावें जिससे उसकी ईश्वर प्रदत्त संभावना के विकास में कोई बाधा उत्पन्न न हो।

हम यह याद रखें कि हम बालक के विकास में उसके सहायक हैं, उसयके भाग्य विधाता या भाग्य निर्माता नहीं। भाग्य निर्माता तो कोई अलग ही शक्ति है जिसे आप ईश्वर कह सकते हैं, प्रकृति कह सकते हैं। हमें तो बस-

1. बालक को विकसने में अवसर देना है।
2. प्राप्त परिवेश में उसे सकारात्मक रूप से उभरने में मदद करनी है।
3. हमें उसे सिखाना है कि वह परिस्थितियों और व्यक्तियों के नकारात्मक पक्ष को नहीं, सकारात्मक पक्ष को देखे।
4. हमें उसे दृढ़ संकल्प शक्ति से युक्त होना सिखाना है।
5. हमें उसे वह होने का पूर्ण अवसर और परिस्थितियां देनी है जो होने के लिए वह इस धरा पर आया है तभी वह परिपूर्ण व्यक्तिवान होगा। तभी उसका व्यक्तित्व सम्पूर्ण होगा। गुलाब गुलाब हो कर ही, चमेली चमेली होकर ही पूर्ण हो सकता है। क्योंकि यही उनका मूल व्यक्तित्व है। यही उसका मूल स्वभाव हे। श्रीमद्भगवतगीता कहती हैः

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।।

यहाँ 'धर्म' तथा स्वभाव शब्द का अर्थ हिन्दू, बौध धर्म इत्यादि धर्म नहीं। स्वभाव का अर्थ आदत नहीं, वरन् 'अपने होने' का गुण है।

आधुनिक जगत के महान चिंतक आचार्य रजनीश कहते हैं कि- ''जीवन किसी का अनुकरण नहीं वरन् स्वयं का उद्घाटन है।''

पुनश्च- ''व्यक्तित्व का विकास किसी दूसरे जैसा होने की प्रक्रिया नही, वरन् अपने जैसा होने का आयोजन है।''

व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा का योगदान- हमारी सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य यही है तथा होना चाहिए कि हम बालक को वह होने में सहयोग करें जो उसके लिए स्वाभाविक है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''शिक्षा का कार्य हमारी अंतर्निहित क्षमताओं का उद्घाटन है।'' उदाहरण देते हुए वे कहते हैं कि बालक उस काँच के संदूक की तरह है जिसमें एक दीपक जल रहा हैं पर संदूक की दीवारों पर धुआँ और धूल जमा है। शिक्षक तथा शिक्षा कार्य उस धूल तथा धुँए को हटाना है। ज्ञान का प्रकाश तो बालक में पूर्व में विद्यमान है ही। अतः शिक्षा बालक की अन्तर्निहित क्षमताओं को पूर्णतः विकसित करने हेतु वातावरण परिस्थितियों निर्मित करे। ''बालक का निर्माण'' करने झूठा वहम नहीं पाले। यह शिक्षा का, शिक्षक का झूठा वहम बालक के विकास में बाधा पैदा करेगा। शिक्षा तथा शिक्षक बालक को विकसने के लिए इस तरह से सहायता कर सकते हैंः-

1. बालक का प्रकृति से जुड़ाव बनाएंः- बालक को पुस्तकीय ज्ञान देने के साथ साथ प्रकृति के साथ उसका जुड़ाव पैदा कीजिए। पेड़, पौधे, नदी, नाले, कीट, पतंगे, पशु, पक्षी आदि के साथ बालक का सीध सम्पर्क बालक को संवेदनशील, करुणापूर्ण तथा सृजनात्मक बनाएगा। उसमें प्रकृति को संरक्षित करने की प्रवृत्ति पैदा होगी। उसमें विस्मय का भाव जागृत होगा। परमात्मशक्ति के प्रति अनुग्रह का भाव उसमें उपजेगा।

2. कार्य की गरिमा समझाएंः- बालक में श्रम, कार्य के प्रति सम्मान का भाव विकसित करें। उसे सिखाएं कि कोई कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता। ''हम क्या करते हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं, वरन् हम कितनी गरिमा से कार्य को करते हैं यह महत्वपूर्ण है।'' हमारे कार्य का मूल्य कार्य को करने के प्रति हमारे भाव से निर्धारित होता है। कबीर ने कपड़े बुने, रैदास ने जूते गांठे पर उन्होंने साधारण से दिखने वाले कामों को इतना मनोयोग से किया कि वे ईश्वरत्व को उपलब्ध हो गए।

3. आनन्दपूर्ण जीवन के प्रति प्रेरित करें:- बालक को सिखाएं कि धन, पद, प्रतिष्ठा, तमगे, डिग्रियां इत्यादि भौतिक उपलब्धियां पाना महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्वपूर्ण है ''आनन्दपूर्ण ढंग से जीवन जीना।'' जीवन अधिक मूल्यवान है। भौतिक उपलब्धियाँ आपको सुख दे सकती हैं, पर आनन्द आपको सही तरीके से, सही ढंग से जीवन जीने पर ही मिलेगा।

4. बालक को अनुग्रहपूर्ण बनाएं:- मानव मन जो नहीं है उसे पाने को दौड़ता है। जो उसके पास उपलब्ध है उसे नहीं देखता। हम बालक को शिक्षा के माध्यम से यह सिखाएं कि परमात्मा ने जो कुछ हमें दिया है जैसे स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिष्क, प्रेमपूर्ण माता-पिता, परिवार, घर, शिक्षा, अनुकूल परिस्थितियां बालक उनके प्रति अनुग्रहपूर्ण हो। वह परमात्मा को धन्यवाद दे। इससे बालक स्वयं को हमेशा अज्ञात शक्ति परमात्मा से प्रतिपल जुड़ा महसूस करेगा। उसके जीवन में आत्मिक संतुष्टि का भाव पैदा होगा। उसमें अभाव का, वंचित होने का, हीन होने का भाव कभी पैदा नहीं होगा।

5. महत्वाकांक्षा से दूर रखें:- हमारी शिक्षा बालक को यह तो सिखाए कि वह अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करे तथा अपने जीवन का रास्ता खुद चुने पर हम बालक को महत्वाकांक्षा की अंधी दौड़, विरासत में न दें। हम सभी बालकों को डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. अफसर बनने की महत्वाकांक्षा न दें। क्योंकि सभी बालक इसके लिए नहीं बने हैं। अगर एक अन्तर्मुखी बालक को हम प्रशासनिक अधिकारी जैसे पद पर पहुँचाने का प्रयास कर, सफलता प्राप्त भी कर लेते है तो वह पद उस बालक के लिए तकलीफ देह होगा। उसका अन्तर्मुखी व्यक्तित्व कुंठित होगा। वह जीवन

का आनन्द, सहजता खो देगा। उसका व्यक्तित्व अलग कार्यों के लिए है। हमें उसे उसके व्यक्तित्व के अनुरूप कार्य चुनने के लिए उसे प्रेरित करना चाहिए यथा साहित्य सृजन, कलात्मक सृजन, शोध इत्यादि।

6. बालक की तुलना न करें:– हम दो बालकों के बीच कभी तुलना ना करें। यह तुलना बालक के व्यक्तित्व के विकास में अवरोध उत्पन्न करती है। हर बालक का अपना व्यक्तित्व है, अपने होने की अलग रीति–नीति है, अलग नियति है। हमें उसका सम्मान करना चाहिए। बालक की इस व्यक्तिगत विशिष्टता का सम्मान वस्तुतः ईश्वर की सृजन–क्षमता का सम्मान है।

7. सृजन की प्रेरणा दें:– बालक को हमें कला, साहित्य, संगीत, नृत्य आदि सृजनात्मकता से जोड़ने का प्रयास करना करना चाहिए। सृजनात्मकता व्यक्ति के दमित भावों के रेचने में सहायक होती है। धर्म, समाज, परिवार मनुष्य का अनुकूलन करते हैं। इस प्रक्रिया में मनुष्य हँसना चाहता हैं, हँस नहीं सकता, रोना चाहता है, रो नहीं सकता। गुस्सा दिखाना चाहता हैं क्रोधित नहीं हो सकता। विरोध करना चाहता है, विरोध प्रकट नहीं कर सकता क्योंकि ये सब समाज की विशिष्टता के विरुद्ध हैं। इन भावों के दमन से मनुष्य का व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। विकृत होने लगता है। ऐसे में संगीत, नृत्य, साहित्य सृजन आदि सृजनात्मक गतिविधियाँ व्यक्ति के दमित भावों को बाहर फेंकने में उसकी मदद करते हैं। सृजनात्मकता हमारे व्यक्तित्व को संतुलित बनाती है।

8. होशपूर्ण होना सिखाएं:– बालक को सिखाएं कि वह जो भी कृत्य कर रहा हैं उसे पूर्ण होश से, पूर्ण सजगता से करे। आदतवश, मशीनवत नहीं करे। दरअसल मानव मन अतीत तथा भविष्य के बीच घड़ी के पैंडुलम की तरह दौड़ता रहता है। वर्तमान में रहना उसकी आदत नहीं। यह कारण है कि जीवन का हर कृत्य वह आदतवश, अभ्यासवश करता है और जीवन में वर्तमान के आनन्द से चूक जाता है। शिक्षक के रूप में हम बालक को होशपूर्ण रहना सिखाएं ताकि वह जीवन के हर पल का आनन्द ले सके।

9. बालक मांग छोड़े:– हमारी शिक्षा बालक को यह सिखाएं कि हमें हमारा दायित्व पूर्ण मनोयोगे से निभाना है। बदले में कोई मांग नहीं पालनी। हमारी मांग हमें तनावग्रस्त, कुंठित तथा दुखी बनाती है। बालक अगर मांग छोड़ पाया तो उसके व्यक्तित्व में निश्चित ही एक गरिमा का प्रवेश होगा।

निष्कर्ष:–अगर हम बालक का सर्वांगीण विकास करना चाहते हैं, अगर हम चाहते हैं कि यह दुनिया अधिक प्रेमपूर्ण, संवेदनशील तथा करुणावान हो, अगर हम चाहते हैं कि यह धरती, यह दुनिया जीने योग्य, अति सुन्दर हो तो हमें मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रामाणिक बनाने की दिशा में प्रयास करना होगा। यह कार्य शिक्षा तथा शिक्षक अधिक तरह से कर सकते हैं। शिक्षा तथा शिक्षक को स्वयं संवेदनशील एवं व्यक्तिवान होना होगा तथा यह समझना होगा कि बालक एक निर्जीव पिंड नहीं है जिस पर चाहे जैसे प्रयोग किए जाएं। ना ही बालक ऐसा कच्चा माल है जिसे तोड़–मरोड़ कर, काँट छाँट कर, घाल–मेल करके कारखाने में बने ढेर सारे प्रोडक्ट्स के रूप में तैयार किया जाए। शिक्षक को यह जानना होगा कि बालक एक सजीव, अनन्त संभावना से परिपूर्ण, जागृत, कोमल बीज है। जिसकी संभावना के विकास हेतु सहयोगात्मक परिस्थितियां तथा वातावरण हमें बनाना होगा। कार्य कठिन है, बहुत विवेक, समझ तथा समर्पण की मांग करता है। अगर हमें इस धरती को रहने योग्य सुन्दर बनाना है तो इतनी कीमत तो हमें चुकानी होगी। तभी एक संतुलित व्यक्तित्व धरती पर जन्मेगा। जो धन भी कमाएगा। कला तथा विज्ञान के विकास में भी रुचि लेगा। आनन्दपूर्ण तथा समृद्धिपूर्ण जीवन भी जिएगा, साथ ही परमात्म शक्ति से भी जुड़ा रहेगा। ऐसा व्यक्ति धर्म–जाति–संप्रदायों तथा अतिवादियों के मनुष्यता विरोधी अभियान को समझ सकेगा। तब कोई भी जबरन ब्रेन वॉश कर उसके हाथ में पिस्तौल, चाकू मनुष्यता के विरोध में नहीं दे सकेगा। क्योंकि उसके पास विवेक की आंखें होगी। उसका व्यक्तित्व निराशा, कुंठा, तनावों, से मुक्त होगा। उसका प्रेमल, संवेदनशील, करुणापूर्ण व्यक्तित्व इस धरती पर हर तरफ आनन्द के फूल खिलाएगा।

व्याख्याता अंग्रेजी
रा.बा.उ.मा.वि. लक्ष्मीनाथ घाटी, बीकानेर
मो. 9414035688

बच्चे : देश का भविष्य

❒ भँवर सिंह

देश के बच्चे ही भविष्य के नागरिक होते हैं। बच्चे जितने स्वस्थ और सामाजिक व मानसिक रूप से विकसित होंगे वह देश उतना ही सशक्त और यशस्वी बनेगा। इसलिए इनके महत्व को ध्यान में रखकर ही संविधान में यह कहा गया है कि सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि बच्चों को विकास के लिए पर्याप्त सुविधाएँ और अवसर प्रदान किए जाएँ जिससे उन्हें स्वस्थ वातावरण मुहैया कराया जा सके तथा उनको आजादी एवं पूर्ण गरिमा के साथ रहने का अवसर दिया जाए, साथ ही बच्चों को किसी भी प्रकार के शोषण से बचाया जाए। नई राष्ट्रीय नीति में भी इसका प्रावधान किया गया है। बच्चों के लिए पूरी सेवाएँ उपलब्ध करवाई जावे। बच्चे के जन्म होने से पहले और बाद में दोनों स्थितियों में उसके शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास की पूरी सुरक्षा सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई जावे। इसके अतिरिक्त सरकार बच्चों के संतुलित विकास के लिए उपयुक्त समय तक सेवाएं प्रदान करें जिससे बच्चों को बेहतर वातावरण मिल सके। इन नीतियों की पालना के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग की स्थापना की गई जिसके तहत बच्चों और महिलाओं के लिए जरूरत की सारी सुविधाएँ प्रदान की गई इसे मानव संसाधन मंत्रालय के तहत एक विशेष विभाग के रूप में स्वीकृत किया गया। दिसम्बर 1992 में भारत ने बच्चों के अधिकार के तहत बिना किसी भेदभाव के प्राथमिकता के आधार पर उनकी सुरक्षा और उन्नति के लिए खासकर बच्चों के हितों को ध्यान में रखकर विशेष सुविधाएँ देने का निर्णय लिया। बच्चों की सुरक्षा के लिए सभी प्रकार के कदम

उठाने सुनिश्चित करे और इसके लिए कानूनी दायित्व के तहत सभी प्रकार के कानूनी तथा प्रशासनिक कदम उठाए जाएं जिससे इनका सर्वांगीण विकास हो सके।

भारत की दसवीं पंचवर्षीय योजना में भी बच्चों के विकास और उनके अधिकारों को ध्यान में रखते हुए कई ऐसी योजनाएँ बनाई गई और उन योजनाओं में सरकार की कानूनी जिम्मेदारी के तहत देश के प्रत्येक बच्चे को विकसित होने के कारण अधिकार देने और माहौल तैयार करने को प्राथमिकता दी गई। राजस्थान सरकार भी अपने प्रदेश के बच्चों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश में चाहे बच्चे कहीं भी हो, उन्हें आगे बढ़ने के लिए समान अवसर मुहैया कराए जा सकें। इसलिए राज्य सरकार ने अपने प्रदेश के सभी बच्चों के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध करवाकर बेहतर सेवाएँ प्रदान करने की नीति बनाई है जिसके तहत शिक्षा, स्वास्थ्य, पौष्टिकता, स्वच्छ जल जैसी सुविधाएँ समान रूप से उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है। राज्य सरकार ने खासकर लड़कियों के प्रति भेदभाव की धारणा को दूर करते हुए उनकी मर्यादा और उनके व्यक्तिगत विकास के लिए कई कार्यक्रम प्रारम्भ करने का प्रयास किया है। खासकर इस प्रदेश में लड़कियों को लेकर जो सामाजिक दृष्टिकोण है उसमें बदलाव लाने की कोशिश की जा रही हैं। उन बालिकाओं को जो ग्रामीण क्षेत्रों में हैं और जो भेदभाव की सबसे अधिक शिकार होती हैं उन्हें समान अवसर उपलब्ध कराने पर जोर दिया जा रहा है। राज्य सरकार ने एक उच्चस्तरीय समिति का गठन कर दिया है जो भेदभाव या बच्चों के अधिकारों के उल्लंघन होने जैसे मामले पर नजर रखता है जिससे लड़का एवं लड़की का भेद समाप्त हो सके।

शारीरिक शिक्षक
रा.मा.वि., सांवलोदा लाडखानी (सीकर)
मो. 9414901203

विश्वास वह शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश लाया जा सकता है।

राष्ट्र की आत्मा है-सूचना प्रौद्योगिकी

❐ सरदार सिंह चारण

विश्व की नवीनतम क्रांति है सूचना-प्रौद्योगिकी यानी की ई-टेक्नोलॉजी 21 वीं सदी का सबसे प्रभावशाली तंत्र जिसके बगैर एक पल भी नहीं चल सकता। पूरा का पूरा सिस्टम इसके बगैर धराशायी हो जाता है। इसने पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने का बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया है। आज के इस युग में सूचना प्रौद्यौगिकी को राष्ट्र की आत्मा कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, सूचना प्रौद्योगिकी ने देश भर में आमूलचूल बदलाव लाया है। इस बदलाव ने देशभर में बदलाव के नए युग का सूत्रपात किया है। यह हम सभी के लिए बड़े ही गौरव की बात है कि हमारे देश ने सूचना प्रौद्यौगिकी के क्षेत्र में बहुत प्रगति कर ली है। सूचना प्रौद्यौगिकी राष्ट्रीय एकता में योगदान देने के साथ ही प्रशासन, बैंकिंग, व्यापार, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज सेवा जैसे सैकड़ों क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय एकता के योगदान में सूचना प्रौद्योगिकी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

आज राज्यों के बीच तारों का जाल बिछाए बिना, अंतरिक्ष को बाँधे बिना देश के विकास की कल्पना करना लगभग असम्भव व बेमानी सा हो गया है। इस अंतरिक्ष और भूमण्डल को पल भर में तरंगित कर देनेवाली यह तथा राष्ट्र गाँव की अवधारणा को साकार कर देनेवाली प्रौद्योगिकी में सूचना प्रौद्योगिकी की ही विशेष भूमिका रही है। राष्ट्रीय एकता में सूचना प्रौद्यौगिकी के योगदान को समझने से पहले यहाँ यह समझना अति आवश्यक हो गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी है क्या?

''सूचना प्रौद्योगिकी विज्ञान की वह शाखा है जिसमें इलेक्ट्रॉनिक यंत्र मुख्यत कम्प्यूटर का उपयोग सूचना संग्रहण, विश्लेषण एवं सूचनाओं का आदान प्रदान के लिए किया जाता है, कम्प्यूटर नेटवर्क से बिना डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट विश्वव्यापी वैब इलेक्ट्रॉनिक प्रशासन, इलेक्ट्रॉनिक व्यापार, दूर चिकित्सा या टेलि-मेडिसीन इत्यादि सूचना प्रौद्योगिकी के ही भाग है।

आज के युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के बदलते आयामों में राष्ट्रीय एकता में इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता, आज सूचना प्रौद्योगिकी ने समूचे राष्ट्र को एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है। परन्तु आज हमें सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं पर गौर करने की आवश्यकता है। उदाहरण के तौर पर कुछ वर्ष पूर्व में जब देश का पूर्वोत्तर हिस्सा हिंसा की चपेट में था, तब देश के दक्षिण हिस्से के बाजार भड़काउ अफवाहों से भरे पड़े थे। जिसके कारण भारी संख्या में लोगों (पूर्वोत्तर राज्यों के) का दक्षिण भारत से पूर्वोत्तर भारत की तरफ पलायन जारी रहा।

राष्ट्र के दक्षिणी हिस्से में जो अफवाहों के दौर चले वे मोबाइल फोन, एसएमएस, फेसबुक, ट्वीटर व अन्य नेटवर्क साइड के जरिए ही संभव हो पाये, जो सूचना प्रौद्योगिकी का ही अंग है। परन्तु ऐसे कठिन समय में जब देश गुजर रहा था। तब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, रेडियो, इन्टरनेट के कारण ही घर-घर व आमजन तक सही व सटीक जानकारी पहुँची, जिससे अफवाहों पर नियंत्रण लगा।

उपर्युक्त उदाहरण से एक बात स्पष्ट है कि आज यह अति आवश्यक हो गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाए। यहाँ महत्वपूर्ण यह है कि हम सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग किस तरीके से कर रहे हैं, क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी नायक व खलनायक दोनों की भूमिका निभा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी राष्ट्रीय एकता में सहायक भी हो सकती है और बाधक भी हो सकती है।

आज सोशल नेटवर्क साइड, फेसबुक, ट्वीटर,ऑरकुट, यू-ट्यूब जिन्हें तीसरी दुनिया की संज्ञा दी जाती है। किसी भी देश की सरकारें गिराने व बनाने का दम रखती हैं। (यहाँ इस बात को दोहराने की आवश्यकता नही है कि ये सभी सूचना प्रौद्योगिकी का ही अंग है।) अरब के देशों

की 'चमेली क्रान्ति' जिसमें ट्यूनीशिया, मिश्र आदि देश सम्मिलित है को सफल बनाने एवं लोगों को एकता के सूत्र में बाँधे रखने का कार्य सोशल नेटवर्क साइड के माध्यम से सफल रहा। चमेली क्रान्ति की सफलता में सोशल नेटवर्क साइड के अभूतपूर्व योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि सूचना प्रौद्योगिकी का सकारात्मक एवं सही ढंग से प्रयोग किया जाए। यदि यह पूरे राष्ट्र को सूत्र में पिरो के रख सकती है तो यह राष्ट्र को अनेक टुकड़ों में बाँट भी सकती है। सूचना प्रौद्योगिकी लोगों के बीच अमन भाईचारा, एकता और राष्ट्रीयता की भावना फैलाने का सरल, सुगम एवं सशक्त माध्यम है। जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एक साथ जोड़े रख सकती है।

बीसवीं शताब्दी में सूचना प्रौद्योगिकी मानव जीवन के परिवर्तन एवं उसकी गुणवत्ता में सुधार की मुख्य साधक रही है और भारत भी इस असाधारण क्रान्ति में सहभागी रहा है आजादी के समय देश में केवल 83000 टेलीफोन कनेक्शन थे। परन्तु आज भारत का दूरसंचार नेटवर्क करीब 240 मिलियन टेलीफोन के साथ विश्व के बड़े नेटवर्कों में से एक है। आज मिट्टी के कच्चे घरों, झोंपड़ियों में भी मोबाइल की घंटियां बजती है। आज ऐसा कोई परिवार नहीं है, जहाँ संचार सुविधाएं मौजूद नहीं है। जिन लोगों के पास लैंडलाइन नहीं पहुँचा है, उनके मोबाइल व दूरदर्शन पहुँच गए है। सन 2011 तक 1 करोड़ 12 लाख ग्राहकों तक इंटरनेट ब्रॉडबैंड की सुविधा उपलब्ध थी। सरकार ने 2017 तक 17 करोड़ 80 लाख ग्राहकों और 2020 तक 60 करोड़ लोगों को इन्टरनेट ब्रॉडबैंड की सुविधा देने का लक्ष्य रखा है।

ग्रामीण विकास में सूचना प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जिसमें कृषि, मौसम सलाह सेवा, ई-चौपाल, किसान कॉल-सेन्टर, रूरल नॉलेज सेन्टर, किसान चैनल योजना, कॉमन सर्विसेज सेन्टर आदि मुख्य रूप से शामिल है।

आज सरकार ने देश के सभी जिला मुख्यालयों को इन्टरनेट सेवा से जोड़ दिया है। लगभग सभी सरकारी कार्यों को ऑनलाइन कर दिया गया है। सूचना के क्षेत्र के महत्व को महसूस करते हुए भारत सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर विकास के लिए एक राष्ट्रीय कार्यबल (टॉस्कफोर्स) गठित किया है। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा नागरिकों को कम लागत पर समस्त, निरंतर, विश्वसनीय, सुलभ, पारदर्शी एवं उत्तरदायित्वपूर्वक सामान्य सेवाएं उपलब्ध करवाकर प्रशासन की कार्यप्रणाली को आमूलचूल बदलने के प्रयास किये जा रहे है। संक्षेप में भारत में न केवल वैज्ञानिक स्तर पर बल्कि वाणिज्यिक, प्रशासनिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर भी सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रसार होता जा रहा है।

भारत सरकार ने देश के हर पहलू के विकास को तेजी से बढ़ाने की इच्छाशक्ति को प्रकट करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रान्ति करने के संकल्प के साथ विश्व में एक संचार महाशक्ति बनने का भी संकल्प व्यक्त किया है तथा उसके लिए नीतियाँ और कार्य विधियाँ निर्धारित की हैं जो निम्नानुसार है-

1. सूचना-संरचनात्मक चालन अर्थात् फाइबर आप्टिक नेटवर्क, सेटकॉम नेटवर्क और वायरलैस नेटवर्क के व्यापक विस्तार द्वारा विश्व स्तरीय सूचना संरचना ढाँचे की स्थापना में तेजी लाकर इंटरनेट, एक्स्ट्रानेट और इट्रानेट का त्वरित विकास किया जाएगा।
2. नागरिकों में सूचना प्रौद्योगिकी की चेतना का प्रसार करना, सरकारी नेटवर्क बनाकर देश का आर्थिक विकास करना एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रचार-प्रसार करना।

आज भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के जरिए इस विशाल देश को आपस में जोड़े रखना व सूचनाओं का त्वरित प्रसार करना सम्भव हो पा रहा है अन्यथा इसके अभाव में इस विशाल आबादी वाले देश की शिक्षा, परिवहन सेवा, व्यापार, सरकारी कार्य का ढाँचा चरमरा कर टूट जाता, आमजन की सुविधा के लिए ई-मित्र इत्यादि नहीं हो तो देश में व्याप्त अवस्था की शायद कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

सूचना प्रौद्योगिकी ने देश की शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया है। ऐज्यूसेट, यू-ट्यूब, इन्टरनेट, ई-बुक के द्वारा शिक्षा एवं शिक्षण आम विद्यार्थियों तक बड़े आराम से पहुँच रहा है गाँव ढाणियों में बैठा छात्र भी उच्च स्तरीय ज्ञान को उन दुर्गम स्थानों पर बड़े आराम से प्राप्त कर रहा है जिनकी दो दशक पहले कल्पना कना भी बेमानी होगी।

आज सूचना प्रौद्योगिकी आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक विकास के लिए भी एक प्रभावी तकनीक है। बल्कि यह राष्ट्रीय एकता के लिए भी अति आवश्यक है। सूचना प्रौद्योगिकी लोगों को आपस में जोड़ने का सरल व सुगम माध्यम है। जो लोगों में राष्ट्रीयता, एकता व बंधुत्व फैलाने में सहायक है। समय रहते जिस देश ने इस क्षेत्र में सर्वाधिक नवीन आविष्कार कर ज्ञान बढ़ा लिया। सर्वाधिक इस क्षेत्र में विकास कर लिया। सटीक दोहन कर लिया। आने वाले भविष्य में वो ही राष्ट्र विश्व की सर्वोच्च महाशक्ति होगा व ब्रह्माण्ड उसकी मुट्ठी में होगा। यह आज का सत्य व भविष्य की कोख का कटु सत्य होगा। आओ हम सब मिलकर इस की शक्ति को पहचानें व समय रहते इस ओर अपना कदम बढ़ा दें तभी हमारा भविष्य हम सुरक्षित रख सकेंगे।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., साण्डा,
सायला, जालोर
मो. 9001165745

लेखा स्तम्भ

प्रसूति एवं पितृत्व अवकाश

❐ सुभाष माचरा

1. प्रसूति अवकाश:-(Maternity Leave) :- एक महिला सरकारी कर्मचारी को सम्पूर्ण सेवा अवधि में दो बार तथा जीवित बच्चा न हो, तो तीसरी बार प्रसूति अवकाश स्वीकृत किया जा सकता है। यह अवकाश चिकित्सा प्रमाण पत्र के आधार पर प्रारम्भ होने की तिथि से 180 दिन की अवधि तक पूर्ण वेतन पर स्वीकृत किया जाएगा। वित्त विभाग के आदेश क्रमांक-F.1(43)FD/(Gr.2)/83 (RSR 14/08), Dated: 11-10-08 द्वारा प्रसूति अवकाश हेतु देय समयावधि 135 दिवस से बढ़ाकर 180 दिवस की गई।

टिप्पणी: उपर्युक्त नियम-103 के अन्तर्गत प्रसूति अवकाश निम्नांकित शर्तों पर गर्भपात (Abortion) या गर्भ-स्राव (Miscarriage) के मामले में भी स्वीकृत किया जा सकता है :-

(i) अवकाश 6 सप्ताह से अधिक का नहीं हो।

(ii) अवकाश प्रार्थना पत्र के साथ किसी प्राधिकृत चिकित्सा अधिकारी का प्रमाण-पत्र संलग्न होना चाहिए।

राज्य सरकार के निर्देश क्रमांक : प.5 (34) प्राशि/2010, दिनांकः 9.8.10 [वित्त (नियम) विभाग की आई.डी. संख्याः 101002622, दिनांक 30.07.2010 द्वारा प्रदत्त] स्वीकृति के अनुसरण में प्रदत्त द्वारा स्पष्ट किया गया है कि 'राजस्थान सेवा नियम-1951' के नियम-103 के नोट में अंकितानुसार एक महिला राज्य कर्मचारी की गर्भपात या गर्भस्राव की स्थिति में दिये 6 सप्ताह का प्रसूति अवकाश नियम-103 में अंकित शर्तों के अध्यधीन अतिरिक्त रूप से देय है।

निर्णय संख्या 01 :- इस नियम के अन्तर्गत प्रसूति अवकाश अस्थाई महिला कर्मचारी को भी मिलेगा। वित्त (नियम) विभाग के आदेश क्रमांक : F.1(6)FD(Rules)/ 2007 (RSR-15/09), Dated : 19-6-09 द्वारा संविदा आधार पर नियुक्त महिला कर्मचारियों, जिनकी नियुक्ति वित्त विभाग के अनुमोदनोपरान्त हुई हो, को भी प्रसूति अवकाश का पूर्ण लाभ प्रदान किया गया है।

इसी प्रकार 'राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था नियम-1993' के अध्याय-6 में गैर सरकारी शैक्षिक संस्थाओं में कार्यरत कर्मचारियों हेतु वर्णित विभिन्न प्रकार की अवकाश सुविधाओं के अन्तर्गत नियम-52 के तहत संस्था की महिला कर्मचारियों को प्रसूति अवकाश का पूर्ण लाभ देय है।

निर्णय संख्या 02:- प्रसूति अवकाश अधूरे गर्भपात के मामले में नहीं मिलेगा।

स्पष्टीकरण :- गर्भपात (Abortion) शब्द से गर्भपात की आशंका (Threatened Abortion) सम्मिलित नहीं माना जाएगा। फलस्वरूप शंका वाले गर्भपात में प्रसूति अवकाश स्वीकार नहीं किया जाएगा।

2. पितृत्व अवकाश (Paternity Leave):- 'राजस्थान सेवा नियम-1951' के नियम-103 'ए' के तहत एक पुरुष राज्य कर्मचारी को, जिसके 2 से कम जीवित सन्तान हो, अपनी सम्पूर्ण सेवा अवधि में पत्नी की गर्भावस्था/प्रसव के दौरान एवं बाद में (During Confinement of his wife) देखभाल करने हेतु अर्थात् प्रसव से 15 दिवस पूर्व एवं प्रसव के तीन माह के भीतर 15 दिवस का पितृत्व अवकाश (Paternity Leave) देय होगा। यह अवकाश उसकी सम्पूर्ण सेवा अवधि में अधिकतम दो बार स्वीकृत किया जा सकता है। इस अवकाश का निर्धारित अवधि में उपयोग नहीं करने पर लेप्स हो जायेगा। उक्त अवकाश गर्भपात या गर्भस्राव में देय नहीं है।

3. दत्तक ग्रहण अवकाश (Child Adoption Leave):- 'राजस्थान सेवा नियम-1951' के नियम-103 'बी' के तहत दो से कम जीवित संतान होने पर एक महिला राज्य कर्मचारी के एक वर्ष से कम उम्र के बच्चे को वैधानिक रूप से दत्तक ग्रहण करने की दिनांक से 180 दिवस की अवधिक का दत्तक ग्रहण अवकाश स्वीकृत किया जा सकेगा।

4. अवकाश काल में देय वेतन:- उपर्युक्त वर्णित समस्त अवकाशों (प्रसूति/पितृत्व/गर्भपात/गर्भस्राव/दत्तक ग्रहण अवकाश) में कर्मचारी को अवकाश काल में सेवा नियम-97(1) के अनुसार अवकाश पर प्रस्थान करने से ठीक पूर्व आहरित वेतन के समान अवकाश हेतु स्वीकृत अवधि का पूर्ण वेतन देय होगा।

5. अवकाश की प्रविष्टि:- उपर्युक्त वर्णित समस्त अवकाशों (प्रसूति/पितृत्व/गर्भपात/गर्भस्राव/दत्तक ग्रहण अवकाश) को कर्मचारी के सेवाभिलेख में अवकाश खाते में डेबिट नहीं किया जाएगा, परन्तु सेवा पुस्तिका में पृथक् से इन्द्राज किया जाएगा।

6. अन्य प्रकार के अवकाशों के साथ देयता :- वित्त विभाग के आदेश क्रमांकः- एफ.1(5)वित्त/नियम/96, दिनांकः- 26.2.02 के अनुसार प्रसूति अवकाश किसी अन्य प्रकार के अवकाश के साथ भी (आकस्मिक अवकाश के अलावा) लिया जा सकता है।

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी (मा.)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414000470

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

दौसा : देवनगरी

❒ गणपत लाल शर्मा

राजस्थान की राजधानी जयपुर से 54 कि.मी. पूर्व में स्थित दौसा जिला मुख्यालय एन.एच - 11 पर स्थित है।

अंग्रेज पुरातत्ववेत्ता कार्लाईल के अनुसार दौसा प्रागैतिहासिक काल के मानवों का भी निवास स्थान रहा है, जबकि भारतीय पुरातत्ववेत्ता दयाराम साहनी इसका अस्तित्व उत्तर मध्य काल के समय से मानते हैं।

दादू पंथ के अनुयायी संत सुंदरदास की जन्मस्थली दौसा है। वे समाज सुधारक, आध्यात्मिक साधक एवं कवि थे। इन्होंने ज्ञान समुद्र सुन्दर विलास सहित 48 ग्रंथों की रचना की। उनके दर्शन में ब्रह्म के प्रति सहज प्रेम व समर्पण का आग्रह है। पंथ की संकीर्ण सीमा का अतिक्रमण कर वैष्णव, शैव, शाक्त मतों का अध्ययन किया, काशी के पंडितों के भी वे अत्यंत प्रिय थे। दौसा जिले की अन्य उल्लेखनीय हस्तियों में रामकरण जोशी, सोहन लाल बंशीवाल, पं. नवलकिशोर शर्मा, बी.एन. जोशी, टीकाराम पालीवाल शामिल हैं।

प्रारंभ में दौसा गुज्जर प्रतिहार वंश के अधीन था लेकिन आपसी फूट और घटती शक्ति के कारण 1037 ई. मे कच्छवा राजपूत दुलेह राय ने इनसे राज्य छीन लिया। दुलेह राय ने लालसोट के सालर सिंह की बेटी कुमकुम से विवाह किया जिसमें दौसा का आधा किला दहेज में मिला, शेष आधा किला जो बरगुज्जर के पास था उसे भी दुलेह राय ने छीन लिया। इसके बाद उसने दौसा को धुंधार (ढूंढ़ाड़) प्रदेश की राजधानी बनाया। समुद्र तल से करीब 1645 फीट ऊँचाई पर स्थित दौसा का किला 4 कि.मी. परिधि मे फैला है। यह किला सूप की आकृति लिए हुए है। 1822 ई. में आमेर नरेश महासिंह की मृत्यु के बाद विधवा रानी अपने अल्पवयस्क पुत्र जयसिंह को लेकर अनेक वर्षो तक यहाँ रही। इस किले में प्रवेश के दो दरवाजे हैं हाथी पोल दरवाजा और मोरी दरवाजा। किले के भीतर प्रांगण में रामचंद्र जी और दुर्गा मंदिर के अतिरिक्त जैन मंदिर और मस्जिद भी बनी हुई है जो दौसा के शासकों की धार्मिक सहिष्णुता का उदाहरण है।

दौसा जिला मुख्यालय पर पाँच शिवलिंग हैं जिन्हें गुप्तेश्वर, सहजनाथ, बैजनाथ, सोमनाथ व नीलकण्ठ नाम से जाना जाता है। ये उत्तर मध्य काल के माने जाते हैं। नीलकंठ महादेव का मंदिर देवगिरी पहाड़ी पर स्थित है। देवगिरी पहाड़ी की तलहटी में बसा होने के कारण दौसा को देवनगरी नाम से भी जानते हैं।

संत दादूदयाल का स्मृति स्थल गेटोलाव धाम के नाम से प्रसिद्ध है। दौसा शहर में ही हजरत ख्वाजा शेख जमाल शाह की मजार भी स्थित है।

दौसा के पास स्थित भांडारेज कस्बा पहले भद्रावती शहर के रूप में जाना जाता था। यहाँ भंडान माता का मंदिर है तथा किला व बावड़ी दर्शनीय हैं। इसका निर्माण कुम्भाणी शासकों द्वारा किया गया। इस शहर का वर्णन महाभारत में भी आता है। भांडारेज के जैसी बाबड़ी आलूदा व आभानेरी में भी बनी हुई है।

दौसा की खादी प्रसिद्ध है। आजादी के बाद लाल किले पर फहराया गया प्रथम तिरंगा ध्वज यहीं तैयार हुआ था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी दो खादी महिला कार्यकर्त्ताओं की चर्चा की जो दौसा की ही हैं।

लालसोट तहसील में पपलाज माता का मंदिर पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ का हेला ख्याल प्रसिद्ध है जिसमें गणगौर पर तीन दिन तक अनवरत काव्य रचनाओं का गायन होता है जिसमें राजनैतिक, सामाजिक, पौराणिक विषय शामिल होते। हैं। इसका सीधा प्रसारण दिखाने के लिए पूरा मीडिया जगत उपस्थित रहता है।

सिकराय तहसील का सिकंदरा ग्राम पत्थर नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ का तराशा हुआ पत्थर देश-विदेश में सराहा जाता है। पास में ही मेहंदीपुर बालाजी का प्रसिद्ध मंदिर है। विज्ञान के युग के बाबजूद भूत प्रेत जैसी समस्याओं के समाधान के लिए भारी संख्या में लोग यहाँ आते हैं। ऐसी तथाकथित दुष्ट आत्माओं को प्रेतराज सरकार के दरबार में सजा का ऐलान होता है और यह सजा कोतवाल साहब के यहाँ दी जाती है। मंदिर ट्रस्ट की ओर से अनेक सेवा कार्य जैसे विद्यालय, महाविद्यालय, चिकित्सालय, विकलांग आश्रम, सामूहिक विवाह आदि का संचालन होता है।

बसवा में राणा सांगा का चबूतरा स्थित है। ऐसा माना जाता है कि घायल अवस्था के दौरान उन्होंने कुछ समय यहाँ बिताया था। यहीं पर झाझी रामपुरा में प्राकृतिक कुंड बना है जिसमें गोमुख से पानी आता है, यहाँ अनेक छोटे-छोटे शिवलिंग है। पास में ही आभानेरी प्रसिद्ध ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल है। यहाँ हर्षद माता मंदिर है जिसका मंडप पेड़नुमा है जो 13 स्तम्भों पर विराजमान है। सुंदर अलंकृत चतुर्थ कोणीय स्तम्भ, केलों के पत्तों व तने के आकार के खंभे अपने आप में अनोखी शिल्पकला है। मंदिर के सामने स्थित चांद बावड़ी स्थापत्य कला में बेजोड़ है। आठवीं सदी की बेजोड़ प्रतिहार कला के प्रत्येक शिल्प में परिवर्तित गुप्तकालीन अथवा प्रांरभिक मध्यकालीन प्रामाणिकता पाई जाती है। बावड़ी के ऊपर एक सुरंग है जिसमें प्रवेश वर्जित है। यह सुरंग भांडारेज तक जाती है ऐसी धारणा है। यह बावड़ी 35 मी.चौडी. 35 मी.गहरी और चारों तरफ करीब 3500 सीढ़ियों से बनी है। इस बावड़ी को अंधेरे उजाले की बावड़ी भी कहते हैं। मंदिर व बावड़ी परिसर में हजारों छोटी-छोटी खंडित मूर्तियाँ है जिन्हें मुगल आक्रमण के दौरान नष्ट करने का प्रयास किया गया था। आभानेरी से करीब 8 कि.मी. दूर बांदीकुई शहर में अंग्रेजों के समय बनाया हुआ चर्च इसाईयों की आस्था का प्रमुख केंद्र है।

दौसा भरतपुर रोड़ पर स्थित महवा में कच्छवा वंश के बनाए हुए अनेक किले रामगढ़, गढ़ हिम्मत सिंह, गहनौली में स्थित हैं। पावटा में डोलची होली जो बल्लू शहीद की स्मृति में खेली जाती है, प्रसिद्ध है और इसे देखने दूर-दूर से लोग आते हैं।

राज्य सरकार द्वारा दौसा जिले का शुभंकर खरगोश निर्धारित किया गया है।

व.अ. (विज्ञान)
रा.उ.मा.वि., रेलवे स्टेशन, दौसा
मो. 9414622254

रपट

अर्थियन अवार्ड 2015

राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान ने लहराया परचम

❒ सरूपाराम माली

स्काउट गाइड प्रवृत्ति मात्र सह शैक्षिक गतिविधि नहीं है बल्कि शिक्षण का एक प्रभावी माध्यम भी है। इस दिशा में हमारे संगठन के लिए गर्व का विषय है कि विद्यार्थियों को उनके पाठ्यक्रम पर आधारित प्रोजेक्ट के माध्यम से स्वयं करके सीखने के लिए विप्रो फाउण्डेशन द्वारा संचालित अर्थियन कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर चयनित श्रेष्ठ 14 टीमों में राजस्थान से 3 स्काउट टीमों का चयन हुआ है जहाँ स्काउट्स ने ईको क्लब के माध्यम से उत्कृष्ट कार्य किये है।

1. आदर्श रा.उ.मा. वि. सरतरा जिला सिरोही– जल एवं सस्टेनेबिलिटी
2. आदर्श रा.उ.मा.वि. सरतरा, जिला सिरोही– जैवविविधता एवं सस्टेनेबिलिटी
3. रा.उ.प्रा.वि. गोडावास जिला बाड़मेर, जल एवं सस्टेनेबिलिटी

विद्यार्थियों एवं समाज में पर्यावरणीय जागरुकता पैदा करने के लिए भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा सत्र 2002 में नेशनल ग्रीन कोर योजना को प्रारम्भ किया गया। राजस्थान में सशक्त स्काउट गाइड संगठन को नोडल एजेंसी बनाकर 8250 ईको क्लब का गठन किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की मंशा के अनुरूप पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के बाहरी जीवन के ज्ञान से जोड़ने के लिए तकनीकी सहायता हेतु मंत्रालय की रिसोर्स एजेंसी पर्यावरण शिक्षण केन्द्र द्वारा 'पर्यावरण मित्र कार्यक्रम' तैयार किया गया जिसके ब्रांड एम्बेसेडर (पर्यावरण राष्ट्रदूत) पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम रहे। पर्यावरण मित्र कार्यक्रम में जल, जैव विविधता, ऊर्जा संरक्षण, कचरा प्रबंधन एवं संस्कृति व धरोहर पर आधारित गतिविधियाँ शामिल हैं। बेहतरीन कार्य करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विद्यालयों को पर्यावरण मित्र पुरस्कारों से भी नवाजा जाता है।

सत्र 2011 में विप्रो फाउण्डेशन द्वारा पर्यावरण शिक्षण केन्द्र और स्काउट गाइड संगठन के माध्यम से विद्यालयों में अर्थियन कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जिसके तहत विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम पर आधारित सस्टेनेबिलिटी पैदा करने का प्रयास किया जाता है। इस वर्ष कार्यक्रम के दो विषय रखे गये– जल और जैव विविधता। कार्यक्रम में दो प्रकार की गतिविधियाँ की जाती है। भाग 'अ' में विद्यालय परिसर एवं भाग 'ब' में परिसर से बाहर वैश्विक स्तर तक चिंतन।

जल एवं सस्टेनेबिलिटी पर आधारित गतिविधियाँ:– भाग 'अ' में स्काउट मास्टर सरूपाराम माली एवं पाँच विद्यार्थियों की टीम ने अन्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सहयोग से सम्पूर्ण विद्यालय परिसर का नाप सहित मानचित्र तैयार किया। साथ ही विद्यालय के जल स्रोतों की सम्पूर्ण जानकारी, विद्यालय में विभिन्न कार्यों में उपयोग होने वाले जल की दैनिक, मासिक एवं वार्षिक गणना करके प्राप्त आंकड़ों के सारांश को गणितीय विधि से प्रदर्शित किया, जल की शुद्धता जाँचने के लिए विभिन्न स्थानों से एकत्रित नमूनों को बैक्ट्रियोलोजिकल एवं केमिकल टेस्ट करके विज्ञान शिक्षक सहित मोहित पायल के सहयोग से परिणामी विश्लेषण तैयार किया। विद्यालय परिसर की वर्षा जल संग्रहण क्षमता की जानकारी जुटाकर उसे कहानी के रूप में प्रस्तुत किया। परिणामों को एक साथ रखने के लिए पाईचार्ट एवं दण्ड आरेख का प्रयोग किया। दो चयनात्मक गतिविधियों में विद्यार्थियों ने प्लास्टिक की व्यर्थ बोतलों से वर्षामापी यंत्र बनाकर पूरे सत्र की दिनांक वार वर्षा की मात्रा दर्ज की। गणना व विश्लेषण करने तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया को अभिनय के रूप में प्रस्तुत किया। पड़ौसी गाँवों के विद्यालयों में जाकर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से जानकारी जुटाकर तुलनात्मक विश्लेषण तैयार किया।

जल सम्बन्धी व्यापक समझ:– भाग 'ब' में विद्यालय परिसर से बाहर गाँव के गली मौहल्लों से लगाकर वैश्विक स्तर तक जल से जुड़े मुद्दों को समझने के लिए 'केस स्टडीज' करके निष्कर्ष ज्ञात किये गये जिसमें कृषि में लगने वाले आभासी पानी (vertual water) की गणना, ईको होली केम्पेन, जल स्वच्छता सर्वे, जल संग्रहण और भूमिगत जल स्तर का सम्बन्ध तथा पानी में मच्छर पनपने की प्रक्रिया जानने सम्बन्धी गतिविधियाँ शामिल है।

जैव विविधता को समझने का प्रयास:– जैव विविधता से जुड़ी सस्टेनेबिलिटी को समझने के लिए स्काउट मास्टर सहित पाँच विद्यार्थियों की टीम ने विद्यालय परिसर और वन विभाग की नर्सरी चारागाह क्षेत्र का व्यक्तिगत और सामूहिक स्तरों पर अवलोकन करके वहाँ उपस्थित पादपों एवं जीव जंतुओं की प्रजातियों के रंग रूप, आवास, भोजन एवं आत्मसुरक्षा के तरीकों और गतिविधियों का दस्तावेजीकरण किया गया।

पेड़–पौधों की पत्तियों के अनेक उपयोग एवं उनसे सम्बन्ध रखने वाले जीव–जंतुओं की जानकारी जुटाई। पत्तियों से खाद बनने की सम्पूर्ण प्रक्रिया का अध्ययन जिसमें बदलते पी.एच.मान, तापमान, वजन, रासायनिक एवं जैविकीय बदलावों का अध्ययन शामिल हैं।

सूक्ष्म जीवाणुओं से विशालकाय जीवों तक समस्त प्रजातियाँ अपने नियमति क्रियाकलापों से आसपास के वातावरण में प्रभाव डालकर कई प्राकृतिक चक्रों को पूर्ण करते हैं, ऐसे अनेक प्राकृतिक चक्रों को लिपिबद्ध करने का अनुभव लिया।

पाठ्यक्रम के सभी विषयों को आपस में जोड़ने का नया अनुभव:– पाठ्यक्रम में शामिल सभी विषयों का स्वतंत्र अस्तित्व न होकर एक दूसरे के पूरक होते हैं जिन्हें आपस में जोड़कर आसानी से समझा जा सकता है। इसे सिद्ध करने के लिए टीम ने कुछ गतिविधियाँ की। कक्षा पहली से ग्यारहवीं तक के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का विश्लेषण करके जल एवं जैव विविधता सम्बन्धी अध्यायों का विश्लेषण करके जल एवं जैव विविधता सम्बन्धी अध्यायों का

चयन करके उनसे संबंधित कहावतों, मुहावरों, नारों, दोहों, श्लोकों, कविताओं एवं कहानियों का संकलन, गाँव के आसपास स्थित प्राचीन नाडियों, तालाबों, झीलों के इतिहास की जानकारी जुटाना, हमारी धार्मिक-सामाजिक परम्पराओं एवं मान्यताओं को मात्र अंधविश्वास न मानकर उनमें छिपी सस्टेनेबिलिटी को समझना, परम्परागत भोजन और आधुनिक पैकेट बंद खाद्य पदार्थों के स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन, समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं से सस्टेनेबिलिटी की खबरें छाँटकर उन्हें अपने दृष्टिकोण सहित भित्ति पत्रिका में प्रदर्शित करने सम्बन्धी गतिविधियाँ शामिल है।

विद्यालय की कार्ययोजना का उदाहरण– ढलानयुक्त विद्यालय परिसर में तेज गति से बहकर जाने वाले वर्षा जल के प्रवाह को रोकने से मिट्टी कटाव का संरक्षण एवं भूमिगत जल स्तर को भूगोल के संदर्भ में समझा, वर्षा जल रोककर उस भाग में किये गये सघन वृक्षारोपण के फलस्वरूप उनमें आबाद पक्षियों, कीट पतंगों एवं कीड़े मकोड़ों से विज्ञान के कई अध्यायों की प्रत्यक्ष जानकारी हुई। हरे भरे परिसर में अलग-अलग प्रजाति के परिंदों के गूंजते स्वरों से हिन्दी एवं संस्कृत की कई कविताओं एवं कवियों की कल्पनाओं को साक्षात् अनुभव किया जा सकता है। वर्षा जल की मात्रा एवं परिसर की संग्रहण क्षमता सम्बन्धी आंकड़ों के विश्लेषण एवं दस्तावेजीकरण से गणितीय संक्रियाओं को सरलता से समझा वहीं जल के नमूनों से पी.एच.मान, तापमान, कठोरता, जीवाणु, रंग गंध आदि की जांच से जल की शुद्धता एवं स्वास्थ्य पर प्रभावों को जाना।

जीवन कौशल के विकास का अवसर:– दोनों ही प्रोजेक्ट में भाग 'ब' में निबंध तैयार करने के लिए विद्यार्थियों द्वारा बहुआयामी गतिविधियाँ सम्पन्न की गई जिसमें विभिन्न मुद्दों पर आधारित 'केस स्टडीज' तैयार करने, लोगों से साक्षात्कार करने, समाचार पत्रों और सहायक पुस्तकों का नियमित अध्ययन, इन्टरनेट से आंकड़े जुटाने, स्थानीय लोगों और शिक्षकों से सलाह मशविरा करने से उनमें समूह भावना, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, परिपक्वता, नियमित अध्ययन, स्वानुशासन जैसी क्षमताओं के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

छोटे से गाँव में पढ़ने वाले किसानों के बच्चों ने बैंगलोर में कार्यक्रम के दौरान 'विप्रो' के मुखिया अजीम प्रेमजी, विश्वविद्यालय के वी.सी. अनुराग बेहर एवं पेनलिस्ट से पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सवाल जवाब किये। दूसरे दिन अर्थियन मेले में सभी टीमों ने अपने अपने कार्यों पर आधारित प्रोजेक्ट प्रदर्शित करने, एक दूसरे के कार्यों, स्थानीय रीति-रिवाजों, सांस्कृतिक विरासत, भौगोलिक परिवेश एवं शैक्षिक स्तर को तुलनात्मक रूप से समझने का अवसर प्राप्त किया।

पुरस्कार से मिलेगी प्रेरणा– राष्ट्रीय स्तर पर अवार्ड के लिए चयनित श्रेष्ठ 14 टीमों में एक ही विद्यालय की दो टीमों का चयन होना अन्य विद्यालयों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगा। छोटे से गाँव के विद्यालय में पढ़ने वाले किसानों एवं पशुपालकों के बच्चों ने यह अवार्ड जीतकर एक मिसाल कायम की है कि मन में यदि सीखने की ललक और कार्य करने का जज्बा हो तो कुछ भी असम्भव नहीं है।

बैंगलोर में आयोजित कार्यक्रम में स्काउट मास्टर सरूपाराम माली, प्रधानाचार्य राजेश बारबर एवं दस स्काउट्स ने यह अवार्ड प्राप्त किया। अवार्ड के लिए बैंगलोर की दो तरफा हवाई यात्रा, विप्रो जैसी विश्वस्तरीय इकाई के मुखिया अजीम प्रेमजी के हाथों सम्मानित होना, विद्यालय के लिए एक लाख रुपये का चेक एवं ट्रॉफी और टीम सदस्यों के लिए प्रमाण-पत्र एवं पुस्तकों का सेट, दो दिनों तक पाँच सितारा होटल में ठहरने का अनुभव और विप्रो एवं सी.ई.ई. से अगले तीन वर्षों तक विद्यालय को शैक्षिक नवाचारों का पैकेज (सेप) प्राप्त होना विभाग एवं संगठन के लिए गौरव का विषय है।

स्काउट मास्टर
रा.उ.मा.वि. सरतरा, सिरोही
मो. 9785597277

रपट : परिचर्चा

विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता और देश का कानून

❒ किशन गोपाल जोशी

"विश्वविद्यालयों में विधि सम्मत वैचारिक प्रवाह को स्थान देने में कोई बुराई नहीं है, किन्तु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर देश की एकता और अखण्डता को चोट करने वाले विचारों को कोई स्थान नहीं दिया जा सकता।'' सिटिजन्स सोसाइटि फॉर एज्यूकेशन द्वारा आयोजित परिचर्चा 'विश्वविद्यालयों की स्वायतत्ता और देश का कानून' के अवसर पर पूर्व न्यायाधिपति एवं पूर्व कुलपति एन.एन. माथुर ने ये विचार गुरु शिवदत्त विद्यापीठ स्थित स्वामी कृष्णानंद स्मृति सभागार में व्यक्त किये।

परिचर्चा में एन.एन. माथुर ने कहा कि विश्वविद्यालय वैचारिक परिपक्वता के स्थान होते हैं जहाँ वे न केवल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विचारों पर मंथन कर उन्हें समझने का प्रयास करते हैं बल्कि जीवन के विभिन्न अनुभव प्राप्त करते हैं जो उन्हें पाठ्यक्रम को भी सही दिशा और दशा को समझने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि विश्वविद्यालयों में सक्रिय राजनीतिक दलों के दखल से विद्यार्थियों में वैचारिक गुट बनने लगते हैं जो शिक्षा और स्वस्थ परिचर्चाओं को अलग दिशा में ले जाते हैं। अभी यदि कहीं किसी विश्वविद्यालयों में कोई अनपेक्षित घटनाएँ होती हैं तो कहीं न कहीं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संविधान सम्मत रूप में नहीं समझना है।

सिटिजन्स सोसाइटि फॉर एज्यूकेशन के अध्यक्ष व कार्यक्रम संयोजक किशन गोपाल जोशी ने बताया कि परिचर्चा का मुख्य उद्देश्य देश के कानून के अन्तर्गत विश्वविद्यालयों की स्वायतत्ता को समझने का प्रयास किया था। परिचर्चा में विशिष्ट अतिथि और वरिष्ठ पत्रकार राजेन्द्र बोड़ा ने कहा कि छात्र संगठनों में अधीरता घटनाओं को समझने में बड़ी बाधा बनती है। मीडिया अपने बाजार हित को केन्द्र में रखकर घटनाओं के प्रस्तुतीकरण को प्राथमिकता

देता है, इसलिये जनभावनाएँ कई बार उसी सन्दर्भ में देखी जाने लगती है और सत्यता की पूर्णता मालूम नहीं पड़ती। उन्होंने कहा कि पौराणिक काल में जो आश्रम शिक्षा के केन्द्र होते थे उसी प्रकार वर्तमान में विश्वविद्यालय को भी मान के देखें तो उन्हें अपने विद्यार्थियों को हर प्रकार की परिपक्वता देने का प्रयास करना चाहिये जिसमें राजनैतिक विचार भी सम्मिलित है।

कार्यक्रम के मुख्यवक्ता वरिष्ठ अधिवक्ता सुखदेव व्यास ने कहा कि संविधान के दायरे में विश्वविद्यालय को स्वायत्तता प्राप्त है किन्तु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में कानून की सीमा से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। कानून के अनेक विभाग हैं जो जाँच करके यह निश्चित करते हैं कि अपराध घटित हुआ है या नहीं। यदि कोई घटना अपराध की श्रेणी में आती है तो कानून को अपना काम करने देना चाहिए।

सी.एस.ई. समन्वयक अनिल बोड़ा ने बताया कि परिचर्चा में राजस्थान सरकार के नवगठित उच्च शिक्षा आयोग में डॉ. एन.एस. शेखावत के मनोनयन पर सिटिजन्स सोसाइटि फॉर एज्यूकेशन द्वारा माला साफा व साहित्य भेंट कर स्वागत किया गया। परिचर्चा में विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि, शिक्षाविद्, साहित्यकार व संस्थान के विचारविद् डॉ. अशोक बोहरा, इंजि. एस.डी. बिस्सा, प्रो. नरपतसिंह शेखावत, डॉ. गोविन्द पुरोहित, डॉ. सुनील परिहार, मुकेश माण्डन, डॉ. प्रणय गर्ग, शौकत अली लोहिया, डॉ. प्रकाश पुरोहित, डॉ. जी.के. बोहरा, महेश बोड़ा, लूम्बाराम मेघवाल, आनन्दसिंह जोधा, उदयवीर सिंह राठौड़, रामकुमार बारासा, कैलाश बाबू सैन सहित एबीवीपी., एनएसयूआई. व अन्य छात्र संगठनों के संभागियों ने सहभागिता निभाई। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. सुमिता व्यास के दीप मन्त्र व सरस्वती वन्दना के साथ हुआ। परिचर्चा के प्रारम्भ में स्वागताध्यक्ष एस.डी. बिस्सा ने आगुन्तकों का स्वागत किया और अन्त में सचिव मोहनदास वैष्णव ने आभार व्यक्त किया।

'यशोमोह' 62, यू.आइ.टी. कॉलोनी,
पी.एफ. ऑफिस के पास,
चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008
मो. 9414319331

भारतीय संस्कृति की पहिचान कुंभ

❒ अमित शर्मा

भारतीय संस्कृति की पहचान सिंहस्थ कुंभ मेला आगामी अप्रेल माह में क्षिप्रा नदी के किनारे उज्जैन नगरी में आयोजित होने जा रहा है। कुंभ मेला भारत की सांस्कृतिक पहचान है। कुंभ के दौरान स्नान करने को स्वर्ग की प्राप्ति माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार कुंभ बारह होते हैं, आठ कुंभ स्वर्ग में तथा चार पृथ्वी पर होते हैं। कुंभ के अवसर पर सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति का योग होता है। जब सूर्य मेष राशि व बृहस्पति सिंह राशि पर होगा तब उज्जैन में 22.04.2016 को सिंहस्थ कुंभ मेले की शुरूआत होगी। **मेषराशिगते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ। उज्जयिन्यां भवेत्कुम्भः सर्वसोख्य विवर्धनः।।** केन्द्र सरकार व मध्यप्रदेश सरकार ने मेले में शामिल होने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं तीर्थयात्रियों व साधु सन्तों के लिए उच्च स्तर की व्यवस्था की है। कुंभ मेले का धार्मिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं आर्थिक महत्व रहा है। धार्मिक मान्यता के अनुसार अमृत की प्राप्ति के लिए देवताओं और दानवों दोनों में क्षीर सागर के मन्थन को लेकर अस्थाई समझौता हुआ। अमृत प्राप्ति पश्चात दानवों और देवताओं में हुए संघर्ष के कारण अमृत की बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों प्रयाग, नासिक, हरिद्वार तथा उज्जैन में गिरी। इसी मान्यता के अनुसार इन चार स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इस दानव-देवता संघर्ष में 12 दिन का समय लगा। इसी कारण हर बारह वर्ष पश्चात क्रम से इन स्थानों पर पूर्ण कुंभ मेला आयोजित होता रहा है। देवताओं और दानवों के बारह दिन पृथ्वी के बारह वर्ष माने जाते है। प्रयाग में पृथ्वी के अन्दर से प्रवाहित होने वाली सरस्वती नदी के साथ गंगा व यमुना नदी का संगम होता है। इस कारण इसे त्रिवेणी से भी सम्बोधित किया जाता है यहाँ पर ईश्वरीय/आकाशीय/ब्रह्मलीन शक्ति का संचार होता है। इसी तरह की ईश्वरीय शक्ति का संचार गंगा नदी के मध्य हरिद्वार में 'हर की पौड़ी' के समीप होता है। उज्जैन में यह शक्ति महाकालेश्वर मन्दिर के समीप क्षिप्रा नदी में संचारित होती है। नासिक में यह शक्ति गोदावरी नदी में त्रयम्बकेश्वर नदी के समीप उत्पन्न होती है। इसी ईश्वरीय शक्ति के कारण मनुष्य को कुंभ के दौरान पवित्र नदी में स्नान करने पर मोक्ष की प्राप्ति सहित समस्त दुखों से मुक्ति मिलती है साथ ही उसका भाग्योदय होता है। यह शक्ति मनुष्य को दुःखों से मुक्ति के साथ-साथ ईश्वरीय आशीर्वाद का माध्यम बनती है जिसमें मनः मस्तिष्क में शान्ति व कल्याण का संचार होता है। कुंभ मेला संसार का सबसे बड़ा एकत्रित जन-समूह है। प्राचीन लिखित ऐतिहासिक ग्रन्थों के अनुसार राजा हर्षवर्धन के काल 629-645 ई. में भी महामोक्ष परिषद के नाम से कुंभ मेले का आयोजन किया गया था। चीनी तीर्थयात्री ह्वेनसांग ने भी इसका उल्लेख अपनी जीवनी में किया था। वह स्वयं इस परिषद में शामिल एक उच्च प्रतिष्ठित राजकीय मेहमान था।

कुंभ मेले के दौरान मुख्य आकर्षण नागा साधु व उनके अखाड़े होते हैं। नागा साधु निर्वस्त्र रहने वाले आक्रामक व्यक्तित्व हैं। कुंभ मेले में शाही स्नान का पहला अधिकार इन अखाड़े से जुड़े नागा-साधुओं का रहता है। कुंभ मेला नागा परम्परा है जो ऋग्वेद काल से चली आ रही है। नागा अखाड़े ब्रह्मा, विष्णु (वैष्णव) महेश (शैव) को मानने वालों के अनुसार अलग-अलग शिविर में जुड़े रहते हैं। ये अखाड़े आगे जाकर 52 मठों में बंट जाते हैं। प्रत्येक मठ का एक प्रमुख महन्त होता है। मठ की समस्त आध्यात्मिक व धार्मिक क्रियाएँ उक्त महन्त के आदेशों के अन्तर्गत होती है। प्रत्येक अखाड़ा में ब्रह्म, विष्णु, महेश, शक्ति दुर्गा व गणेश पंच परमेश्वर के समान पाँच व्यक्ति (साधु) का कार्यकारिणी निकाय होता है जो अखाड़े से सम्बन्धित समस्त निर्णयों, गतिविधियों का उत्तरदायित्व निर्वहन करता है इन पाँच साधुओं का चुनाव कुंभ मेले के दौरान प्रत्येक 4 वर्ष के लिए किया जाता है।

कुंभ भी तीन तरह का होता है अर्द्ध कुंभ, पूर्णकुंभ व महाकुंभ। अर्द्धकुंभ प्रत्येक 6 वर्ष में प्रयाग, नासिक, हरिद्वार व उज्जैन में क्रमानुसार आता रहता है। पूर्ण कुंभ उक्त पवित्र स्थानों पर प्रत्येक 12 वर्षों में आता है जबकि महाकुंभ 144 वर्षों में केवल प्रयाग में ही मनाया जाता है। सन् 2013 में प्रयाग में 144 साल बाद महाकुंभ का आयोजन किया गया था। सिंहस्थ कुंभ का शाही स्थान 22 अप्रेल 2016 से होगा। प्रत्येक भारतीय को इस सांस्कृतिक विविधता की झांकी का दर्शन करना चाहिए।

शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्यालय उपनिदेशक मा.शि. अजमेर
मो. 9251037377

पुस्तक समीक्षा

पांणी में चांद घुळै छै

दुर्गादान सिंह गौड़, **प्रकाशक :** बोधि प्रकाशन, एफ.77, सेक्टर-9, रोड नं. 11, बाइस गोदाम, जयपुर-302006, **प्रकाशन वर्ष :** दिसम्बर 2013, **पृष्ठ संख्या :** 104, **मूल्य :** ₹125

झालावाड़ जिले की खानपुर तहसील के जोलपा गाँव में 10 अक्टूबर 1947 को जन्मे कवि श्री दुर्गादान सिंह गौड़ आधुनिक काल के राजस्थानी भाषा के महत्वपूर्ण कवि हैं। वे अपनी मंचीय कविता के कारण जन सामान्य में बहुत लोकप्रिय हैं। राजस्थान के समृद्ध परम्परा के कई कवि आजादी से आगे बढ़े रेंवतदान कल्पित रघुराज सिंह हाड़ा, कन्हैयालाल सेठिया, सत्यप्रकाश जोशी आदि इनके अलावा गजानन वर्मा, कानदान कल्पित, कल्याणसिंह राजावत, लक्ष्मणसिंह रसवंत, भंवर जी भ्रमर, भागीरथ सिंह भाग्य, दुर्गादान जी की तरह शृंगार रस की कविताओं के सृजक बने तथा वर्षों तक कवि सम्मेलनों में छाये रहे। हाड़ौती अँचल इन अर्थों में सौभाग्यशाली है। वहाँ गीतकार बनने की परंपरा है।

कवि दुर्गादान सिंह अपनी रचनाओं में लावण्य और दर्द, उल्लास और कसक जैसे विरोधाभासी भावों को इतने रचनात्मक कौशल से गूंथते है कि वो सहज संचरित होकर गहरे तक पैठते हैं। कविता बेटी में आप कहते हैं-

जा सासरे जा बेटी,
लूण तेल ने गा बेटी।।1।।
सबने रखजे ताती रोटी,
अर तूं गाळयाँ खा बेटी।।2।।
जै दे थने दुआ बेटी,
वां नै सीस नवा बेटी।।3।।

श्री गौड़ लोक-संस्कृति के कुशल चितेरे हैं। युवा-किशोर मनोभावों को, उनके रागात्मक अनुभवों और व्यवहार को काव्य-संकेतों में वे इतने कलात्मक तरीके से व्यक्त करते हैं कि आधुनिक राजस्थानी कविता में मूल्यवान मानक स्थापित करने का श्रेय प्राप्त करने के हकदार हैं। उनके काव्य में हृदय और ध्वनियों की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है:-

तू किती खूब खुलै छै,
जाणै पांणी में चांद घुळै छै।

दुर्गादान सिंह गौड़ नारी का नख शिख वर्णन शब्दों से बिम्ब बनाकर करते हैं। आँखों के सामने बणी-ठणी नायिका घूमर डालने लगती है। यथा-

घाम घुमाळौ लहंगो देख्यो,
चम चम करती चूंदड़ देखी।।1।।
हाथ भर्‌यो चूड़्यो सूं देख्यो,
काची कंवली कमर देखी।।2।।
ढीली ढीली कणकती देखी,
कामणगारी मुळकती देखी।।3।।
छाती धक धक धड़कती देखी,
मिरगानैणी मुळकती देखी।।4।।

कवि दुर्गादान सिंह गौड़ छवियां, दृश्य, स्थितियाँ, उक्तियाँ, रंग और ध्वनियों के मालिक हैं। किन्तु लोक-संस्कृति और रुमानियत का मुख्य स्वर उनकी कविताओं में है। गौड़ का रचनात्मक कौशल उच्च कोटि का है। पुस्तक में बेटी, के लाणूं गणगौर, सहेल्यों के साथ, लखारो सुवटियो, नीमड़ी, साजन गीता को बौपारी, थां पोठ गया जुंझार, रात कुरजां, चकवा,चकवी, जैसी काळजयी रचनावां आज राजस्थानी काव्य को राती माती करती है। यूं तो सभी पैंतालिस कविताओं राजस्थानी साहित्य की उच्च कोटि की रचनावां है। सृजन में उनके विश्वस्त लोकधर्मी उपकरण ने उनका खूब साथ दिया है। गौड़ का यह सृजन राजस्थानी संस्कृति पर ही नहीं राजस्थानी साहित्य पर भी उपकार है। अंत में सर्वकालिक उक्ति उन्हें सार्थकता प्रदान करती है।

म्हारा नैण क्यूं जलै रे,
म्हारो हिवड़ो बळै।
धरती थारो जामा लाला,
भूखां क्यूं मरै,।।1।।
गोरा गोरा गालाँ पै ये
आँसू क्यूं ढलै।।2।।

-समीक्षक : **पृथ्वीराज रत्नू**
एफ.सी.आई. गोदाम रोड,
इंदिरा कॉलोनी, बीकानेर
मो. 9414969200

धुले-धुले चेहरे

रवि पुरोहित **प्रकाशक :** राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्री डूंगरगढ़ **संस्करण :** 2015 **पृष्ठ संख्या :** 88 **मूल्य :** ₹100

रवि पुरोहित राजस्थान के साहित्य जगत का सुपरिचित नाम है। राष्ट्रभाषा हिन्दी व मातृभाषा राजस्थानी में कथा, कविता व बाल साहित्य के क्षेत्र में रवि पुरोहित निरन्तर सृजनरत रहे हैं। आलोच्य कृति 'धुले-धुले चेहरे' में रवि पुरोहित की दस कहानियाँ संग्रहित हैं। ये कहानियाँ पाठक को सामाजिक जीवन की विविध चुनौतियों से रूबरू कराती हैं। इन कहानियों के पात्र बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुष, किसान, कर्मचारी, सेवादारी, नेता एवं पक्षी जगत के कबूतर-कबूतरी तक तमाम तरह के पात्र अपने-अपने संघर्ष से जूझते नजर आते हैं। इन कहानियों में सफेद पोशों का असली चेहरा भी उजागर हुआ है।

कहानी 'समझौता' एक स्वाभिमानी, गरीब औरत के टूटने की कहानी है। पारिवारिक परिस्थितियों से जूझती विधवा गुलाबी का समाज में मेहनत मजदूरी करके भरण-पोषण करना सम्भव नहीं हुआ। उसके मन में उठते अन्तर्द्वन्द्व ने जिन्दगी से समझौता करने पर विवश कर दिया। 'हां...औरत मिट्टी का घरोंदा ही तो है... जिसे जब चाहे मनुज आकार देता है और जब चाहे उसके स्वरूप को पुनः मिट्टी में मिला देता है।' यह कहानी समाज में असहाय महिला के साथ ज्यादती, दुर्व्यवहार व विवशता की करुण कहानी है।

'अंधेरे में उजाला' कहानी ईमानदार और स्वच्छ जीवन जीने वाले अधिकारियों के बार-बार स्थानान्तरण होने व इसकी परेशानी झेलने वाले परिवार की व्यथा-कथा है। 'पतंगे' कहानी धोरा धरती के त्रिकाल से जूझते किसान परिवार की हृदय विदारक कथा है। कथा नायक भोला अतिवृष्टि से फसल चौपट होने पर क्रुद्ध हो, भगवान की मूर्ति पर पत्थर मार बैठता है। इस अवसर पर उसकी पत्नी सुगनी का कथन समूची लोक आस्था को प्रकट करता है-'अरे कुछ

इसकी भी तो सोचो... किस-किस को दे यह बिचारा? यह तो अकेला और लेने वाले हैं न जाने कित्ते.... आखिर किस-किस को देगा, किस-किस को राजी करेगा यह...?'

'बोल सुआ राम-राम' एक संस्मरणात्मक कहानी है। शराब बेचने वाले दुकानदार में भी एक अच्छा इंसान छुपा है, जो कभी शराब नहीं पीता। अपने बेटे को भी यह सीख देकर संसार से विदा लेता है कि 'चाहे भीख मांगकर खा लेना, पर शराब का यह खोटा धंधा मत करना।'

शीर्षक कथा 'धुले-धुले चेहरे' एक विवरणात्मक कहानी है जिसमें घटनाक्रम बहुत तेजी से बदलते हैं। कहानी में साम्प्रदायिक सद्भाव दिखाने व इन्सानियत को उजागर करने का प्रयास किया गया है। साथ ही समाज में नेताओं और अफसरों के वहशीपन की झलक भी इस कहानी में दर्शायी गई है।

'कबूतरी' नारी संघर्ष की एक प्रतीकात्मक कहानी है जिसमें शराबी पात्र जुलाब व उसकी दूसरी पत्नी चुन्नी तथा कबूतर-कबूतरी की कहानी साथ-साथ चलती है। लेखक ने कबूतर के माध्यम से पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता का वर्णन किया है।

लेखक ने वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करते हुए कहानी 'सपने का सुख' में संवादात्मक एवं व्यंग्यात्मक शैली में शासन व्यवस्था को आईना दिखलाने का बखूबी प्रयास किया है। इस कहानी में लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग भी देखते ही बनता है। 'लोकतंत्र की इस व्यवस्था में चोर-चोर मौसेरे भाई'।

'आम के आम हैं और गुठलियों के दाम। पांचों घी में और देश में नाम।'

'श्वेत परियां' कहानी में लेखक ने नारी मन को टटोलते हुए 'मेडीकल संस्कृति' पर करारा व्यंग्य किया है। 'मुर्दाघर' और 'दो मिनट का मौन भी पठनीय कहानियाँ है।

इस कहानी संग्रह की कहानियों में कथातत्त्वों का प्रभावी समावेश हुआ है जो कि श्री पुरोहित के एक श्रेष्ठ कहानीकार होने का परिचय देता हैं। कहानियों की भाषा सरल व बोधगम्य है। संवादों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग है। संवादों में राजस्थानी एवं बोलचाल के सामान्य शब्दों का समावेश कहानी को पुष्ट करने में सहायक हुए हैं। मुहावरों व कहावतों का प्रयोग भी बखूबी हुआ है। कहीं-कहीं इन कहावतों के प्रयोग में जल्दबाजी सी महसूस होती है, यथा-"जैसा भोला वैसी ही उसकी गृहस्वामिनी सुगनी। 'औरत की बुद्धि एड़ी में होती है'-की अपवाद।"

अपनी इन कहानियों में लेखक मानवीय संवेदनाओं को उजागर करने में सफल हुआ है व मानवीय अवमूल्यन के विरोध में खड़ा नजर आता है। कहानी संग्रह पठनीय एवं रोचक है तथा विद्धानों एवं सुधी पाठकों से आदर-सत्कार पायेगा, ऐसी मेरी कामना है।

-समीक्षक : **डॉ. शिवराज भारतीय**
मालियों का मोहल्ला, पो. नोहर (हनुमानगढ़)
मो. 9529804035

समकालीन तमिल प्रतिनिधि कहानियाँ

एस. भाग्यम शर्मा **प्रकाशक** : दीपक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 322, कमला नेहरू नगर, हसनपुरा-सी, जयपुर-06 **संस्करण** : 2016 **पृष्ठ संख्या** : 112 **मूल्य** : ₹225

समकालीन तमिल प्रतिनिधि कहानियाँ विगत दिनों सुविदित लेखिका अनुवादक-कथाकार श्रीमती भाग्यम शर्मा की पुस्तक प्राप्त हुई। इसमें तमिल के लोकप्रिय, सुविख्यात, पुरस्कृत कथाकारों की चयनित 22 कहानियों का सहज व सरल हिन्दी अनुवाद पढ़ने का सुअवसर दिया। सभी तमिल भाषा से हिन्दी में अनुवादित इन 22 चयनित कहानियों के रचना तत्व से बिना किसी छेड़छाड़ किए मौलिकता को यथावत बनाए रखने जैसे दुष्कर एवं श्रमसाध्य कार्य का निष्पादन साहित्य जगत में निश्चय ही श्लाघनीय एवं उल्लेखनीय है।

अनुवाद की एक सहज भाषा शैली रचना तत्व की प्रामाणिकता सिद्ध करती है वहीं हिन्दी के सहकार की दिशा में सर्वभौमिकता दर्शाती है। प्रत्येक कहानी के पात्र को आत्मसात करते हुए जीवन बोध कराना श्रेष्ठ अनुवादक की विशिष्ट पहिचान है। अनुवाद में भाषाई बन्धन तोड़कर साहित्य को दुनिया के हर क्षेत्र में निष्पक्ष रूप से पहुँचाने का श्रेयष्कर कार्य दक्षिण भारत की लेखिका एस. भाग्यम कर रही हैं। लेखिका की अपनी मातृभाषा तमिल से हिन्दी में अनूदित कहानियों में यह लक्ष्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

कथानक के अनुरूप चरित्र के अनूभूत यथार्थ व संवेदना अथवा जीवन के किसी भी पहलू को अपने शब्दों में बाँधने की प्रक्रिया में निश्चय ही अनुवादक को पात्र की आत्मा में प्रवेश करना पड़ता है। कहना न होगा कि एस. भाग्यम शर्मा ने न केवल एक कहानीकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान सिद्ध की है अपितु एक सशक्त अनुवादक के रूप में एक अलग स्थान कायम किया है।

यूँ तो संग्रह की सभी कहानियाँ पठनीय एवं संग्रहणीय हैं, परन्तु बाइस चयनित कहानियों में दक्षिण भारत के सुविख्यात कथाकार कल्कि दो व कथाकार चूड़ामणी की पाँच कहानियां विविधता के दृष्टिगत विशेष पठनीय हैं। प्रत्येक कहानी के आरम्भ में कथाकार का संक्षिप्त परिचय व फोटो पाठकों के लिए श्रेयष्कर है। कथा के अनुरूप लयबद्ध सहज उतार-चढ़ाव के साथ प्रत्येक कहानी का अन्त होता है। कथानक की जीवन्तता स्थाई बनी रहती है। अनूदित कहानियों का यथार्थ जमीन से जुड़ा है। सभी में नैतिक मूल्यों की दरकार है, अत: उद्देश्यपरक है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भाग्यम जी जैसी सिद्धहस्त अनुवादक की आज महती आवश्कता है एवं उनका यह कार्य देश को एकसूत्र में पिरोये रखने की दिशा में प्रेरणाप्रद है।

-समीक्षक : **महावीर प्रसाद गर्ग**
4/705, जवाहर नगर, जयपुर-302004
मो. 9414466463

जो इंसान
खुद के लिए जीता है
उस का एक दिन
'मरण' होता है...
पर जो इंसान
दूसरों के लिए जीता है
उसका हमेशा
'स्मरण' होता है।

शाला प्रांगण से

1. एन.एस.एस. शिविर का आयोजन : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, महिलाबाग, जोधपुर में एन.एन.एस. शिविर का आयोजन किया गया। यह आयोजन दिनांक 26.12.15 से 01.01.16 के बीच सात दिवसीय रखा गया । इस विशेष शिविर के आयोजन में छात्र-छात्राओं ने बड़े हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। इस आयोजन के तहत विभिन्न गतिविधियों के साथ स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत साफ सफाई का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य ने इस अवसर पर सफाई का महत्व बताते हुए 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत' विषय पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम प्रभावी एवं प्रेरणादायी रहा।

2. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर का आयोजन : रा.उ.मा.वि. गांगल्यावास तहसील रामगढ़ पचवारा जिला दौसा में दिनांक 19 से 23 जनवरी 16 तक समाजोपयोगी उत्पादक कार्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ आध्यात्मिक वार्ता से हुआ तथा परिसर को पोलिथीन मुक्त करने हेतु परिसर की सफाई की। अगले दिन भूगोल शिक्षक जगदीश प्रसाद मीना ने भूखण्ड नाम की प्रायोगिक जानकारी दी। इस शिविर के अन्तर्गत रक्त जाँच कर ब्लड ग्रुप की जानकारी, पोस्टमास्टर हीरालाल सैनी द्वारा डाक संबंधी एवं ग्राम सचिव छोटेलाल बैरवा व.अ. ने प्रतियोगिताएँ सम्पन्न करवाई। 21 जनवरी को बैंक प्रबंधक श्री मुरारीलाल शर्मा ने बैंकिंग कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी दी। खेलकूद प्रतियोगिताओं के साथ स्काउट ट्रेनर लल्लूलाल द्वारा गांठों का अभ्यास करवाया गया। अध्यापिका जामवन्ती मीना ने छात्राओं को खेलकूद करवाये। 22 जनवरी को संतोष शर्मा ने पाककला की प्रायोगिक जानकारी दी व मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया। बालकों द्वारा संग्रहित फल, फूल, बीज, पत्तियों की पेकिंग तैयार करवायी। अन्त में थानाधिकारी द्वारा सड़क सुरक्षा के नियमों की जानकारी दिलवायी गयी। स्काउट सचिव श्री रतनलाल सैनी ने

'शाला प्रांगण' स्तम्भ में प्रकाशनार्थ सभी संस्था प्रधान अपने विद्यालय में आयोजित होने वाली शैक्षिक, सह शैक्षिक रचनात्मक गतिविधियों के अच्छे छपने योग्य चित्रों के साथ आवश्यक रपट भी भेजें।

—वरिष्ठ संपादक

स्काउट आन्दोलन एवं सहायक सचिव श्री मोहनलाल मीना ने विभिन्न आपदाओं के समय की जाने वाली प्राथमिक चिकित्सा व सुरक्षा की जानकारी दी। अन्तिम दिवस नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। 'विज्ञान वरदान या अभिशाप' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अभिभावक श्री ओमप्रकाश डोबर द्वारा सहज ध्यान योग पर एक प्रायोगिक प्रस्तुति दी गई। प्रधानाचार्य श्री शिवशंकर प्रजापति ने शिविर के समापन पर संबोधित करते हुए कहा कि शिविर में कक्षा-कक्ष से बाहर विद्यार्थियों को प्रायोगिक एवं नये ज्ञान से साक्षात्कार का अनुभव हुआ। बालकों ने न केवल प्रकृति की गोद में आनन्द लिया बल्कि नवीन स्फूर्ति का अनुभव किया। बालकों में शिविर के माध्यम से शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच के साथ सृजनात्मक कौशल का विकास दिखाई दिया। शिविर प्रभावी एवं उद्देश्य परक रहा।

3. सूर्यनमस्कार का सामूहिक अभ्यास करवाया : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दियातरा कोलायत, बीकानेर में शाला प्रांगण में दिनांक 15 जनवरी 2016 को समस्त विद्यार्थियों को सामूहिक सूर्य नमस्कार का अभ्यास करवा गया। यह अभ्यास इसी शाला के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री प्रभुराम दुराण ने करवाया। उन्होंने सूर्यनमस्कार की स्थितियों एवं प्रभावों पर अपनी बात रखी तथा अभ्यास के दौरान ठीक स्थति पर ध्यान दिया। इस कार्यक्रम में शाला अध्यापक बिवरदान, रेवन्तदान, विष्णुस्वामी ने सहयोग किया। श्रीमती उषा तनेजा सहित अन्य अध्यापकों ने भी अपने विचार रखे।

4. नि:शुल्क विद्यालय वेश का वितरण : राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, सादुलगंज, बीकानेर के समस्त विद्यार्थियों को अमर प्रताप डवलपर्स की ओर से नि:शुल्क विद्यालयी गणवेश (स्कूल ड्रेस) का वितरण किया गया। प्रधानाध्यापक खींवसिंह सांखला ने बताया कि शारीरिक शिक्षक राजेन्द्र व्यास की प्रेरणा से श्रीमती प्रवीण मोदी ने यह वितरण डवलपर्स की ओर से किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर अति. जिला शिक्षा अधिकारी, बीकानेर श्री अखतर अली उपस्थित रहे व इसे सराहनीय कदम बताया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के लिए सरकार व विभाग द्वारा अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं परन्तु भामाशाहों द्वारा किया जा रहा यह सहयोग अनुकरणीय है। प्रधानाध्यापक सहित शाला स्टाफ ने भामाशाह का आभार व्यक्त किया।

6. धूमधाम से सम्पन्न बालिका मेला : झझू, तह. कोलायत (बीकानेर) स्थित कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में ब्लॉक स्तरीय एक दिवसीय बालिका मेला सोमवार दिनांक 22 फरवरी 16 को 'सीखो सिखाओ' की भावना के साथ सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व मेले का शुभारम्भ महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष श्री भंवर उपाध्याय व पशु चिकित्सक श्री गोविन्दराम मेघवाल ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए कहा कि बालिकाओं की शिक्षा से दो परिवार शिक्षित होते है। वर्तमान युग में बालिकाएँ हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही है। ऐसे में अब शिक्षित बालिकाओं को आगे आकर समाज में अशिक्षित व स्कूल से वंचित बालिकाओं को स्कूल शिक्षा से जोड़ने का प्रयास करना होगा। वहीं पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. गोविन्द राम मेघवाल ने कहा कि समुदाय को अब बालिकाओं को बोझ नहीं वरदान समझ कर व्यवहार करना चाहिए। राज्य सरकार की उत्तम योजनाओं में से एक कस्तूरबा गांधी विद्यालय बालिकाओं पर काफी मेहनत व लगन के साथ शिक्षा प्रदान करते हैं। इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा परिणाम देने वाले शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। श्री उपाध्याय ने कहा कि हमें वंचित बालिकाओं को भी शिक्षा से जोड़ने का संकल्प लेना होगा। समापन समारोह में अतिरिक्त परियोजना अधिकारी जोरावर सिंह ने कहा कि एक शिक्षित

बालिका ही समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने में महत्ती भूमिका का निर्वाह कर सकती है। मेले में गणित व विज्ञान विषय आधारित 42 स्टॉल लगाई गई। संस्था प्रधान राजश्री भाटी ने बताया कि मेले में 16 स्कूलों के चार सौ से अधिक बच्चों ने भाग लिया मेले में सुमेरसिंह, भूपेन्द्र सिंह, भग्गाराम ढाल, लीला कांटिया, राजलक्ष्मी मोदी आदि मौजूद थे। मेले में 16 स्कूलों की करीब 450 बालिकाओं ने उत्साह पूर्वक भागीदारी निभाई।

7. विद्यालय को आलमारी,स्वेटर व पाठ्य सामग्री वितरित : रतनगढ़ तहसील के ग्राम बण्डवा में स्थित बालाजी मंदिर के परिसर में नवसृजित राजकीय मंदिर के परिसर में नवसृजित राजकीय प्राथमिक विद्यालय खोबा को स्व. झूमरमल जालान परिवार राजलदेसर की ओर से एक बड़ी आलमारी भेंट की गई तथा विद्यालय के विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित व पाठ्य सामग्री भी वितरित की गई । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा नेता हरिप्रकाश इन्दौरिया ने कहा कि ऐसे पवित्र स्कूल में दान व सहयोग देकर स्व. झूमरमल परिवार ने बहुत ही पुण्य का कार्य किया है, जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र है। उपस्थित जनों से उन्होंने आह्वान किया कि इस स्कूल व मंदिर परिसर को प्राचीन विद्या आश्रम की तरह विकसित करें । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए चंपालाल भाटी व अन्य सभी वक्ताओं ने जालान परिवार को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मोहनलाल भाकर, रामचंद्र मांजू व अन्य लोगों ने भी स्कूल को सहायता प्रदान की । इस अवसर पर ग्राम बण्डवा, बीनादेसर, लाछड़सर व अन्य ग्राम के प्रभुसिंह, सहीराम, करणीसिंह, शिवसिंह, गोपालाराम, मदनप्रकाश, नानूराम आदि सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के प्रधानाध्यापक पूराराम गांधी ने किया तथा दानदाताओं व उपस्थित गणमान्यजनों को धन्यवाद दिया।

8. 'दृष्टि' कार्यक्रम में हुसंगसर व प्रताप बस्ती प्रथम : बीकानेर। सर्व शिक्षा अभियान के तहत 'दृष्टि' कार्यक्रम में शुक्रवार को सरकारी उच्च प्राथमिक स्कूलों में अध्ययनरत अल्पसंख्यक छात्र छात्राओं द्वारा निर्मित विज्ञान एवं गणित के मॉडल्स व प्रोजेक्ट्स प्रदर्शनी में विज्ञान वर्ग में रा.उ.प्रा.वि. हुसंगसर व गणित में राउप्रावि प्रताप बस्ती अव्वल रहे। ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी,बीकानेर ने बताया कि राजकीय महारानी बालिका उमावि. में आयोजित प्रदर्शनी में 13 स्कूलों के 70 विद्यार्थियों ने मॉडल व प्रोजेक्ट्स प्रदर्शित किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता सहायक परियोजना समन्वयक सोहनलाल शर्मा व महेन्द्र सिंह पोटलिया ने करते हुए कहा कि सर्वशिक्षा अभियान नवाचारों व सृजन को प्राथमिकता के साथ किये गये प्रयासों को प्रोत्साहित करता है। यह कार्यक्रम इसी उद्देश्य की पूर्ति करता है। अभियान के अन्तर्गत अनेक योजनाएँ संचालित है जिनका विद्यालय प्रबन्ध समिति समुचित उपयोग करके न केवल छात्र छात्राओं को प्रोत्साहित कर सकता है बल्कि शिक्षक प्रशिक्षणों के माध्यम से अपना शिक्षण और अधिक प्रभावी बनाकर गुणवत्ता के उच्च मापदण्ड प्राप्त कर सकते है। इस अवसर पर विजेता विद्यालयों का आभार जताया।

स्तम्भकार–नारायण दास जीनगर

महिला दिवस : एक सार्थक प्रयास

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मिर्जेवाला (श्रीगंगानगर) में 8 मार्च, 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का भव्य आयोजन हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाली गणमान्य महिलाओं के साथ मिर्जेवाला एवं आस-पास के गाँव की 300 महिलाएँ इस विशेष दिवस को मनाने के लिए विद्यालय प्रांगण में एकत्रित हुईं।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जिला प्रमुख श्रीमती प्रियंका श्योराण और अध्यक्षता जिला परिषद डायरेक्टर श्रीमती संतोष भुंवाल द्वारा की गई। श्रीमती अनिता शर्मा, सरपंच, ग्राम संगतपुरा, श्रीमती पुष्पेन्द्र कौर, डायरेक्टर संगतपुरा, श्रीमती प्रवीण कौर, सरपंच एवं श्रीमती रविन्द्र कौर उपसरपंच, मिर्जेवाला का सान्निध्य विशिष्ट अतिथि के रूप में मिला।

मुख्य अतिथि एवं प्रधानाचार्या श्रीमती अंजु पसरीचा, राबाउमावि, मिर्जेवाला द्वारा माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विद्यालय की छात्राओं द्वारा 'सत्यं शिवम् सुंदरम्' गीत पर नृत्य प्रस्तुति और लघु नाटिका 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' प्रस्तुत की गई। लघु नाटिका शिक्षाप्रद, रोचक एवं उद्देश्यपूर्ण रही, विद्यालय की प्राथमिक कक्षाओं द्वारा दी गई नृत्य प्रस्तुति भी विशेष रूप से मनोरंजनात्मक एवं सराहनीय रही।

ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक बुराई की स्पष्ट शब्दों में निन्दा की। श्रीमती सुनीता सुथार एवं श्रीमती सुनीता द्वारा बालिका शिक्षा का महत्व बताये जाने के साथ ही समाज में महिलाओं को सम्मानित दर्जा दिलवाये जाने हेतु सर्वसंभव प्रयास किये जाने का भी आह्वान किया गया। श्रीमती अमर कंवर द्वारा कविता 'मैं नारी हूँ' प्रस्तुत की गई। रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक प्रश्नोत्तरी में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रश्नों के सही उत्तर देने वाली सभी महिलाओं को पुरस्कृत भी किया गया।

सभी महिलाओं द्वारा कन्या भ्रूण हत्या को रोकने, सभी बालिकाओं को शिक्षित करने, समाज को नशा मुक्त करने एवं व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वच्छता रखने हेतु प्रतिज्ञा ली गई तथा इस दिशा में सर्वसंभव प्रयास करने का संकल्प भी किया गया। प्रतिवर्ष महिला दिवस को और अधिक उत्साह से मनाने के संकल्प के साथ आयोजन हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ।

अंजु पसरीचा, प्रधानाचार्या
रा.बा.उ.मा.वि., मिर्जेवाला (श्रीगंगानगर)

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाते है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

एक लोटा पानी से पेड़ उगाने की तकनीक

एक पौधा लगाकर उसमें एक लोटा पानी एक बार दें, फिर निश्चित हो जायें, वह पौधा आगामी समय में एक पेड़ बन जायेगा। दोबारा उसे सींचने की जरूरत नहीं होगी। यह तकनीक दांता (सीकर) के श्री सुण्डाराम वर्मा ने विकसित की है। विज्ञान से स्नातक श्री सुण्डाराम उस क्षेत्र से हैं, जहाँ रेगिस्तान अधिक है और वर्षा कम। इसलिए कम से कम पानी से वनस्पति और उपज उगाने की तकनीक खोजनें में उन्होंने अपना जीवन लगाया। आखिर उन्हें सफलता मिली। एक लीटर पानी से पौधा उगाने की उनकी तकनीक का दिल्ली के कृषि-वैज्ञानिकों ने परीक्षण किया और उसे खूब सराहा।

अंतरिक्ष में वेधशाला स्थापित कर भारत ने इतिहास रचा

भारत ने गत 27 सितम्बर 15 को अंतरिक्ष में वेधशाला स्थापित कर इतिहास रचा। अब ऐसी वेधशाला स्थापित करने वाला भारत दुनिया का चौथा देश बन गया है। अभी तक अमरीका, रूस और जापान ने ही अंतरिक्ष में वेधशालायें स्थापित की हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अंतरिक्ष पीएसएलवी-सी 30 से यह वेधशाला स्थापित की है। वेधशाला के माध्यम से अंतरिक्ष के पिण्डों और उनकी गतिविधियों का अध्ययन किया जाएगा। इस मिशन से जुड़े वैज्ञानिकों का कहना है कि यह वेधशाला कई मायनों में दुनियाँ की पहली वेधशाला है क्योंकि इसमें चार विशिष्ट कैमरे लगे हुए है।

इसरो प्रमुख ने कहा-प्राचीन ग्रन्थों में विज्ञान के सिद्धान्त

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख तथा जाने-माने वैज्ञानिक ए.एस.किरण कुमार ने कहा है कि प्राचीन भारत के ग्रन्थों में विज्ञान के महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं। इन पर शोध करने से कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हो सकती है। वे बीते 22 नवम्बर 15 को कर्नाटक के मणिपाल विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बोल रहे थे। श्री किरण कुमार ने अपनी शिक्षा पूरी करने वाले छात्रों से कहा कि उपनिषद्, भगवद्गीता, ब्राह्मणसूत्र,भागवत, महाभारत आदि ग्रन्थ प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के स्त्रोत है। दैनिक राजस्थान पत्रिका (23 नव.15) के अनुसार उन्होंने इस सम्बन्ध में चीन के नोबेल पुरस्कार विजेता तू-यूयू का उदाहरण भी दिया। मलेरिया को रोकने वाली दवा बनाने के लिए उक्त नोबेल दिया गया है। वैज्ञानिक किरण कुमार ने कहा कि श्री तू-यूयू ने 1500 वर्ष पुराने चीनी ग्रन्थों का अध्ययन किया और उनकी सहायता से मलेरिया रोधी दवा विकसित की।

मथुरा की जाह्नवी बावन देशों के छात्र-छात्राओं में प्रथम रही

मथुरा की जाह्नवी अब ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कम्प्युटर विज्ञान पर शोध करेगी। विश्वविद्यालय इसके लिये उसे अच्छी खासी छात्रवृत्ति भी देगा। पिछले दिनों इंगलैण्ड के ऑक्सफोर्ड विवि. ने कम्प्यूटर साइंस में शोध-छात्रवृति के लिये एक परीक्षा आयोजित की थी। बावन देशों के विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हुए। भारत में 28 छात्र-छात्राओं ने यह परीक्षा दी । उक्त परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर जाह्नवी ने छात्रवृति अपने नाम कर ली। जाह्नवी इस समय आई. आई. टी. दिल्ली में बी. टेक. के अंतिम वर्ष की छात्रा है।

तीन सौ शल्य चिकित्साओं का वर्णन किया है सुश्रुत ने

पूरे विश्व के चिकित्सा-शास्त्री आचार्य सुश्रुत को शल्य-क्रिया (सर्जरी) का जनक मानते हैं। उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत संहिता' तीन हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन माना जाता है। इस ग्रन्थ में 'प्लास्टिक सर्जरी' को भी विस्तार से समझाया गया है। यद्यपि सुश्रुत से पहले धन्वन्तरि के ग्रन्थों तथा वेदों में शल्य चिकित्सा का उल्लेख है, परन्तु आज के चिकित्सा वैज्ञानिक सुश्रुत को ही विश्व का पहला सर्जन (शल्य चिकित्सक) मानते हैं। हिन्दी दैनिक राजस्थान पत्रिका 9.1.16 में प्रकाशित एक लेख के अनुसार आचार्य सुश्रुत ने तीन सौ तरह की शल्य-क्रियाओं का वर्णन किया है। इनमें प्लास्टिक सर्जरी, मोतियाबिन्द , कर्कट-रोग (कैंसर) तथा प्रसव सम्बन्धी शल्य क्रिया भी शामिल है। लेख में बताया गया है कि सुश्रुत ने सर्जरी के लिए जिन 125 औजारों का उल्लेख किया है वैसे ही औजारों का आज भी उपयोग होता है। चीरा और टांके लगाने की विधियाँ भी लगभग वही है, जो सुश्रुत ने बताई थीं। शल्य-क्रिया से पहले शरीर को सुन्न करने के लिए एनीस्थिसिया का प्रयोग भी सुश्रुत संहिता में दिया गया है।

भारतीय गाय का महत्व ब्राजील में भी है-

भारतीय नस्ल की गायों की चिन्ता भारत में भले ही कम हो लेकिन ब्राजील विशेषकर 'गिर'नस्ल की गाय भारत से मंगवा रहा है और उसका संवर्द्धन भी कर रहा है। एक अनुमान के अनुसार इस समय ब्राजील में भारतीय नस्ल की साठ लाख से अधिक गायें हैं। भारतीय गो-वंश के प्रति ब्राजील के इस प्रेम का कारण यह है कि इन गायों का दूध शक्तिवर्द्धक होने के साथ-साथ कई रोगों से बचाव भी करती है। साधारणत: गाय के दूध को दो श्रेणियों में बाँटा जाता है। ए-वन तथा ए-टू । हॉल्स्टन जैसी विदेशी गायों का दूध 'ए-वन' श्रेणी में आता है और उसके प्रयोग से मधूमेह, हृदय-दौर्बल्य तथा मस्तिष्क सम्बन्धी कई रोग पैदा हो जाते है। न्यूजीलैण्ड में ए-वन दूध पर डेविल इन द मिल्क (दूध रूपी राक्षस) पुस्तक लिखी गई है जो काफी लोकप्रिय है। भारतीय नस्ल की गायों का दूध 'ए-टू' श्रेणी में आता है, जो कैंसर जैसी घातक बीमारियों को रोकता है। पश्चिमी देशों में तो दूध के पैकेट पर ए-वन या ए-टू इसीलिये लिखा रहता हैं । पूरी दूनिया में भारतीय नस्ल की गायों के दूध ए-टू की मांग तेजी से बढ़ती जा रही है।

अंतरिक्ष विज्ञान में भारत ने ऊँची छलांग लगाई

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत अब अमरीका, रूस आदि विकसित देशों की बराबरी पर आ गया है। अब अन्य देश भी अपने उपग्रह अंरिक्ष में भेजने के लिए भारतीय तकनीक का सहारा ले रहे हैं। गत 16 दिसम्बर को भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने सिंगापुर के छह उपग्रह अंतरिक्ष में भेजे। किसी भी उपग्रह को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित करने के लिए इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) ने पोलर सेटेलाईट लांच व्हिकल (पीएसएलवी) विकसित किया है। भारत के भी सभी उपग्रह इसी तकनीक से अंतरिक्ष में भेजे जाते हैं। परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डा. अनिल काकोदकर ने इसे भारतीय विज्ञान की बड़ी उपलब्धि बताया है।

संकलन-**गोमाराम जीनगर**

जयपुर

रा.उ.मा.वि., तेवड़ी (विराटनगर) को श्री मातादीन स्वामी (से.नि. प्रधानाचार्य) से एक माइक सैट (आहूजा) लागत 26900 रुपये। **रा.उ.मा.वि. बासड़ी खुर्द (सांभरलेक)** को श्री सूरजमल वर्मा से दो टेबुल लागत 5500 रुपये, बैंच चार लागत 5000 रुपये, एक रैंक लागत 1500 रुपये, श्री नोपाराम वर्मा से एक रेक लागत 1500 रुपये, श्री श्रवण लाल पूनियां, निदेशक श्याम विद्या मन्दिर मा.वि., बासड़ी खूर्द से एक-एक उषा सिलिंग फैन तथा प्रत्येक की लागत 1250 रुपये, 15 अगस्त 2015 को कार्यक्रम से प्राप्त राशि एवं पूर्व की शेष राशि से दो लोहे की अलमारी लागत 9000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., श्रीरामपुरा पं.स. दूदू, जयपुर प्रथम** को श्री शिवचन्द राम जाट से विद्युत कनैक्शन हेतु 28000 रुपये, श्री भगवान सहाय प्रजापति (व.अ.) द्वारा बालिका शौचालय निर्माण हेतु 19000 रुपये एवं पानी टैंक निर्माण हेतु 15000 रुपये, सर्व श्री भूपेन्द्र (व.अ.), सीताराम जाजोरिया (व.अ.), अनिला कुमारी, सुमिता चाहर, करुणा जाखड़ प्रत्येक से पानी टैंक निर्माण हेतु 5100-5100 रुपये प्राप्त हुए, सर्व श्रीमती मगन मीना, दुर्गेश शर्मा, मंजुलता शर्मा, शशिकला दीक्षित, अनिला जैन से प्रत्येक से कमरो की मरम्मत हेतु 2100-2100 रुपये प्राप्त हुए। **रा.उ.प्रा.वि., जैतपुरा वाया चौमू पं.स. गोविन्दगढ़** में स्व. सूरजमल मेमोरियल जैतपुरा (जयपुर) की ओर से डॉ. श्री सुरेश गुलिया द्वारा 60 बालिकाओं को स्वेटर वितरण, उन्नति फाऊन्डेशन जयपुर की ओर से श्री महेन्द्र रजवानियाँ द्वारा 60 बालिकाओं को स्वेटर वितरण।

जालौर

रा.उ.मा.वि., सुगालिया जोधा पं.स. आहोर को श्री देवाराम प्रजापत से लाईट फिटिंग लागत 25151 रुपये, श्री सत्यनारायण संत से एक साउण्ड लागत 5000 रुपये, श्री डूंगाराम चौधरी, श्री मीठाराम प्रजापत से एक-एक पंखा तथा प्रत्येक से 900 रुपये, श्री राजपुरी स्वामी, श्री गणपतलाल प्रजापत से दो-दो पंखे तथा प्रत्येक की लागत 1800 रुपये, श्री मदनदास वैष्णव द्वारा विद्यालय का नाम पट्ट मय मजदूरी लागत 12000 रुपये, तथा विद्युत मोटर लागत 2500 रुपये। **आदर्श रा.उ.मा.वि., बादनवाड़ी** में श्री भरत कुमार जैन के नेतृत्व में इनके सोनगरा परिवार द्वारा उच्च माध्यमिक भवन में लगभग 17 कक्षा-कक्ष + 2 गैलरी + एक प्याऊ तथा उच्च प्राथमिक भवन में 15 कक्षा-कक्ष+गैलरी+प्याऊ तथा दोनो ही परिसर में एशियन प्लास्टिक कलर, समस्त खिड़कियों व दरवाजे पर आयल पेण्ट लागत 3 लाख रुपये। **आदर्श रा.मा.वि., भादरूणा (सांचौर)** में श्री शेष कुमार जैन द्वारा प्याऊ का निर्माण मय आर.ओ. प्लांट का निर्माण लागत 300000 रुपये, श्री श्रवण कुमार खत्री द्वारा शौचालय का निर्माण लागत 130000 रुपये।

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग भी इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

हमारे भामाशाह

जोधपुर

रा.उ.मा.वि., गुड़ा विश्नोईयान में श्री स्वरूपराम बूड़ीया द्वारा विद्यालय के सौन्दर्यकरण व रंग रोगन (कमरों के बाह्य भाग व बरामदे) लागत 25000 रुपये। **आदर्श रा.उ.मा.वि., नागौरीगेट** को श्री राजेन्द्र जोशी (स. कर्मचारी) से एच.पी. प्रिन्टर मय स्केनर एवं फोटो कॉपियर लागत 12200 रुपये, श्रीमती मोनिका सोलंकी (व.अ.) से 2 पंखे लागत 2200 रुपये, श्रीमती कुसुमलता (अ.) से 2 पंखे लागत 1640 रुपये का सहयोग। **सेठ माँगीलाल सुखिया देवी गहलोत रा.बा.मा.वि., बीजवाड़िया औसियाँ को** श्री कैलाश जी द्वारा विद्यालय के बालिकाओं को बैग वितरण किये।

झुन्झुनूं

रा.आदर्श उ.मा.वि., दूधवा (खेतड़ी) में श्री जयदयाल (से.नि.प्र.अ.) द्वारा विद्यार्थियों के लिए पीने का पानी की टंकी का निर्माण करवाया लागत 50000 रुपये, बागोरिया शिक्षण संस्थान दूधवा खेतड़ी द्वारा 10 सैट लोहे की मेज व स्टूल विद्यालय को भेंट लागत 15000 रुपये, श्री बृजलाल शर्मा (से.नि.व.अ.) द्वारा रामचरित मानस के सात खण्ड विद्यालय पुस्तकालय के लिए भेंट लागत 700 रुपये। **श्री जे.जे. रा.उ.मा.वि., गांगियासर** में मौ. शरीफ चौहान द्वारा स्मार्ट क्लास रूम का निर्माण करवाया गया लागत 250000 रुपये, श्री गोपाल सोनी द्वारा विद्यालय में ट्यूब बैल, 1500 लीटर पानी टंकी प्लास्टिक और आर.ओ. मशीन विद्यालय में उपलब्ध करवाई गई जिसकी लागत 121400 रुपये, श्री सुदर्शन विक्रम देव सिंह शेखावत एवं योगेन्द्र विक्रम देव सिंह शेखावत द्वारा विद्यालय को 5 सैट कम्फोर टेबल कुर्सियाँ लागत 30000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., नारी** में श्री अमर सिंह गुरावा द्वारा सी.सी.टी.वी. केमरे एवं विद्यालय को एक बैटरी लागत 35500 रुपये, श्री कर्मवीर ठेकेदार द्वारा विद्यालय को एक बैटरी लागत 13000 रुपये। **सेठ सीताराम क्याल रा.उ.मा.वि., बसावा** में सेठ श्री मातादीन गुप्ता द्वारा छात्राओं के लिए दो शौचालय का निर्माण करवाया गया लागत 50000 रुपये व छात्र स्टूल 50, टेबल 50 लागत 50000 रुपये, श्री ओम प्रकाश यादव से कार्यलय मेज एक एवं प्लास्टिक कुर्सी-दो, लागत 15000 रुपये एवं 41 निर्धन बच्चों के लिए विद्यालय ड्रेस लागत 20000 रुपये, श्री धन्नाराम (व.अ.) से 09 बड़ी दरी विद्यालय को सप्रेम भेंट लागत 15000 रुपये, श्री कन्हैयालाल सैनी से 79 बच्चों को स्वेटर वितरण लागत 20000 रुपये, श्री कुलदीप कुमार यादव से 13 बच्चों को स्वेटर एवं 06 बच्चों को स्कूल ड्रेस वितरण लागत 7000 रुपये, श्री बनवारी लाल दूत द्वारा जन्माष्टमी पर्व पर बच्चों को 30 किलो मिठाई (लड्डू) लागत 3000 रुपये, श्री विद्याधर सिंह सुण्डा (पूर्व बैंक मैनेजर) द्वारा गाँधी जी एवं शास्त्री की जयन्ती समारोह पर एक माइक सैट लागत 12000 रुपये, श्री लक्ष्मण राम जाखड़ द्वारा एक ट्यूबवेल का नवीन निर्माण लागत 150000 रुपये।

झालावाड़

रा. आदर्श उ.मा.वि., पारापीपली को श्री नटवर सिंह झाला (समाजसेवी) द्वारा डीईएलएल कम्पनी का लेपटॉप विद्यालय को सप्रेम भेंट।

संकलन-**रमेश कुमार व्यास**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अप्रैल 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका – अप्रैल, 2016

बाएं : सिटिजन सोसाइटि फॉर एज्यूकेशन, जोधपुर के तत्वावधान में आयोजित परिचर्चा ''विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता व देश का कानून'' को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार एवं सचिव, राजस्थान प्रौढ शिक्षा समिति, जयपुर। दाएं : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भगेगा (सीकर) में इको क्लब वाटिका द्वार के भामाशाह मेजर श्री सांवत सिंह का सम्मान किया गया।

बाएं : 28 मार्च, 2016 को 7 Raj (I) Coy. N.C.C. जयपुर के कमान अधिकारी ले. कर्नल नलिन चौहान एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, माणक चौक, जयपुर के प्रधानाचार्य श्री महावीर प्रसाद गर्ग द्वारा विद्यालय के भौतिक विज्ञान प्राध्यापक श्री पंकज मिश्रा को ANO रैंक देने के लिए Piping Ceremony कार्यक्रम आयोजित कर रैंक लगाया गया। दाएं : राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, आदर्श नगर, जयपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की छात्राओं ने शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत विज्ञान पार्क, जयपुर का अवलोकन किया।

यूनिसेफ के अन्तर्राष्ट्रीय दल द्वारा SIQE के तहत C.C.P. के क्रियान्वयन का अवलोकन

आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, छापी, बिछीवाड़ा, डूँगरपुर (राज.)

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity408/2014-16
शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अप्रैल, 2016
प्रकाशन तिथि : 1 अप्रैल, 2016 पृष्ठ 52 ■ प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख
समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

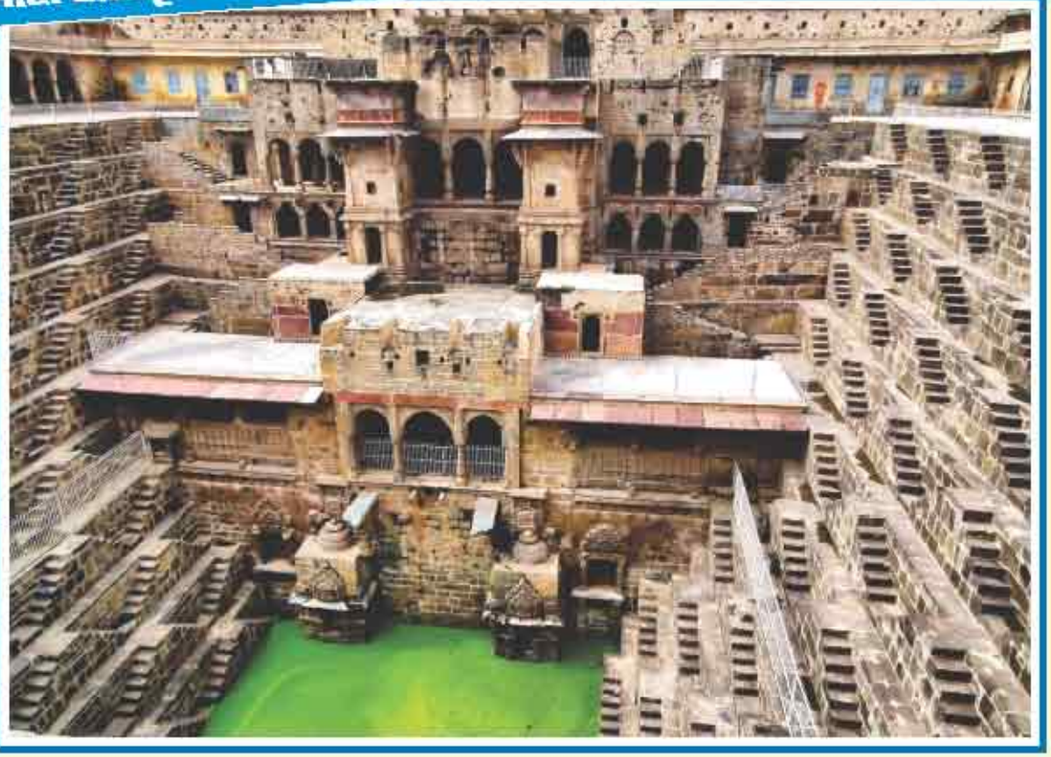

चाँद बावड़ी, आभानेरी (दौसा)

आभानेरी उत्तरी राजस्थान में दौसा जिले का एक छोटा सा गाँव है। यह जयपुर से 95 किमी. दूर एनएच 11 जयपुर-आगरा मार्ग पर स्थित है। यह गाँव हवाई और देश के विभिन्न मार्गों के लिए सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। सरकारी एवं निजी बसें आभानेरी और दौसा, आगरा, जयपुर, अजमेर, अलवर, भरतपुर और बीकानेर के बीच नियमित रूप से चलती हैं। दौसा रेलवे स्टेशन होने के कारण आभानेरी राज्य और देश के विभिन्न प्रमुख शहरों के साथ रेल मार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है। यहाँ आने का सबसे अच्छा समय मार्च और अक्टूबर का महिना है।

राजस्थान का यह प्रसिद्ध प्राचीन गाँव मध्यकालीन स्मारकों, चाँद बावड़ी और हरशत माता मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है। चाँद बावड़ी भारत में सबसे बड़े कदम कुओं में से एक है।

आभानेरी स्थानीय नृत्य अर्थात् घूमर, कालबेलिया और भवाई के लिए प्रसिद्ध है।

■ सुकेश व्यास, सह-सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। मो. 9460618809